उत्तर प्रदेश: यूपीपीसीएस में बदलाव की बयार

राजस्थान: क्यों छूटे जयपुर बम ब्लास्ट के आरोपी

लौंडा नाच: सरकार की हिचक भरी पहल

इंडिया टुडे

19 अप्रैल, 2023 50 रुपए

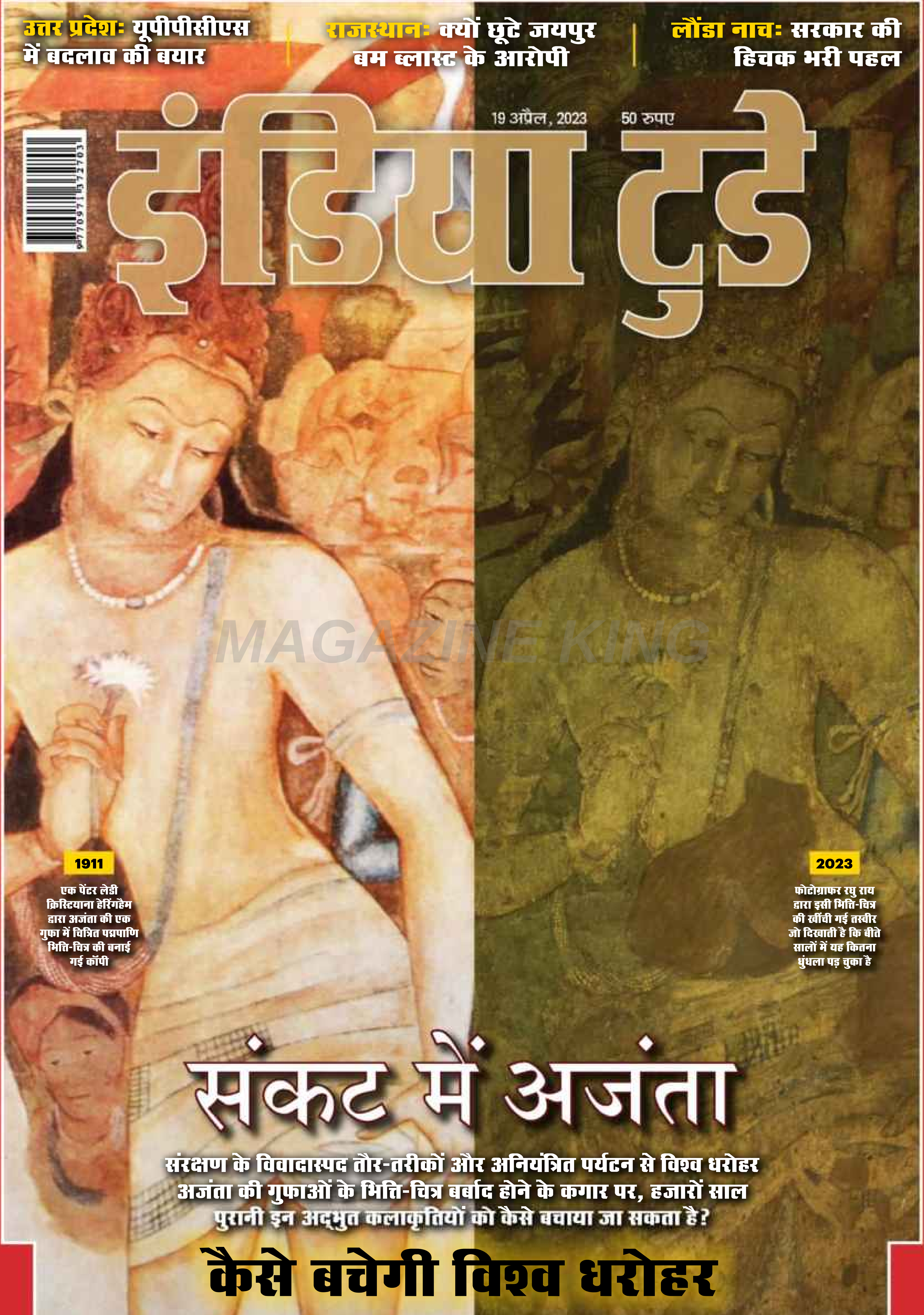

1911

एक पेंटर लेडी क्रिस्टियाना हेरिंगहैम द्वारा अजंता की एक गुफा में चित्रित पद्मपाणि भित्ति-चित्र की बनाई गई कॉपी

2023

फोटोग्राफर रघु राय द्वारा इसी भित्ति-चित्र की खींची गई तस्वीर जो दिखाती है कि बीते सालों में यह कितना धुंधला पड़ चुका है

संकट में अजंता

संरक्षण के विवादास्पद तौर-तरीकों और अनियंत्रित पर्यटन से विश्व धरोहर अजंता की गुफाओं के भित्ति-चित्र बर्बाद होने के कगार पर, हजारों साल पुरानी इन अद्भुत कलाकृतियों को कैसे बचाया जा सकता है?

कैसे बचेगी विश्व धरोहर

RNI NO. 45823/86 REGISTRATION NO. DL(DS)-02/MP/2022-23-24, DL(ND)-11/6042/2021-22-2023; LICENSED TO POST WPP NO U(C)-31/2021-23; FARIDABAD/46/2023-25 www.indiatodayhindi.in

अग्रिम सप्ताह के लिए प्रत्येक शनिवार को प्रकाशित; एलपीसी दिल्ली-आरएमएस-दिल्ली-110006 से प्रत्येक शनिवार और सोमवार को प्रेषित; कुल पन्नों की संख्या 60 (आवरण सहित) वर्ष 37; अंक: 20

VISIT…

LANZAROTE
Caliente.COM

प्रधान संपादक की कलम से

भारत पुरातात्विक खजाने से अटा पड़ा है. बेशक सबसे जाना–माना ताज महल है, जिसके बदरंग होने के जोखिमों की भी उतनी ही चर्चा रही है. अजंता को भी 1983 में ताज महल के साथ ही यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थली घोषित किया गया, पर अभी तक इस पर उतना ध्यान नहीं दिया गया है. यह सहस्राब्दी से ज्यादा पुराना है, हालांकि दूसरी बुनियादी बातों पर इतिहासकारों के बीच अभी बहस जारी है. आम राय है कि यह दो चरणों में बना, जिनके बीच सात सदियों का फासला था. ईसा पूर्व दूसरी सदी के अंतिम वर्षों के आसपास सम्राट अशोक के पूरे भारत में बौद्ध धर्म फैला चुकने के बाद किसी समय बौद्ध भिक्षुओं ने वघोरा नदी के ऊपर उन खड़ी चट्टानों में पहली छह गुफाएं काटीं. शुरुआती भित्तिचित्रों में सीधे बुद्ध नहीं उकेरे गए. फिर सन् 460 में वाकाटक राजा हरिसेना के संरक्षण में पुनर्जागरण की लहर आई और अजंता को नया जीवनदान मिला. मगर सन 480 के आसपास रहस्यमयी तरीके से फिर छोड़ दिया गया. जो बचा, वह 30 गुफाओं में स्थापित शानदार कला दीर्घा थी: मूर्तिकला और भित्तिचित्रों में इनसान के रूप में उकेरे गए बुद्ध, भरा–पूरा देवकुल, और दमकते रंगों में जातक कथाएं.

आपको शायद हैरानी हो रही होगी कि चौतरफा अटाटूट खबरों के बीच एक समाचार पत्रिका में अजंता पर आवरण कथा क्यों? तो कभी–कभी एक असाधारण कहानी खुद आकर आपका दरवाजा खटखटाती है. फौरी खबर भले न हो पर उसकी राष्ट्रीय अहमियत होती है. मेरे मित्र और पूर्व सहयोगी जाने–माने फोटोग्राफर रघु राय ने चिंतित स्वर में मुझे फोन किया और बोले कि चार दशक पहले की उनकी पिछली यात्रा के बाद भित्ति–चित्रों की हालत किस कदर खराब है. उन्होंने सैलानियों की निराशाजनक भरमार से लेकर ''डिस्को लाइटिंग'' तक संजीदा खामियों के खतरों की तरफ इशारा किया. नाराजगी समझी जा सकती थी. उन्हें फ्लैश इस्तेमाल करने की इजाजत नहीं दी गई जबकि टुअर गाइड बेरहमी से टॉर्च फ्लैश कर रहे थे. टंगस्टन और मर्करी की प्रकाश व्यवस्था के कारण फिल्म पर भयानक हरे और भूरे रंग आ गए. भीड़ कई गुना बढ़ गई है. साल में चार लाख लोग अजंता आते हैं. सबसे ज्यादा चहल–पहल वाले वक्त में तो हर गुफा में करीब सौ की भीड़ होती है, जिससे नमी और कार्बन डाइऑक्साइड का स्तर बढ़ जाता है और पहले से ही नुक्सानदेह माहौल और बिगड़ जाता है. हमने इस बेशकीमती धरोहर की ओर देश का ध्यान दिलाने और इसके क्षरण को रोकने के तरीके खोजने का फैसला किया.

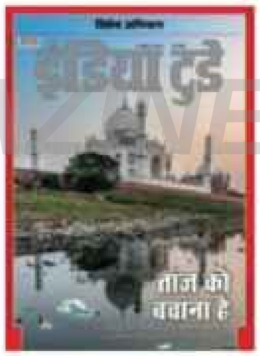

1 अगस्त, 2018

हजारों साल की बेरुखी ने कहर बरपा दिया. सीपेज, धूल और बैक्टीरिया से लेकर चमगादड़ों तक, हर चीज ने चौथाई भित्ति–चित्रों को नष्ट कर दिया. चीनी बौद्ध भिक्षु ह्वेन त्सांग ने अजंता का जिक्र किया था. *आईन–ए–अकबरी* में भी इसका जिक्र है. मगर दुनिया को इसकी सुध तब आई जब 1819 में इसके खंडहर अचानक कैप्टन जॉन स्मिथ की अगुआई में बाघों के शिकारी दल के हाथ लगे. तब से इसका सम्मान बढ़ता ही गया. इतिहासकार वॉल्टर स्मिथ ने इसे ''भारत के स्वर्ण युग की पराकाष्ठा'' कहा. कलाकार अमृता शेर–गिल ने कहा कि ''अजंता का एक अकेला भित्ति–चित्र समूचे रेनेसां से ज्यादा मूल्यवान था.''

मगर ये भित्ति–चित्र खतरे में हैं. इन्हें बचाना पावन कर्तव्य है, इसलिए भी कि यह ऐसा ब्लैक बॉक्स है जिसमें भारत के इतिहास, कला और धर्म के बारे में बहुत कुछ है. ठीक यहीं आधुनिक नीति का पसोपेश सामने आता है. कैसे इस स्थल को बचाकर भी रखा जाए और लोगों को इसके चमत्कारों का आनंद भी लेने दिया जाए.

नाजुक धरोहरों को बचाने के लिए दुनिया के मुल्क अलग–अलग और अक्सर अतिवादी तकनीकें अपनाते हैं. फ्रांस की लैसकॉ गुफाएं आगंतुकों के लिए बंद कर दी गईं. उनकी स्पैनिश सखी ऑल्टमीरा की गुफाओं में मुट्ठी भर लोगों को जाने दिया जाता है, मोगाओ की केव्ज ऑफ थाउजैंड बुद्धा में भीड़ को चीनी युक्तियों से नियंत्रित किया जाता है, जापान के होरियोजी भित्ति–चित्र 1940 के दशक की विनाशकारी आग के बाद ज्यादातर वक्त तहखाने में बिताते हैं, और मिलान के सांता मारिया डेले ग्राजी चर्च की भोजनशाला में दा विंची की 'द लास्ट सपर' एक वक्त में पहले से बुक करवाकर आने वाले 30 लोग देख सकते हैं. पश्चिम अपनी धरोहर की कद्र करता है, पर यह बेहतरीन नतीजों की गारंटी नहीं है.

धरोहरों के प्रति भारत का रवैया सनक भरा है. हम इसे लेकर हल्ला तो खूब मचाते हैं पर उससे आगे इसकी परवाह नहीं करते. हम चीजों को बस तभी सजाते–संवारते हैं जब दुनिया देख रही होती है. मसलन, जी20 का एक आयोजन अजंता में होना था, पर वहां तक जाने वाली सड़क वक्त रहते पूरी नहीं हो सकी. सवाल है कि अव्वल तो सड़क पहले ही वहां क्यों नहीं थी? मैनेजिंग एडिटर सुनील मेनन ने वहां जाने से पहले और बाद में इस विषय पर शोध करते हुए महीने से ज्यादा वक्त बिताया. उन्होंने विद्वतापूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज और पत्रिकाओं के दर्जनों लेख गहराई से खंगाले. इसके अलावा विभिन्न किस्म के सांस्थानिक विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों और संरक्षकों से बात की. राय यही बनी कि संकट असली है. धरोहरों की एक स्थायी किस्म की इमरजेंसी मुंह बाए खड़ी है. एएसआइ ने पैदल सैनिकों की फौज लगा दी है, पर भारत की आधिकारिक संरक्षण संस्कृति में चीजों के अपनी रफ्तार से खरामा–खरामा चलने का जाना–पहचाना ढर्रा है. एएसआइ और अजंता की देखरेख करने वाली दूसरी संस्था महाराष्ट्र पर्यटन विकास निगम (एमटीडीसी) एक दूसरे से बात नहीं करते. एएसआइ के मालिकाना नाज–नखरे पक्का कर देते हैं कि भारत के बेहतरीन भित्ति–चित्र विशेषज्ञ अजंता पर काम न कर पाएं, जबकि हालात का तकाजा है कि हर मुमकिन शख्स की मदद ली जाए और धरोहर सांस्थानिक अहंकार से कहीं ज्यादा कीमती है.

क्षरण के खिलाफ यह लड़ाई बड़ी अव्यवस्थित किस्म की है. रघु राय ने हमारे लिए सही रंगों के माध्यम से रीक्रिएट करके बताया है कि ये भित्ति–चित्र अपनी पूरी महिमा में कैसे दिखते. समाधान के लिए हम एक युक्ति भी सुझा रहे हैं, जिसमें धरोहर क्षेत्र के केंद्र के रूप में अजंता की नए सिरे से कल्पना करना, तेजी से उन्नत हो रहे विज्ञान के प्रति सचेत संरक्षण का नजरिया और भारत तथा विदेशों के बेहतरीन लोगों से मिलकर बनी निगरानी इकाई शामिल है. सिस्टीन चैपल को बहाल करने वाले इतालवी उस्तादों के मातहत प्रशिक्षित संरक्षक संजय धर ने बताया कि 1980 के दशक में अजंता पर *इंडिया टुडे* के एक लेख से उन्होंने अपने जीवन की पुकार को पहचाना. हम यह अंक आपको भारत के इतिहास, पुरातत्व और उसकी बेशकीमती धरोहर के प्रति भावी पीढ़ियों में दिलचस्पी जगाने के लिए सौंप रहे हैं. इसलिए और भी क्योंकि अतीत हमारे चारों तरफ बिखरा पड़ा है, हमें विरासत के फिजूलखर्च अरबपतियों की तरह व्यवहार करना बंद कर देना चाहिए.

अरुण पुरी

(अरुण पुरी)

इंडिया टुडे
www.indiatodayhindi.in

चेयरमैन और प्रधान संपादक: अरुण पुरी
वाइस चेयरपर्सन: कली पुरी
ग्रुप चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर: दिनेश भाटिया
ग्रुप एडिटोरियल डायरेक्टर: राज चेंगप्पा
चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर: मनोज शर्मा
एडिटर: सौरभ द्विवेदी
डिप्टी एडिटर: मोहम्मद वक़ास
एसोसिएट एडिटर: शिवकेश मिश्र, आशीष मिश्र (लखनऊ)
सीनियर असिस्टेंट एडिटर: पवन वर्मा
असिस्टेंट एडिटर: मनीष दीक्षित
वरिष्ठ विशेष संवाददाता: हिमांशु शेखर
विशेष संवाददाता: विजय सुल्तान
राज्य ब्यूरो: पुष्यमित्र (पटना), आनंद चौधरी (जयपुर),
एम.जी. अरुण (मुंबई), राहुल नरोन्हा (भोपाल),
अमरनाथ के. मेनन (हैदराबाद)
ग्रुप क्रिएटिव एडिटर: नीलांजन दास
एसोसिएट आर्ट डायरेक्टर: चंद्रमोहन ज्योति
असिस्टेंट आर्ट डायरेक्टर: असित रॉय
ग्रुप फोटो एडिटर: बंदीप सिंह
फोटो डिपार्टमेंट: राजवंत रावत,
चंद्रदीप कुमार, मंदार सुरेश देवधर (मुंबई)
चीफ फोटो रिसर्चर: प्रभाकर तिवारी
प्रिंसिपल फोटो रिसर्चर: सलोनी वैद
प्रोडक्शन चीफ: अभिनव पुगला
एसोसिएट पब्लिशर (इंपैक्ट):
विद्या मेनन,
सुपर्णा कुमार
इंपैक्ट टीम
सीनियर जनरल मैनेजर: मयूर रस्तोगी (नॉर्थ), जीतेंद्र लाड (वेस्ट)
जनरल मैनेजर: सैयद नवीद (चेन्नै), कृष्णानंद बायर (बेंगलूरू)
ग्रुप चीफ मार्केटिंग ऑफिसर: विवेक मल्होत्रा
सेल्स एवं ऑपरेशन
सीनियर जनरल मैनेजर: दीपक भट्ट (नेशनल सेल्स)
जनरल मैनेजर: विपिन बग्गा (ऑपरेशंस)
डिप्टी जनरल मैनेजर: राजीव गांधी (नॉर्थ)
डिप्टी रीजनल सेल्स मैनेजर: योगेश गोधनलाल गौतम (वेस्ट)
डिप्टी रीजनल सेल्स मैनेजर: एस. परमशिवम (साउथ)

वर्ष: 37, अंक: 26; 13-19 अप्रैल, 2023; प्रत्येक सोमवार को प्रकाशित

- **संपादकीय कॉर्पोरेट कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड,
इंडिया टुडे ग्रुप मीडियाप्लेक्स, एफसी-8, सेक्टर 16-ए,
फिल्म सिटी, नोएडा-201301, फोन: 0120-4807100;
- **ग्राहकी चंदा भेजें:** इंडिया टुडे (हिंदी), पो. बॉक्स 114,
नई दिल्ली-110001
- **ग्राहक सेवा:** कस्टमर केयर, इंडिया टुडे ग्रुप, सी-9,
सेक्टर-10, नोएडा (उत्तर प्रदेश)-201301,
टोल फ्री फोन नं. 1800 1800 100 (बीएसएनएल/एमटीएनएल
लाइनों से) फोन: दिल्ली, फरीदाबाद से (95120) 2479900;
शेष भारत से (0120) 2479900.
(सोम से शुक्र-सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक),
फैक्स: (0120) 4078080. ई-मेल: wecare@intoday.com
- **सर्कुलेशन कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड,
सी-9, सेक्टर-10, नोएडा (उत्तर प्रदेश)-201301
- **इंपैक्ट कार्यालय:** 1201, 12वां तल, टावर 2ए,
वन इंडियाबुल्स सेंटर, (जुपिटर मिल्स)
एस.बी. मार्ग, लोअर परेल (पश्चिम)-मुंबई-400013.
फोन: 022-66063355 फैक्स: 022-66063226
- **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय:** ए1-ए2, एनके सेंटर, विपुल्स विपुंज,
उद्योग विहार, फेज-5, गुड़गांव, हरियाणा, फोन: 0124-4948400;
- 201-204 रिचमंड टावर्स, द्वितीय मंजिल,
12 रिचमंड रोड, बंगलुरु-560 025 फोन: 2212448, 226233,
टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN. फैक्स: 080-2218335.
- रजिस्टर्ड कार्यालय: एफ-26, फर्स्ट फ्लोर, कनॉट प्लेस,
नई दिल्ली-110001
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित.
किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित.
इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की
जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता.
- सभी विवादों का निबटारा दिल्ली/नई दिल्ली की सीमा में आने
वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में किया जाएगा.
- **लिविंग मीडिया इंडिया लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक मनोज
शर्मा द्वारा एफ-26, फर्स्ट फ्लोर, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001
से प्रकाशित और थॉमसन प्रेस इंडिया लि., 18-35, माइलस्टोन,
दिल्ली-मथुरा रोड, फरीदाबाद-121 007 (हरियाणा) में मुद्रित.
संपादक: राज चेंगप्पा**

भीतर

सुर्खियां
राजस्थान: जयपुर ब्लास्ट की जांच पर भारी आंच
पेज 10

फुरसत
अरविंद गौड़: तीस साल की अस्मिता
पेज 54

सवाल+जवाब/नीलम मानसिंह चौधरी: नहीं देखती अपने नाटक
पेज 58

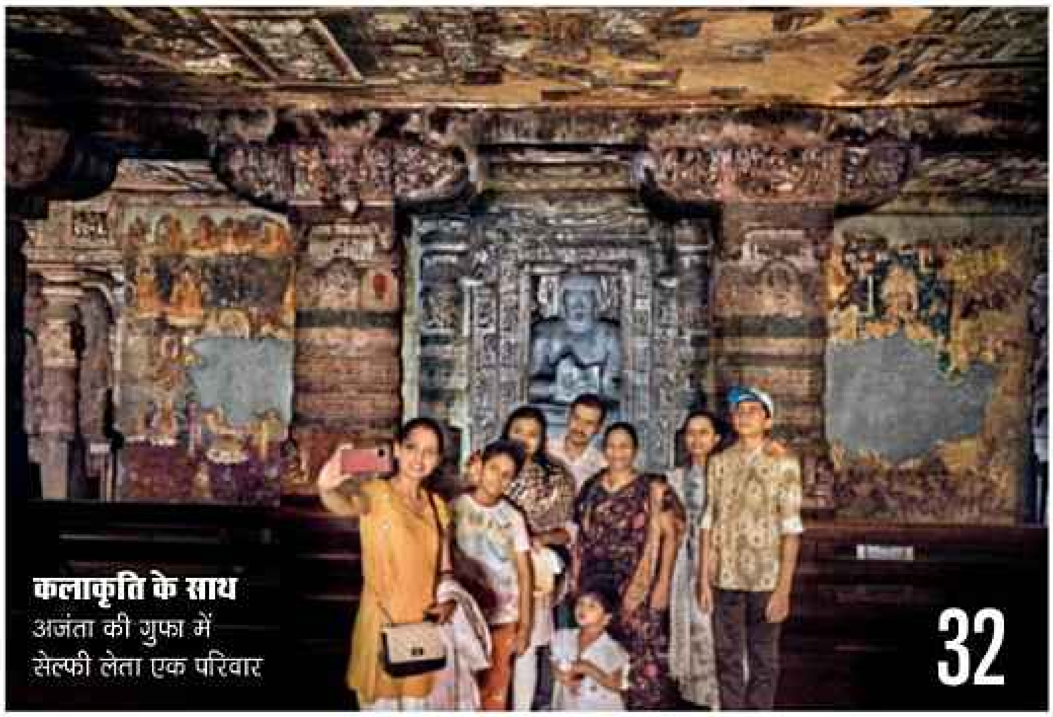

कलाकृति के साथ
अजंता की गुफा में सेल्फी लेता एक परिवार

32

रघु राय

आवरण कथा

खतरे में अजंता

महाराष्ट्र में विश्व प्रसिद्ध प्राचीन गुफा भित्ति-चित्र और मूर्तिशिल्प संरक्षण के विवादास्पद तौर-तरीकों और अनियंत्रित पर्यटन से पूरी तरह तबाही के कगार पर

बाईं ओर की कवर तस्वीर 1909-11 के दौरान लेडी हेरिंगहैम की बनाई एक कॉपी है. इसे 'कंपोजिशन की सुंदरता' दिखाने की खातिर 'छोटी-छोटी खामियों को ढकने' के लिए चुना गया है, जो क्षय की स्थिति का सटीक रिकॉर्ड नहीं है. लेकिन रंग पैलेट और टोन की तुलना रघु राय के 2023 फ्रेम के साथ करने पर अंदाजा लगता है कि तब वह भित्ति-चित्र कैसा लगता रहा होगा.

बिहार शरीफ हिंसा

25 नफरत की आग में खाक किताबें

रामनवमी पर कई राज्यों में हिंसक वारदातें हुईं, पर बिहार के इस शहर में नफरत का खामियाजा किताबों को भी भुगतना पड़ा.

कर्नाटक चुनाव

22 धरती पुत्र की पुकार

पूर्व प्रधानमंत्री एच. डी. देवेगौड़ा के नेतृत्व में जेडी (एस) अपनी जमीन बचाने के लिए हरसंभव कोशिश में जुटा.

लौंडा नाच

49 बस, बदनाम ही रहेगा लौंडा

पटना में लोक नाच को बढ़ावा देने के लिए महोत्सव तो हुआ पर सरकार सहज नहीं दिखी.

एनएमएसीसी

46 कलाएं लेंगी अब यहां से नई करवट

मुंबई में खुले नीता मुकेश अंबानी सांस्कृतिक केंद्र से कलाओं को तगड़ा प्रोत्साहन मिलने की उम्मीद.

पाठकों के लिए सूचना: कभी-कभी आपको इंडिया टुडे पत्रिका में 'इम्पैक्ट फीचर' या 'एडवरटोरियल' या 'फोकस' के पन्ने नजर आते होंगे. ये विज्ञापन हैं और इन्हें बनाने में पत्रिका का संपादकीय स्टाफ शामिल नहीं होता.

पाठकों को सलाह दी जाती है कि पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सेवा या व्यक्ति के विज्ञापन और प्रचार से संबंधित सामग्री से वचनबद्धता कायम करने, पैसा भेजने या खर्च करने से पहले उचित जांच-पड़ताल कर लें. विज्ञापनदाताओं के किसी भी दावे का उत्तरदायित्व इंडिया टुडे ग्रुप का नहीं है. ऐसे किसी भी तरह के दावों को विज्ञापनदाता अगर नहीं पूरा करता है तो इंडिया टुडे ग्रुप के प्रकाशनों के मुद्रक, प्रकाशक, एडिटर-इन-चीफ और एडिटर इसके लिए जिम्मेदार नहीं होंगे.

प. बंगालः केंद्र के खिलाफ
ममता का मोर्चा
पेज 8

सुर्खियां

राजस्थानः जयपुर ब्लास्ट की
जांच पर भारी आंच
पेज 10

Azadi Ka Amrit Mahotsav
Government of India Ministry of Commerce & Industry
Release of "Foreign Trade Policy 2023" by Shri Piyush Goyal Hon'ble Minister of Commerce & Industry, Consumer Affairs, Food & Public Dis
Smt. Anupriya Patel
...ister of State for Commerce
..., 2023 | Vanijya Bha... Delhi
G20
Release of "Foreign Trade

आगे की योजना
केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल नई दिल्ली में विदेश व्यापार नीति 2023 जारी करने के दौरान संबोधित करते हुए

एएनआइ

निर्यात

महत्वाकांक्षी लक्ष्य

एम.जी. अरुण

मार्च की 31 तारीख को जब वित्त वर्ष 2022-23 समाप्त हो रहा था, केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने 2023 के लिए भारत की विदेश व्यापार नीति (एफटीपी) का ऐलान करते हुए साल 2030 तक निर्यात का महत्वाकांक्षी लक्ष्य 164 लाख करोड़ रुपए तय किया. अब जबकि वित्त वर्ष 2023 में भारत का कुल निर्यात 62.7 लाख करोड़ रु. का रहा है, लिहाजा उस महत्वाकांक्षी लक्ष्य को पाने के लिए अगले सात साल तक प्रति वर्ष 14 प्रतिशत की दर से वृद्धि करनी होगी. विशेषज्ञ कहते हैं कि यह लक्ष्य आशावादी लगता है क्योंकि 2023 में निर्यात की वृद्धि करीब 10 प्रतिशत रही है.

वे इशारा करते हैं कि भारत के कोविड काल के प्रभाव से बाहर आने में मजबूत निर्यात एक महत्वपूर्ण कारक था—2020-21 में 291.8 अरब डॉलर (24 लाख करोड़ रुपए) तक गिरने के बाद, 2021-22 में व्यापारिक वस्तुओं का निर्यात तेजी से बढ़कर 422 अरब डॉलर (34.7 लाख करोड़ रुपए) तक पहुंच गया था. हालांकि उस तरह की वृद्धि वित्त वर्ष 2023 में कायम न रह सकी. फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गेनाइजेशन्स (एफआईईओ) के महानिदेशक और सीईओ अजय सहाय कहते हैं, "2022 में मांग में

असाधारण बढ़ोतरी हुई और इससे हमारे निर्यात में भारी वृद्धि हुई. यह वृद्धि वैश्विक व्यापार के रुझान के अनुरूप भी थी. लेकिन, 2022 की दूसरी छमाही में हम वैश्विक व्यापार में कुछ नरमी देख रहे हैं.''

गोयल ने हाल में मीडिया से बातचीत में माना कि ''इस समय निर्यात को लगभग 100 अरब डॉलर तक बढ़ाना आसान नहीं है. ...हालांकि सेवाओं के निर्यात ने माल पक्ष में आई कुछ कमी की भरपाई की है, लेकिन माल निर्यात में भी वृद्धि हुई है और कुछ निर्यात प्रतिबंध न होते तो यह वृद्धि और भी अधिक हो सकती थी.''

हालांकि गोयल को भरोसा है कि नई एफटीपी से भारत को निर्यात लक्ष्य हासिल करने में मदद मिल सकती है. यह नीति चार स्तंभों पर आधारित है: छूट को प्रोत्साहन, यानी निर्यातित उत्पादों पर चुकाए गए करों और लेवी की या तो छूट देना या इसे निर्यातकों को वापस करना; सहयोग के माध्यम से निर्यात संवर्धन; कारोबारी सहूलत (ईज ऑफ डूइंग बिजनेस), लेन-देन की लागतों में कमी और इलेक्ट्रॉनिक पहल; जिलों को निर्यात हब के रूप में विकसित करना और स्कोमेट (विशेष रसायन, जीव, सामग्री, उपकरण और प्रौद्योगिकी) नीति को सुव्यवस्थित करना.

निर्यात बढ़ाने के लिए केंद्र ने कई कदम उठाए हैं जिनमें संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) और ऑस्ट्रेलिया के साथ व्यापार साझेदारी शामिल है. अजय सहाय कहते हैं कि अगर हम यूके, कनाडा और इज्राएल तथा जीसीसी (खाड़ी सहयोग परिषद) के साथ व्यापार समझौते कर सकें तो हमारे पास बेहतर बाजार पहुंच होगी.

हालांकि समस्या यह है कि भारत उस बड़ी आर्थिक मंदी की लहरों को महसूस करने लगा है जिसका विकसित दुनिया सामना कर रही है. नवंबर 2022 में एसऐंडपी ग्लोबल ने कहा था कि प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं की मौद्रिक नीतियों में निरंतर आ रही कठोरता का प्रभाव स्पष्ट होने से इस साल वैश्विक विकास दर अनुमानित 3.4 प्रतिशत से घटकर 2.2 प्रतिशत रह जाएगी और अमेरिकी अर्थव्यवस्था में 0.1 प्रतिशत संकुचन होगा जबकि यूरोजोन स्थिर रहेगा. अमेरिकी फेडरल रिजर्व ने हाल ही में महंगाई रोकने के लिए ब्याज दरों में बढ़ोतरी की है जिससे उसके बैंकिंग क्षेत्र पर दबाव बढ़ा है.

कैसे बढ़ाया जाए निर्यात

- भारत को इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मा और उच्च प्रौद्योगिकी जैसे उभरते हुए क्षेत्रों को प्रोत्साहन देना चाहिए
- कृषि निर्यात पर भारत को अपना फोकस बनाए रखना चाहिए क्योंकि यह क्षेत्र पहले ही बेहतर प्रदर्शन कर रहा है
- निर्यात और मैन्युफैक्चरिंग को ढुलाई लागत घटाने से मदद मिल सकती है और तरलता बढ़ सकती है क्योंकि भुगतान में विलंब के साथ इन्वेंट्री बढ़ती जाती है

मशीनरी, प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रिकल व इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पाद इस समय कुल वैश्विक व्यापार का 35 प्रतिशत हैं, लेकिन भारत की इसमें बमुश्किल 1 प्रतिशत हिस्सेदारी ही है

उल्लेखनीय है कि पिछले ही महीने वहां के दो बैंक—सिलिकॉन वैली बैंक और सिग्नेचर बैंक—ध्वस्त हो गए थे. यूरोप भी अपने दूसरे सबसे बड़े बैंक क्रेडिट सुइस के पतन से हिल गया है, जिसका अधिग्रहण बाद में यूरोप के सबसे बड़े बैंक यूबीएस ने किया.

क्रिसिल की एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारत को भी एक हद तक संकट की तपिश महसूस हो सकती है क्योंकि कपड़ा, जूते और चमड़ा जैसे श्रम-प्रधान क्षेत्र मुख्यत: दुनिया के इन्हीं हिस्सों को होने वाले निर्यात पर अधिक निर्भर रहने के कारण विशेष रूप से कमजोर पड़ेंगे. उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतों में पहले ही नरमी आई है जिसका निर्यातकों पर असर पड़ा है.

बैंक ऑफ बड़ौदा के मुख्य अर्थशास्त्री मदन सबनवीस कहते हैं, ''निर्यात मांग से संचालित होती है और रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण वृद्धि दर में आई कमी के 2023 में जारी रहने की संभावना है.'' उनके मुताबिक, 2023-24 में भी निर्यात में वृद्धि फ्लैट रहने वाली है. इसके अलावा, रुपए के कमजोर होने से आमतौर पर भारत को जो प्रतिस्पर्धात्मक लाभ मिलता रहा है, वह भी संभवत: नहीं मिल सकेगा क्योंकि अधिकांश मुद्राएं डॉलर के मुकाबले कमजोर हो रही हैं. पिछले साल, भारत ने गैर-बासमती चावल और गेहूं जैसी कृषि वस्तुओं के निर्यात पर प्रतिबंध लगाते हुए इस्पात पर 15 प्रतिशत से लेकर लौह अयस्क पर लगभग 50 प्रतिशत तक का निर्यात शुल्क लगा दिया था. हालांकि इन शुल्कों को नवंबर में वापस ले लिया गया था, लेकिन निर्यातकों को चोट पहुंच चुकी थी. फिर भी, सबनवीस का मानना है कि थोड़ी सी मंदी का असर देखने के अलावा निर्यातोन्मुखी देश न होने के कारण भारत किसी भी संभावित वैश्विक वित्तीय संकट से एक हद तक बचा रह सकता है. वे कहते हैं, ''हम निर्यातोन्मुखी देश होने का सपना तो देखते हैं, लेकिन इसमें हम आकांक्षा बिंदु से आगे नहीं बढ़े हैं. हम ऐसी स्थिति में नहीं पहुंचे हैं जहां आपूर्ति शृंखला के अंग के रूप में बहुत से देश महत्वपूर्ण वस्तुओं और सेवाओं के लिए भारत पर निर्भर हों. जिस क्षण हम वैश्विक आपूर्ति शृंखला का हिस्सा बन जाएंगे, उस क्षण से निर्यात के ध्वस्त होने का जोखिम बढ़ जाएगा.''

पीएलआइ योजना में शामिल कुछ क्षेत्रों से भी उत्पादन में बढ़ोतरी देखने को मिल सकती है, और इसका एक हिस्सा वैश्विक बाजार में जगह बना सकता है. उदाहरण के लिए, इस साल भारत से मोबाइल निर्यात 10 अरब डॉलर (82,000 करोड़ रुपए) तक पहुंचने की उम्मीद है, और इलेक्ट्रॉनिक्स तथा फार्मा जैसे क्षेत्रों में भी बेहतर प्रदर्शन देखने को मिल सकता है. विशेषज्ञों के अनुसार, अन्य कदमों के साथ, सरकार को इन 'सनराइज' सेक्टरों को बड़ा करने पर ध्यान देना चाहिए. मशीनरी, प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रिकल तथा इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद इस समय कुल वैश्विक व्यापार का 35 प्रतिशत हैं, लेकिन भारत की इसमें बमुश्किल 1 प्रतिशत हिस्सेदारी है.

निकट भविष्य में परिवहन एवं उससे जुड़ी लागतों को कम करना तथा निर्यातों में तरलता बढ़ाना जरूरी है क्योंकि खरीदार भुगतान में देरी करते हुए माल की मात्रा बढ़ाते जाते हैं. विशेषज्ञों का यह भी कहना है कि कृषि निर्यात के क्षेत्र में देश का प्रदर्शन पहले से ही अच्छा है और सरकार को इस क्षेत्र पर अपना ध्यान बनाए रखना चाहिए. ■

২৯-৩০ মার্চ,
BJP
WASHING MACHINE

सड़क पर संघर्ष
29 मार्च को कोलकाता में केंद्र सरकार के खिलाफ धरने पर ममता बनर्जी

देवज्योति चक्रवर्ती

प. बंगाल

केंद्र के खिलाफ ममता का मोर्चा

रोमिता दत्ता

पश्चिम बंगाल के ग्रामीण इलाके धीरे-धीरे एक अलग तरह के संकट की चपेट में आ चुके हैं, जो हजारों मजदूरों की मुश्किलें बढ़ाने वाला साबित हो रहा है. दरअसल, मनरेगा जॉब कार्ड होने के बावजूद करीब 1 करोड़ लोगों के पास पिछले एक साल से कोई काम नहीं है, और अधिकांश को तो इस केंद्रीय रोजगार योजना के तहत पूर्व में कराए जा चुके काम का भुगतान भी नहीं किया गया है. इस वजह से 2022 में राज्य में बड़े पैमाने पर बेरोजगारी बढ़ी और दूसरे राज्यों में पलायन हुआ. एक नागरिक अधिकार समूह नरेगा संघर्ष मंच का तो दावा है कि इससे एक करोड़ से अधिक लोग प्रभावित हुए हैं. यह सब केंद्र की ओर से मनरेगा और प्रधानमंत्री आवास योजना (पीएमएवाइ) फंड रोके जाने का नतीजा है, जिसके पीछे स्पष्ट कारण राज्य प्रशासन और सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस पर बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार के आरोप को बताया गया है. इस मुद्दे को लेकर काफी समय से राजनीति गरमाई हुई है, टीएमसी ने जहां फंड रोके जाने के पीछे केंद्र की 'बदले की राजनीति' को जिम्मेदार ठहराया है, वहीं मुख्य विपक्षी दल भाजपा का आरोप है कि बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार के कारण यह स्थिति आई. अब, चूंकि पंचायत चुनावों में करीब एक माह का ही समय रह गया है, ऐसे में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के लिए राजनैतिक रूप से यह अपरिहार्य हो गया था कि वे करीब 5.66 करोड़ ग्रामीण मतदाताओं के बीच यह संदेश पहुंचाएं कि उनकी दुर्दशा के लिए राज्य नहीं, केंद्र सरकार जिम्मेदार है. 29 मार्च की दोपहर को मध्य कोलकाता की रेड रोड पर बी.आर. आंबेडकर की प्रतिमा के सामने शुरू हुए और रातभर चले उनके 31 घंटे के धरने में सब कुछ था, मोदी सरकार के खिलाफ भेदभाव और आर्थिक नाकाबंदी का आरोप, भाजपा की कथित साजिशों को नाकाम करने के लिए बंगाली गौरव का आह्वान और राष्ट्रीय स्तर पर विपक्षी एकता का आह्वान.

केंद्र ने मनरेगा अधिनियम की धारा 27 का हवाला देकर दिसंबर 2021 से मनरेगा के तहत धनराशि के आवंटन पर रोक लगा रखी है, जिसके तहत स्वीकृत राशि का दुरुपयोग होने पर उपयुक्त कदम उठाए जा सकते हैं. जुलाई 2021 में जमीनी स्तर पर जांच के दौरान केंद्रीय टीमों ने कथित तौर पर गबन, फर्जी काम, छद्म श्रमिकों और अन्य कदाचारों संबंधी साक्ष्य जुटाए थे. केंद्र ने इस संबंध में हुगली, पूर्वी बर्धमान, माल्दा और दार्जिलिंग के जिला प्रशासनों पर जुर्माना लगाया, साथ ही राज्य से कहा कि वह गड़बड़ियों का पता लगाकर कथित वित्तीय अनियमितताओं में शामिल पंचायत सदस्यों से जुर्माना राशि वसूले. राज्य का दावा है कि तमाम सवालों पर उसकी तरफ से स्थिति स्पष्ट कर दिए जाने के बावजूद केंद्र ने पहले कराए जा चुके काम की मजदूरी का 2,744 करोड़ रुपए का भुगतान अवैध तरीके से रोका है. राज्यसभा सांसद और टीएमसी नेता सुखेंदु शेखर रॉय के मुताबिक, केंद्र पर मनरेगा के 7,300 करोड़ रुपए और पीएमएवाइ के 8,200 करोड़ रुपए बकाया हैं. रॉय यह भी कहते हैं, ''हम केंद्र सरकार से यह बताने के लिए श्वेतपत्र लाने की मांग कर रहे हैं कि प्रमुख कार्यक्रमों पर अमल में विसंगतियों का पता लगाने के लिए कितनी केंद्रीय टीमों ने अन्य, खासकर भाजपा शासित, राज्यों का दौरा किया है.''

धरना स्थल पर ममता ने फिर यह आरोप लगाया कि केंद्र सरकार बंगाल के लोगों को उनके वैध बकाया भुगतान से वंचित कर रही है. उन्होंने कहा, ''मैं उन आम लोगों के अधिकारों के लिए धरने पर बैठी हूं, जिनका पैसा केंद्र ने जबरन रोक रखा है. जरूरत पड़ी तो ममता प्रधानमंत्री आवास के पास भी धरने पर बैठ सकती है. मुझमें यह हिम्मत है.''

पूरे प्रकरण में विपक्षी दल भाजपा अपनी बात पर कायम है कि टीएमसी ने मनरेगा के तहत 100 दिनों का काम देने और पीएमएवाइ के तहत घरों के आवंटन में वास्तविक जरूरतमंदों की अनदेखी कर कुछ लोगों को फायदा पहुंचाया. पूरे बंगाल में सत्ताधारी पार्टी के नेताओं और उनके वफादारों के कथित

ममता ने भाजपा को निशाने पर लेने के साथ 2024 के लोकसभा चुनाव के लिए विपक्षी एकजुटता का भी आह्वान किया

तौर पर संपन्न होने के बावजूद पीएमएवाइ और मनरेगा के लाभ हड़पने को लेकर भड़के गुस्से ने इन आरोपों को और बल दिया. ऐसे में आंतरिक जांच के लिए बाध्य हुए राज्य ने दिसंबर, 2022 में सार्वजनिक रूप से स्वीकारा कि 17 लाख अपात्र लोगों को पीएमएवाइ लाभार्थी सूची में जगह मिली है.

धरने पर बैठी ममता बनर्जी ने दो-टूक कहा कि यह लड़ाई वे ग्रामीण मजदूरों और श्रमिकों के लिए लड़ रही हैं और पूरे हो चुके काम की मजदूरी का भुगतान न करने को उन्होंने केंद्र की 'आर्थिक नाकाबंदी' करार दिया. संघर्ष मंच का भी तर्क है कि धारा 27 के तहत किसी धांधली की स्थिति में फंड तो रोका जा सकता है लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि काम पूरा होने के 15 दिन के अंदर मजदूरों को भुगतान की प्रक्रिया रोक दी जाए.

बंगाल के प्रति कथित तौर पर पक्षपातपूर्ण रवैया अपनाने के लिए केंद्र की आलोचना करने के अलावा ममता ने इस मौके का इस्तेमाल विपक्ष के साथ अपनी एकजुटता दर्शाने के लिए भी किया और 2024 का लोकसभा चुनाव भाजपा के खिलाफ साथ मिलकर लड़ने का आह्वान किया. यह कदम उनकी पूर्व घोषित स्थिति—एक गैर-कांग्रेसी विपक्षी मोर्चे के ही पक्ष में होने—से थोड़ा अलग और राहुल गांधी की लोकसभा सदस्यता जाने के बाद उनके और कांग्रेस के प्रति टीएमसी के समर्थन के अनुरूप है. ममता ने कहा, ''इस मोर्चे में सभी शामिल होंगे और मैं यह सुनिश्चित करूंगी कि यह टूटे नहीं.''

राजनीतिक विश्लेषक बिश्वनाथ चक्रवर्ती का मानना है कि यह धरना राष्ट्रीय राजनीति में अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने की कोशिश के अलावा सोचे-समझे तरीके से भाजपा पर नए सिरे से बोला गया हमला है. उनके मुताबिक, 'केंद्र के खिलाफ धरने पर बैठकर ममता दरअसल, एक मौन सहमति की अफवाहों के बीच, अल्पसंख्यकों को यह यकीन दिलाने की कोशिश कर रही हैं कि वे भाजपा के खिलाफ लड़ाई के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं. यह उन मुस्लिम मतदाताओं का भरोसा जीतने की भी एक रणनीति है, जो कांग्रेस और वामपंथियों की तरफ लामबंद होने लगे थे जैसा कि सागर दिघी उपचुनाव के नतीजे दर्शाते हैं.'' इस तरह, चक्रवर्ती की नजर में भाजपा के खिलाफ बढ़ी मुखरता की एक वजह यह भी है कि ममता को कहीं न कहीं यह डर सताने लगा है कि राज्य में कांग्रेस और वामपंथियों की राजनीतिक ताकत बढ़ रही है, और वो टीएमसी के मुस्लिम वोटबैंक में सेंध लगा सकती हैं. ■

#BeTheBetterGuy
A Road Safety Initiative

Moving the world Together

#GOINGTHEEXTRAMILE

कुछ मील एक्स्ट्रा

हम अक्सर सड़क पर खुद को दुविधा में पाते हैं। जब हमें ख़्याल आता है कि हम थोड़ी सी गलत दिशा में ड्राइविंग कर के कुछ किलोमीटर की दूरी या अपना वक्त बचा सकते हैं। हममें से कुछ उस ख़्याल को छोड़ देते हैं लेकिन कुछ गलत दिशा की तरफ बढ़ जाते हैं। हमें ऐसा बिल्कुल नहीं करना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने की कोई भी वाजिब वजह नहीं है। हमारे पास बहाने बहुत हैं, लेकिन कोई भी वजह, चाहे कितनी भी अर्जेंट हो हमें गलत दिशा में ड्राइविंग का हक नहीं दती। ऐसा करने से न सिर्फ ट्रैफिक के बहाव में परेशानी होती है बल्कि हम अपने साथ सड़क पर चलने वाले दूसरे लोगों की ज़िंदगी को भी ख़तरे में डालते हैं।

पहली बात तो ये है कि सड़क पर गलत दिशा में गाड़ी चलाने का ख्याल हमें ज़हन में आना ही नहीं चाहिए। अगर आपने पहले ऐसा किया है तो हम गुज़ारिश करते हैं कि प्लीज़ दोबारा ऐसा बिल्कुल न करें। धैर्य रखें, और उस एक्स्ट्रा किलोमीटर को ड्राइव करें जिसे बचाने के लिए आप गलत साइड गाड़ी चलाते हैं। ट्रैफिक में कुछ और मिनट बताएं लेकिन हमेशा सही दिशा से यू-टर्न लें।

हाईवे पर ड्राइविंग के लिए भी यही सही है। अगर आपने किसी भी वजह से कोई एग्जिट को क्रॉस कर गए है जिस पर आपको मुड़ना था, तो आप रिवर्स करने की कोशिश करने के बजाय सही दिशा में आगे बढ़ें और सही कट से ही यू टर्न लें। हां, इससे आपके सफर में कुछ किलोमीटर्स और कुछ वक्त बढ़ता ज़रूर है लेकिन यही सुरक्षित और सही तरीका है। और, जैसा कि हमने पहले ही बताया है, सही लेन चुनें और अपनी ड्राइविंग में इंडीकेटर्स का इस्तेमाल करें।

कार के इन-बिल्ट नेविगेशन या ऐपल कारप्ले और एंड्रॉइड ऑटो जैसे फोन मिररिंग ऐप का इस्तेमाल करने से आपको काफी मदद मिल सकती है क्योंकि इससे आप वो कट या एग्जिट याद नहीं रखना पड़ता, खासकर अगर आप किसी नयी रोड पर ड्राइविंग कर रहे हों। हां, अगर आपकी कार में यह फीचर नहीं है, तो आप अपना फ़ोन माउंट कर के, अपने रास्ते के लिए Google मैप का इस्तेमाल कर सकते हैं।

To Get All The Popular Newspapers. Type in Search Box of Telegram -

@LBSNEWSPAPER

If You Want to get these Newspapers Daily at earliest

English Newspapers»»

Indian Express, Financial Express, The Hindu, Business Line, The Times of India, The Economic Times, Hindustan Times, Business Standard, First India, Mint, Greater Kashmir, Greater Jammu, The Himalayan, The Tribune, Brill Express, The Sikh Times, Avenue Mail, Western Times, Millennium Post, The Statesman, State Times, The Pioneer, Hans India, Free Press, Orissa Post, Mumbai Mirror, Mid-Day, Deccan Chronicle, Deccan Herald, Telangana Today, Financial Times, The Asian Age, The Telegraph, Oheraldo, Gulf of Times, The New York Times, The Washington Post, Los Angeles Times, USA Today, The Wall Street Journal, The Guardian, The Times

Hindi Newspapers»»

दैनिक जागरण, राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, हिंदुस्तान, नवभारत टाइम्स, बिज़नस स्टैंडर्ड, अमर उजाला,पंजाब केसरी, उत्तम हिन्दू, जनसत्ता, लोकसत्ता, हरिभूमि, द पायनीयर,जागरूक टाइम्स, राष्ट्रीय सहारा, दैनिक ट्रिब्यून, युवा गोरव, भारतीय सहारा, स्वंतंत्र वार्ता, सीमा संदेश, दैनिक सवेरा,एक्शन इंडिया, मदरलैंड वॉइस, देशबंधु, हिमाचल दस्तक,

Others»» Hindi & English Editorial, Employment News, Malayalam Newspapers

Type in Search box of Telegram @LBSNEWSPAPER And you will find a Channel named newspaper join it and receive daily editions of all popular epapers at the earliest

Join Our Telegram Channel

Or

JOIN CHANNEL

you can click on this link

https://t.me/LBSNEWSPAPER

राजस्थान

जयपुर ब्लास्ट की जांच पर भारी आंच

आनंद चौधरी

एएनआइ

मई13, 2008 की शाम जयपुर शहर को जो जख्म मिले थे, वे 29 मई, 2023 को एक बार फिर हरे हो गए. राजस्थान हाइकोर्ट की जयपुर खंडपीठ ने इस दिन जयपुर बम ब्लास्ट के चार आरोपियों को मृत्युदंड और राजद्रोह के आरोपों से बरी कर दिया. इस फैसले का एक मतलब यह भी था कि ब्लास्ट के लिए जिम्मेदार असल आतंकवादी अब भी पुलिस की पकड़ से दूर हैं. इससे इतर राजस्थान हाइकोर्ट के जस्टिस पंकज भंडारी और समीर जैन की डिविजनल बेंच ने फैसला सुनाते हुए बम ब्लास्ट केस के जांच अधिकारियों की भूमिका पर गंभीर सवाल उठाए और उनके खिलाफ कई लिखित तल्ख टिप्पणियां भी कीं. अदालत का कहना था, ''जांच अधिकारी में कानूनी ज्ञान का अभाव था और पूरी जांच त्रुटिपूर्ण, घटिया और खामियों से भरी हुई थी.'' अदालत ने राजस्थान के पुलिस महानिदेशक को जांच अधिकारियों के खिलाफ जांच व कार्रवाई करने और मुख्य सचिव को जांच की निगरानी करने के आदेश भी दिए. इस मामले में बचाव पक्ष ने 24 गवाह पेश किए जबकि सरकार की ओर से 1,270 गवाह पेश हुए. सरकार की ओर से वकीलों ने 800 पेज की बहस की. वहीं बचाव पक्ष की ओर से सुप्रीम कोर्ट की वरिष्ठ वकील नित्या रामकृष्णन के नेतृत्व में आठ वकीलों ने पैरवी की.

13 मई, 2008 की शाम को करीब सवा सात बजे के बाद 20 मिनट के भीतर एक के बाद एक 8 बम धमाके हुए थे. आतंकवादियों ने शहर में कुल नौ जगह बम फिट किए थे हालांकि आखिरी बम डिस्पोजल स्क्वॉड ने डिफ्यूज कर दिया था. इन धमाकों में कुल 71 लोगों की मौत हुई थी और 185 लोग घायल हुए थे. तब इस मामले की जांच राजस्थान पुलिस की एटीएस को सौंपी गई थी.

एटीएस की जांच के आधार पर जयपुर ब्लास्ट मामले में 20 दिसंबर, 2019 को ट्रायल कोर्ट ने चारों आरोपियों सरवर आजमी, सलमान, मोहम्मद सैफ और सैफुर्रहमान को फांसी की सजा सुनाई थी. हालांकि अब हाइकोर्ट ने एटीएस की ओर से जुटाए गए सबूतों के साथ ही ट्रायल कोर्ट के फैसले पर भी सवाल उठाए हैं. आदेश में कहा गया है, ''ट्रायल कोर्ट ने अस्वीकार्य सबूतों पर भरोसा किया और विरोधाभासों को नजरअंदाज किया. यह भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 का उल्लंघन है... जांच एजेंसियों की विफलता के कारण पीड़ित (निर्दोषों के) होने वाला यह पहला मामला नहीं है और अगर इसे ऐसे ही छोड़ दिया गया तो यह निश्चित रूप से आखिरी मामला नहीं होगा. इसलिए मुख्य सचिव को इस मामले को देखना चाहिए.''

> ❝राज्य सरकार जयपुर बम ब्लास्ट मामले में हाइकोर्ट के फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अपील करेगी. हमारी सरकार की मंशा है कि दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा मिले❞
>
> **—अशोक गहलोत,**
> मुख्यमंत्री, राजस्थान

इस मामले में बचाव पक्ष के वकील सैयद सआदत अली कहते हैं, ''हाइकोर्ट का यह फैसला न्याय की जीत है. एटीएस की गलती और मनगढ़ंत जांच के कारण इन युवकों को अपनी जिंदगी के बेशकीमती 15 साल जेल में बिताने पड़े.'' वहीं एडीशनल एडवोकेट जनरल (एएजी) राजेश महर्षि ने कहा है कि हाइकोर्ट के फैसले के खिलाफ सरकार जल्द सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर करेगी.

यह दिलचस्प है कि हाइकोर्ट ने जिस तरह यह फैसला दिया है, उसकी एक मिसाल इसी मामले में ट्रायल कोर्ट में भी बनी थी. 18 दिसंबर, 2019 को जयपुर शहर की ट्रायल

दोषी या निर्दोष
जयपुर बम ब्लास्ट के चारों आरोपी ट्रायल कोर्ट में 20 दिसंबर, 2019 को पेश किए जाने के दौरान, तब चारों आरोपियों को दोषी ठहराते हुए अदालत ने फांसी की सजा सुनाई थी

अदालत ने एटीएस की जांच थ्योरी पर उठाए सवाल

- एटीएस ने बम धमाकों में इस्तेमाल साइकिलों को खरीदने के जो बिल बरामद किए थे, उन पर हाइकोर्ट ने कहा कि इन बिलों पर दर्ज नंबर और जब्त की गईं साइकिलों पर दर्ज नंबर अलग-अलग हैं

- एटीएस का दावा था कि 13 मई, 2008 को आरोपी दिल्ली से जयपुर आए. जालूपुरा स्थित करीम होटल पर खाना खाया और किशनपोल बाजार से साइकिलें खरीदीं. फिर उनमें बम प्लांट किए और शाम 4.30 से 5 बजे के बीच जयपुर रेलवे स्टेशन से शताब्दी एक्सप्रेस से दिल्ली लौट गए. अदालत का इस पर कहना था कि यह सब एक ही दिन में कैसे संभव है? एटीएस और सरकारी वकील आरोपियों के दिल्ली से जयपुर यात्रा करने के उनके नाम के टिकट पेश नहीं कर सके

रॉयटर्स

आतंक के निशान
जयपुर बम ब्लास्ट के बाद एक घटनास्थल का दृश्य

- एटीएस ने बम में इस्तेमाल हुए छर्रे दिल्ली की जामा मस्जिद के पास से खरीदना बताया, लेकिन एटीएस-पुलिस ने जो छर्रे पेश किए उनकी और बम में इस्तेमाल हुए छर्रों की एफएसएल रिपोर्ट मेल नहीं खा सकीं

- हाइकोर्ट ने आरोपियों की शिनाख्ती परेड को गैर कानूनी बताया क्योंकि मजिस्ट्रेट और जांच अधिकारी एक ही समय में शिनाख्ती परेड के दौरान जेल में मौजूद थे. नियमों के मुताबिक, शिनाख्ती परेड के दौरान जांच अधिकारी (आइओ) जेल परिसर में मौजूद नहीं होना चाहिए

- एटीएस ने जांच में यह दावा किया कि दिल्ली से दो न्यूज चैनलों को ईमेल और वीडियो मिले हैं जिनमें इंडियन मुजाहिदीन ने ब्लास्ट की जिम्मेदारी ली थी. एटीएस ये ईमेल अदालत के सामने पेश नहीं कर सकी. साथ ही जिन लोगों ने दावा किया था कि उनके न्यूज चैनल में ईमेल आया है, उन्हें कोर्ट में एग्जामिन नहीं कराया गया

कोर्ट ने बम ब्लास्ट मामले में एक आरोपी शाहबाज को सबूतों के अभाव में बरी किया था. उस वक्त भी ट्रायल कोर्ट के सामने अभियोजन पक्ष ने राजस्थान हाइकोर्ट की तरह कई दलीलें पेश की थीं, लेकिन कोर्ट ने बचाव पक्ष की दलीलों के आधार पर शाहबाज को बरी कर दिया. शाहबाज के वकील निशांत व्यास के मुताबिक, ''शाहबाज पर बम धमाकों की जिम्मेदारी लेने वाला ईमेल भेजने का आरोप था, लेकिन एटीएस ईमेल कोर्ट में पेश नहीं कर पाई. इसके अलावा साइबर कैफे संचालक को भी बयान के लिए न तो पेश कर पाई और न उसकी ओर से बताए गए स्केच को कोर्ट में पेश कर पाई.''

हाइकोर्ट ने 29 मार्च, 2023 के अपने फैसले में भी एटीएस की कुछ ऐसी ही खामियों की तरफ ध्यान दिलाया है (देखें बॉक्स – अदालत ने एटीएस की जांच थ्योरी पर सवाल उठाए). 20 दिसंबर 2018 को जिन सबूतों के अभाव में शाहबाज को बरी किया गया था, कुछ वैसा ही दृश्य 29 मार्च को ट्रायल कोर्ट की ओर से मृत्युदंड और आजीवन कारावास के दोषी करार दिए गए आरोपी मोहम्मद सैफ, मोहम्मद सरवर और मोहम्मद सलमान और सैफुर्रहमान के मामले में नजर आया.

सुप्रीम कोर्ट इस मामले में आगे जो भी फैसला दे, उससे इतर हाइकोर्ट के ताजा फैसले से जांच ऐजेंसियों की कार्यप्रणाली पर कई सवालिया निशान लगे हैं और यह सभी के लिए खतरे की बात है. ■

> **“कांग्रेस हमेशा तुष्टिकरण की राजनीति करती है. जयपुर बम ब्लास्ट के मामले में हाइकोर्ट में सरकार ने प्रभावी पैरवी नहीं की”**
>
> **—सी.पी. जोशी,**
> भाजपा अध्यक्ष, राजस्थान

जम्मू-कश्मीर

भर्ती परीक्षाओं में झोल

मोअज्जम मोहम्मद

नाराजगी
सरकारी नौकरियों के उम्मीदवार श्रीनगर में 8 मार्च को प्रदर्शन करते हुए

आबिद भट

जम्मू-कश्मीर में पिछले एक साल में हुए कई घटनाक्रमों ने राज्य की सरकारी नौकरियों में भर्ती अभियानों को लेकर बड़ी चिंताएं खड़ी की हैं. सबसे पहले तो पुलिस उप-निरीक्षकों, कनिष्ठ अभियंताओं और वित्त लेखा सहायकों की तीन चयन सूचियों को भ्रष्टाचार से लेकर धोखाधड़ी और पेपर लीक तक के आरोपों के बीच रद्द कर दिया गया. फिर एक अन्य विवाद इसको लेकर खड़ा हो गया कि इस प्रक्रिया को संपन्न कराने के लिए जिस एजेंसी को लगाया गया है वह 'दागी' है. अब उम्मीदवार और विपक्ष दोनों ही परीक्षाओं को नए सिरे से आयोजित करने की मांग के साथ प्रदर्शन कर रहे हैं.

यह मुद्दा पिछले साल सितंबर में सामने आया जब भर्ती एजेंसी, जम्मू-कश्मीर सेवा चयन बोर्ड (जेकेएसएसबी) ने गैर-राजपत्रित पदों को भरने के लिए कंप्यूटर आधारित परीक्षा कराने के लिए निविदाएं निकालीं. इनमें उन पदों के लिए भी परीक्षाएं कराने का जिक्र था जिन्हें एक महीने पहले रद्द किया गया था. प्रक्रिया को नए सिरे से शुरू करते हुए, जेकेएसएसबी ने 14 सितंबर को संभावित फर्मों के साथ प्री-बिड मीटिंग के बाद अपने शुरुआती मानदंडों में संशोधन किया. उससे उन कंपनियों को भी टेंडर भरने की अनुमति मिल गई जिन्हें पहले ब्लैकलिस्ट किया गया था. नवंबर में, ठेका मुंबई की एक फर्म एप्टेक लिमिटेड को मिला, जो उत्तर प्रदेश, राजस्थान और असम में जांच के दायरे में आई थी.

फर्म के दागदार अतीत के कारण अनंतनाग के शाहिद अहमद जैसे कई उम्मीदवार विरोध करने और जेकेएसएसबी को कंपनी से अनुबंध तोड़ने की मांग करने के लिए श्रीनगर पहुंचने को मजबूर हुए. 24 वर्षीय अहमद ने 2021 के बाद से कई सरकारी नौकरियों के लिए आवेदन किया है, और वे दावा करते हैं कि उन्होंने पिछले साल पुलिस सब-इंस्पेक्टर (एसआई) भर्ती परीक्षा भी पास कर ली थी, लेकिन अंततः उनके हाथ नौकरी नहीं आई. अगस्त में, प्रशासन ने एसआई की चयन सूची और बेंगलूरू स्थित कंपनी मेरिटट्रैक की ओर से आयोजित दो अन्य भर्ती परीक्षाओं को रद्द कर दिया और जेकेएसएसबी के अधिकारियों, मेरिटट्रैक और कुछ लाभार्थी उम्मीदवार के बीच संभावित 'आपराधिक साजिश' की जांच सीबीआइ को सौंप दी.

> **लोगों का गुस्सा बेवजह नहीं है. यहां सरकारी क्षेत्र सबसे बड़ा नियोक्ता है. यहां की बेरोजगारी दर एक साल में 13.2 फीसद से बढ़कर 17.1 फीसद हो गई है**

वहीं, दिसंबर 2022 में, जम्मू-कश्मीर हाइकोर्ट की एकल-न्यायाधीश पीठ ने प्रक्रिया को 'दुर्भावनापूर्ण' को मानते हुए एप्टेक के अनुबंध को रद्द कर दिया. इसने सरकार को जेकेएसएसबी अफसरों की 'अनियमितताओं' की जांच के लिए उच्च स्तरीय समिति गठित करने का भी निर्देश दिया. मगर चयन बोर्ड की अपील पर, 10 मार्च को एक खंडपीठ ने इस फैसले को रद्द कर दिया और मामले को नए सिरे से तय करने के लिए एकल-न्यायाधीश पीठ को वापस भेज दिया जिससे16 मार्च से होने वाली परीक्षाओं का रास्ता साफ हो गया.

हालांकि, फर्म पर प्रतिबंध की भारी मांग और आक्रोश के बीच, बोर्ड ने 14 मार्च को होने वाली परीक्षा स्थगित कर दी. उपराज्यपाल मनोज सिन्हा का कहना है कि सभी संदेहों का निराकरण होने के बाद ही परीक्षा होगी. उन्होंने कहा, ''पारदर्शिता हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है और योग्यता से कोई समझौता नहीं होगा. '' वहीं, जेकेएसएसबी के अध्यक्ष राजेश शर्मा का दावा है कि एप्टेक को निर्धारित नियमों का पालन करने के बाद ही काम सौंपा गया था.

पर, नौकरी के इच्छुक हजारों लोग नाराज हैं और वे पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए भर्ती बोर्ड में पूर्ण सुधार चाहते हैं. हाइकोर्ट के साथ-साथ जम्मू में सड़कों पर संघर्ष का नेतृत्व कर रहे विंकल शर्मा कहते हैं, ''हमने अपना कीमती वक्त और संसाधन गंवाए हैं, हम न्याय लेकर रहेंगे.'' बढ़ते गुस्से के बीच, न्यायपालिका और उपराज्यपाल के ऊपर बड़ी जिम्मेदारी है. उन्हें यह सुनिश्चित करना होगा कि भर्तियां पूरी पारदर्शिता के साथ हों. ■

आंकड़ों में सच

भारत में विदेशी वकील

भारत में विदेशी वकीलों को कानूनी कामकाज करने की सीमित इजाजत मिल गई है. 2018 में सुप्रीम कोर्ट ने विदेशी वकीलों को और फर्मों को देश में काम करने की अनुमति दी थी और भारत में वकीलों का कामकाज नियंत्रित करने वाली सर्वोच्च संस्था बार काउंसिल ऑफ इंडिया (बीसीआइ) ने पांच साल बाद इसके नियमों की अधिसूचना जारी कर दी है. विदेशी वकीलों के रजिस्ट्रेशन मई से शुरू होंगे. बीसीआइ चेयरमैन मनन कुमार मिश्र ने बताया कि छोटे-छोटे देश आर्बिट्रेशन में भारत से कहीं आगे हैं जबकि दुनिया में सबसे ज्यादा वकील भारत दे रहा है. भारत के वकीलों की विदेशी लॉ फर्मों में बहुत मांग है. इस फैसले से भारत को आर्बिट्रेशन हब बनाने में मदद मिलेगी जिसका फायदा यहां के वकीलों को होगा.

मनीष दीक्षित

> “इससे देश के वकीलों का कोई घाटा नहीं होगा. उन देशों के वकील भारत में काम नहीं कर सकेंगे जहां काम की इजाजत भारतीय वकीलों को नहीं है. जितने दरवाजे दूसरे देश खोलेंगे, उतने ही हम भी खोलेंगे”

चेयरमैन, बार काउंसिल ऑफ इंडिया

विदेशी वकील/फर्म क्या कर सकेंगे

- केवल विदेशों के कानून या इंटरनेशनल लॉ पर ही अपने क्लाइंट को सलाह दे सकेंगे
- सिर्फ नॉन लिटिगेशन मैटर में और विदेशी क्लाइंट को कानूनी सलाह दे सकेंगे
- विदेशी वकीलों को इंटरनेशनल कॉमर्शियल आर्बिट्रेशन में पेश होने की अनुमति होगी
- अधिग्रहण, मर्जर, इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी, कॉन्ट्रैक्ट ड्राफ्टिंग के काम कर सकेंगे

क्या नहीं कर सकेंगे

- भारतीय कानूनों पर किसी को सलाह या अन्य किसी तरह का काम नहीं कर सकेंगे
- हाइकोर्ट, सुप्रीम कोर्ट, जिला अदालत या किसी भी भारतीय अदालत में वकील के तौर पर जिरह के लिए पेश नहीं होंगे

25

लाख वकील

देश की विभिन्न स्टेट बार काउंसिलों में रजिस्टर्ड हैं, जिनमें से सर्वाधिक चार लाख से ज्यादा उत्तर प्रदेश में और सबसे कम 1,422 मेघालय में हैं

5

साल

के लिए होगा विदेशी वकीलों और लॉ फर्मों का रजिस्ट्रेशन

रजिस्ट्रेशन और दंड

केंद्र सरकार और बार काउंसिल के समक्ष इन्हें रजिस्ट्रेशन का आवेदन देना होगा. विदेशी वकीलों के लिए 25 हजार डॉलर और विदेशी फर्मों के लिए 50 हजार डॉलर रजिस्ट्रेशन फीस देनी होगी और पांच साल बाद इसका शुल्क के साथ नवीनीकरण कराना होगा. नियमों के उल्लंघन पर वकील या फर्म पर जुर्माने वगैरह की कार्रवाई होगी.

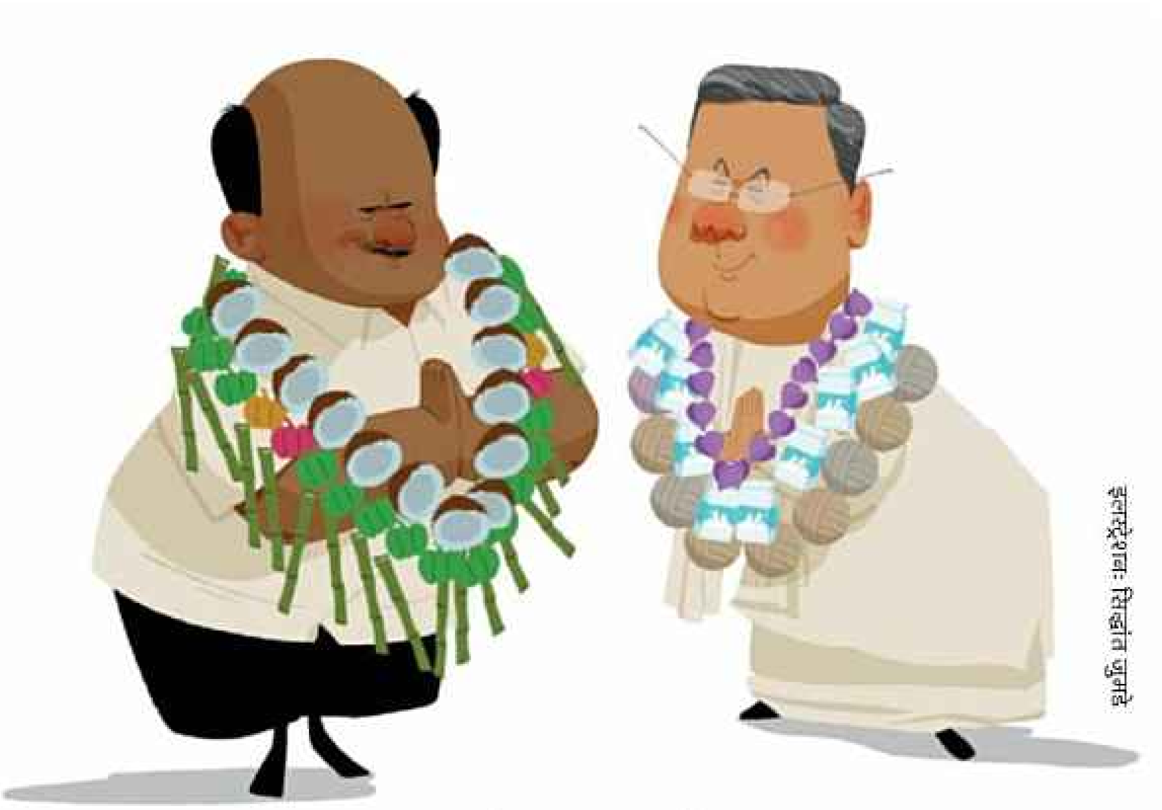
इलस्ट्रेशन: सिद्धांत जुमडे

समाचार सार

माला युद्ध

कर्नाटक में साल 2018 के विधानसभा चुनाव के दौरान आयोजित राजनीतिक रैलियों में क्रेन के सहारे लटकाई गई सेबों से बनी विशाल आकार की मालाओं का चलन था. इस बार पार्टी कार्यकर्ता अपने नेताओं को सम्मानित करने के लिए नई-नई चीजों का इस्तेमाल करने में एक-दूसरे से होड़ कर रहे हैं. जनता दल (सेक्युलर) के नेता एच.डी. कुमारस्वामी को तो नवंबर, 2022 में उनकी पंचरत्न यात्रा शुरू होने के बाद से मिली विभिन्न प्रकार की मालाओं के लिए रिकॉर्ड बुक में भी जगह मिल चुकी है. वहीं, जनवरी में कांग्रेस नेता सिद्धारमैया को प्रसिद्ध मिठाई 'मैसूर पाक' से बनी 1,000 किलोग्राम की माला भेंट की गई थी. इतना ही नहीं, कार्यकर्ता अपने नेताओं का स्वागत करने में नारियल, शिमला मिर्च, गन्ना, प्याज, वॉलीबॉल, जूस के पैकेटों और दूध के कार्टनों से बनी मालाओं का भी इस्तेमाल कर रहे हैं !

फाइट क्लब

भाजपा और हरियाणा में उसकी सहयोगी, **दुष्यंत चौटाला** के नेतृत्व वाली जननायक जनता पार्टी (जेजेपी), के बीच हिसार में सब ठीक नहीं चल रहा. भगवा खेमे से मौजूदा सांसद बृजेंद्र सिंह अतिसक्रिय हो गए हैं. वहीं उनके पिता, पूर्व केंद्रीय मंत्री बीरेंद्र सिंह, और मां, पूर्व विधायक प्रेम लता, ने भी चौटाला और जेजेपी पर तीखे हमले किए हैं. चौटाला ने विधानसभा चुनाव में उचाना कलां सीट से प्रेम लता को हराया था. बीरेंद्र एक अन्य दलबदलू परिवार से भी नाखुश हैं. यह है बीते साल भाजपा में आए कुलदीप बिश्नोई का परिवार. बहरहाल, केंद्रीय नेतृत्व इन झगड़ों पर चुप्पी साधे है.

पसंदीदा जोड़

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री **ममता बनर्जी** की प्रत्येक सरकारी योजना में प्रत्यय 'श्री' होता है, जिसका अर्थ है समृद्धि या सौंदर्य. उदाहरण के लिए, सड़क परियोजनाओं का नाम रास्ता-श्री रखा जाता है, तो युवाओं से जुड़ी योजनाएं युवाश्री हैं. लड़कियां कन्याश्री का लाभ लेते हुए उच्च शिक्षा के लिए जा सकती हैं और महिलाएं रूपश्री के तहत शादी कर सकती हैं. 'श्री' प्रत्यय से विभूषित होने वालों में नवीनतम है हावड़ा के बेलूर में स्थित मेडिकल कॉलेज, योग और प्राकृतिक चिकित्सा अस्पताल–योगश्री. मूल रूप से केंद्र सरकार की इस साझा पहल में ममता ने 'श्री' जोड़कर राज्य के लोगों में स्वामित्व का भाव पैदा करने की कोशिश की है.

मूंछ का सवाल

अपनी मूंछों को दांव पर लगाना पुरानी भारतीय परंपरा है. छत्तीसगढ़ में यह परंपरा चुनावी नतीजों से जुड़ी है. छत्तीसगढ़ के आदिवासी कांग्रेस नेता और खाद्य मंत्री **अमरजीत भगत** ने कहा है कि अगर कांग्रेस 2023 में हारती है तो वह अपनी मूंछें मुंड़वा लेंगे. भाजपा के दो आदिवासी नेताओं ने भी ऐसी ही कसम ले रखी है. नंद कुमार साय ने कहा है कि अगर भाजपा सत्ता में नहीं लौटी तो वह अपना सिर मुंड़वा लेंगे. वहीं रामविचार नेताम ने ऐलान किया कि वे तब तक बाल नहीं कटवाएंगे जब तक कि भाजपा सत्ता में वापस नहीं आ जाती.

मुस्लिम कार्ड

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के वाइस-चांसलर प्रो. **तारिक मंसूर** उन छह नेताओं में एकमात्र मुस्लिम हैं जो यूपी विधान परिषद के लिए नामित हुए. भाजपा में शामिल होने वाले वे एएमयू के पहले वीसी होंगे. संघ नेताओं से अच्छे संबंध रखने वाले मंसूर का कार्यकाल बीते साल बढ़ाया गया था और वे अब 17 मई को सेवानिवृत्त होने वाले थे. उनके जरिये भाजपा मुस्लिम बुद्धिजीवियों तक पहुंच बनाना चाह रही है. करीब एक साल बाद लोकसभा चुनाव हैं और पार्टी मंसूर पर बड़ा दांव लगा रही है. उन्हें योगी सरकार में बड़ी जिम्मेदारी दी जा सकती है.

–कौशिक डेका, साथ में अजय सुकुमारन, अनिलेश महाजन, आशीष मिश्र, राहुल नरोन्हा और रोमिता दत्ता

विधानसभा चुनाव 2023

कर्नाटक

धरतीपुत्र की पुकार

अपने दुर्जेय प्रतिद्वंद्वियों, कांग्रेस और भाजपा के हाथों जेडी (एस) की राजनैतिक जमीन गंवाने का खतरा भांपकर पार्टी के संरक्षक एच.डी. देवेगौड़ा खुद मैदान में उतरे

अजय सुकुमारन

मधुसूदन एस.आर.

पिछली मई में, जनता दल (सेक्युलर) के संरक्षक एच.डी. देवेगौड़ा ने अपना 90वां जन्मदिन मनाया था. एक क्षेत्रीय दल जो 2019 के मध्य से सत्ता से बाहर था, उसके लिए वयोवृद्ध देवेगौड़ा द्वारा रैली का मतलब है कि पार्टी अपनी वापसी के लिए आशान्वित है और उसके संरक्षक नया जोश भरने आए हैं. गौड़ा ने पार्टी कार्यकर्ताओं से आह्वान किया, ''हमारा संघर्ष यहां से, फिर से शुरू होता है.'' पिछले एक साल में, अपने खराब स्वास्थ्य के कारण देवेगौड़ा शायद ही कभी सार्वजनिक सभाओं में दिखाई दिए. लेकिन, 26 मार्च को वे मैसूरू में थे जहां समर्थकों की भीड़ उन्हें सुनने के लिए उमड़ पड़ी. गौड़ा ने निराश भी नहीं किया. उनके बेटे एच.डी. कुमारस्वामी ने उत्साह में भरकर कहा कि डॉक्टर ने इतने महीनों में उपचार से उनके शरीर को जितनी राहत पहुंचाई, उससे ज्यादा लाभ तो यहां उमड़ी भीड़ ने पहुंचा दिया. 91 साल की उम्र में भी गौड़ा पार्टी के लिए राज्य के दक्षिण में भीड़ खींच रहे हैं, जहां एक बड़ी लड़ाई की पृष्ठभूमि तैयार हो रही है.

पिछले चुनावों की तरह इस चुनाव में भी जेडी (एस) 224 सीटों वाली राज्य विधानसभा में दुर्जेय प्रतिद्वंद्वियों, कांग्रेस और भाजपा के खिलाफ अपनी जमीन बचाने के लिए लड़ रहा है. जनता दल से अलग होकर पार्टी को अस्तित्व में आए 24 साल हो चुके हैं. तब से तीन बार, यह गठबंधन सरकारों का हिस्सा रहा है लेकिन इनमें से कोई भी गठबंधन 20 महीने से अधिक नहीं चला. जेडी (एस) ने गठबंधन की पहली सरकार 2004 में कांग्रेस के साथ, फिर 2006 में भाजपा के साथ और 2018 में फिर से कांग्रेस के साथ बनाई थी. 10 मई को राज्य में चुनाव होने वाले हैं. यहां जेडी (एस) एक प्रमुख कारक बना हुआ है. 2018 में हुए पिछले चुनाव में इसने 18 प्रतिशत वोट हासिल किए, जो इसे सत्ता के खेल में एक प्रमुख धुरी बनाए रखने के लिए पर्याप्त थे. इसके बड़े प्रतिद्वंद्वियों को भी यही डर है इसलिए वे मतदाताओं को लगातार सावधान कर रहे हैं कि खिचड़ी सरकार के बजाय किसी एक पार्टी को ही सत्ता में लेकर आएं. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह दोनों, जो अक्सर राज्य के दौरे करते रहे हैं, इस बिंदु पर जोर देते हैं.

जेडी (एस) की जड़ें दक्षिणी कर्नाटक में सबसे गहरी हैं, विशेष रूप से 7-8 जिलों में जो पुराने मैसूरू क्षेत्र का हिस्सा हैं. विडंबना यह है कि 20 साल पहले इसके सामाजिक आधार में कई जातियों और समुदायों का व्यापक मिश्रण दिखता था. 2004 के चुनाव में-जो कि पार्टी का अब तक का सबसे अच्छा प्रदर्शन रहा है-इसके 58 विधायकों में से आधे से भी कम वोक्कालिगा थे, जो राज्य का दूसरा सबसे बड़ा जाति समूह है. गौड़ा इसी जाति से ताल्लुक रखते हैं. लेकिन 2018 में, इन्हें इस क्षेत्र की 37

चुनावी जंग
जेडी (एस) की मैसूरु में हुई रैली में एच.डी. देवेगौड़ा (दाएं), एच.डी. कुमारस्वामी (बीच में), एच.डी. रेवन्ना (बाएं) पार्टी नेताओं के साथ

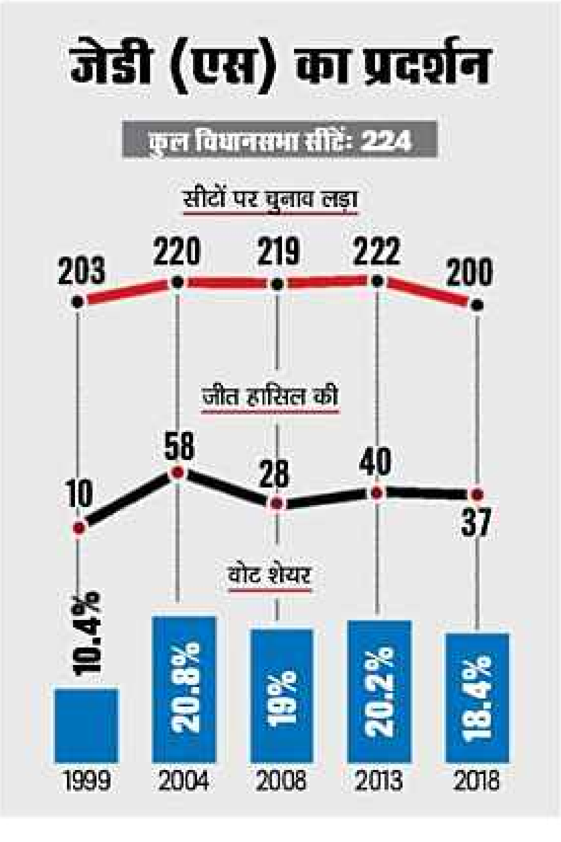

सीटों में से 23 सीटें मिलीं जबकि राज्य के अन्य क्षेत्रों में पार्टी की पकड़ घट गई. जाति-आधारित संगठन में परिवर्तन ने अनिवार्य रूप से गौड़ा के परिवार पर पार्टी की निर्भरता बहुत बढ़ा दी है. परिवार के छह सदस्य वर्तमान में किसी न किसी सदन के सदस्य हैं. वे खुद राज्यसभा सदस्य हैं. देवेगौड़ा के बड़े बेटे एच.डी. रेवन्ना, गौड़ा के गृहनगर हासन जिले के होलेनरसीपुरा का प्रतिनिधित्व करते हैं, कुमारस्वामी और उनकी पत्नी अनीता क्रमशः चन्नापटना और रामनगर से विधायक हैं. 2019 के बाद से, रेवन्ना के बेटे प्रज्वल और सूरज ने भी राजनीतिक करियर शुरू कर दिया है. प्रज्वल हासन से लोकसभा सांसद हैं जबकि सूरज विधान परिषद के सदस्य हैं.

अब, अनीता की जगह उनके बेटे निखिल को रामनगर के उम्मीदवार के रूप में स्थापित किया जा रहा है, जबकि हासन विधानसभा सीट के लिए खुली लड़ाई चल रही है जहां से रेवन्ना की पत्नी भवानी पार्टी का टिकट चाहती हैं. इस बात के लिए पार्टी, खासकर भाजपा के निशाने पर है जो इसे घोर परिवारवाद कहती है. इन आरोपों से नाराज कुमारस्वामी ने पिछले साल राज्य भाजपा में 'परिवार के शासन' के 16 उदाहरणों के साथ भाजपा पर पलटवार किया था. उन्होंने हाल ही में इंडिया टुडे टीवी को बताया, ''खुद शीशे के घरों में रहने वाले हमारी पार्टी पर पत्थर उछाल रहे हैं.''

दो बार के मुख्यमंत्री, 63 वर्षीय कुमारस्वामी 18 नवंबर से ही चुनाव अभियान पर हैं जब उन्होंने पंचरत्न यात्रा शुरू की जिसमें अब तक 100 निर्वाचन क्षेत्रों को कवर किया गया है. राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि जेडी (एस) वोक्कालिगा पर पकड़ बनाए रखने की चुनौती का सामना कर रहा है क्योंकि कांग्रेस और भाजपा दोनों ने वोक्कालिगा को लुभाने के प्रयास दोगुने कर दिए हैं.

कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष डी.के. शिवकुमार, खुद एक वोक्कालिगा और मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार हैं. परंपरागत रूप से, दक्षिणी कर्नाटक के जिलों में मुकाबला जद (एस) और कांग्रेस के बीच होता आया है. लेकिन इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि उसने कर्नाटक के अन्य हिस्सों में जितनी पकड़ बढ़ाई है उतनी पुराने मैसूरू क्षेत्र में नहीं, भाजपा ने भी कई सधी चालें चली हैं. पुराने मैसूरू में लड़ाई को त्रिकोणीय बनाने के लिए वह कई तरह के हथकंडे अपना रही है. उदाहरण के लिए, मार्च के अंत में सीएम बसवराज बोम्मई का वोक्कालिगा और लिंगायत (राज्य के अन्य बड़े जाति समूह) के लिए ओबीसी आरक्षण कोटा बढ़ाने के कदम को इस दिशा में एक महत्वपूर्ण चाल माना जा रहा है. इससे पहले, प्रधानमंत्री ने बेंगलूरू के 16वीं सदी के संस्थापक और समुदाय की महान विभूति माने जाने वाले केम्पेगौड़ा की 108 फुट की मूर्ति का अनावरण किया था और दिसंबर में, शाह वोक्कालिगा राजनीति के गढ़ मांड्या में थे और जेडी (एस) पर आक्रामक रहे. पिछले चुनाव में यह जिला जेडी (एस) के कब्जे में रहा.

जेडी (एस) वोक्कालिगा पर पकड़ बनाए रखने की चुनौती का सामना कर रहा है क्योंकि कांग्रेस और भाजपा दोनों ने इस समुदाय को लुभाने के प्रयास दोगुने कर दिए हैं

लेकिन जेडी (एस) को घेरने की कोशिशों के बीच भी, दोनों पार्टियां इस बात को लेकर बहुत सतर्क हैं कि कहीं उनके किसी कदम से वोक्कालिगा समुदाय उसके और करीब न आ जाए. ऐसा 2018 के चुनाव में दिखा भी था जब कांग्रेस के खिलाफ वोक्कालिगाओं के एकजुट होने से जेडी (एस) द्वारा जीती गई 37 सीटों में से 6 सीटों को छोड़कर, शेष सभी सीटें पुराने मैसूर क्षेत्र से आईं. पूर्व मुख्यमंत्री सिद्धारमैया का अपने पुराने गुरु देवेगौड़ा के खिलाफ बयान इसका प्रमुख कारण रहा. बेंगलूरू के अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में पब्लिक पॉलिसी के प्रोफेसर और राजनीतिक टिप्पणीकार प्रोफेसर ए. नारायण कहते हैं, ''इसकी पहचान कभी परिवार-केंद्रित पार्टी तो कभी एक जाति-आधारित पार्टी के रूप में ही बनती है.'' इसलिए विधानसभा चुनावों के अगले वर्ष, 2019 में, बावजूद इसके कि उनकी पार्टी के पास जिले की सभी सात विधानसभा सीटें थीं, निखिल मांड्या से लोकसभा चुनाव हार गए. मतदाताओं की सहानुभूति हाल ही में विधवा हुई पूर्व अभिनेत्री और निर्दलीय उम्मीदवार सुमनलता अंबरीश के पक्ष में रही. इस बार, ऐसी मजबूत भावनाओं को जगाने वाला कोई कारक नहीं है इसलिए उन्हें लगता है कि पुराने मैसूरू में जेडी(एस) और कांग्रेस के बीच कांटे की लड़ाई होगी.

मैसूरू की रैली में, गौड़ा ने एक तैयार भाषण पढ़कर लोगों को याद दिलाया कि भले ही कर्नाटक के मुख्यमंत्री और देश के प्रधानमंत्री के रूप में उनका कार्यकाल छोटा था फिर भी उन्होंने समाज के सभी वर्गों-महिलाओं, दलितों और मुसलमानों-के लिए काम किया है. संयोग से, सीएम के रूप में कुमारस्वामी के दो कार्यकाल केवल 20 महीने और 14 महीने तक चले. वह भावनात्मक अपील जेडी (एस) के अभियान का मुख्य मुद्दा भी है क्योंकि पार्टी अपने लिए स्पष्ट बहुमत की मांग कर रही है. भीड़ से कुमारास्वामी ने अपील की, ''मुझे यकीन है कि आप मुझे 50 से कम सीटें नहीं देंगे. लेकिन मैं पांच साल की सरकार चाहता हूं.''

बड़े प्रतिद्वंद्वियों के विपरीत, पंचरत्न यात्रा में बड़ी रैलियों के आयोजन के बजाय ज्यादातर छोटे शहरों और गांवों में रोड शो किए गए. इसके पांच सूत्रीय एजेंडे में स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, कृषि और आवास के कार्यक्रम शामिल हैं. पार्टीजन उस भीड़ की ओर इशारा करते हैं जो इन बैठकों में कुमारस्वामी के आने का अक्सर आधी रात तक इंतजार करती है. वे कहते हैं कि यह इस बात का प्रमाण है कि जेडी(एस) का अपना मूल वोट बैंक अब भी पूरी तरह उसके साथ है. जेडी(एस) विधायक के.ए. थिप्पेस्वामी कहते हैं, ''यात्रा के प्रति लोगों का जो उत्साह था, उससे खुद हम भी हैरान थे.'' यात्रा आम तौर पर तालुका मुख्यालय से बचती है और गांवों में लोगों के साथ आमने-सामने की बातचीत को प्राथमिकता दी जाती है. उनकेमुताबिक पार्टी का ध्यान उन विधानसभा सीटों पर है जिन्हें पार्टी बड़े छोटे अंतर से हारी. 2018 में जेडी (एस) ऐसी छह सीटों पर दूसरे नंबर पर रहा जहां जीत का अंतर 5,000 से कम था और लगभग 13 सीटों पर वे 5,000-13,000 के अंतर से हारे थे.

हालांकि, पिछले कुछ वर्षों में, जेडी(एस) अपने पाले से नेताओं का पलायन रोकने में असमर्थ रहा है. यह पलायन 2008 में कुमारस्वामी द्वारा भाजपा के साथ सरकार बनाने के असफल प्रयास के बाद शुरू हुआ था. जबकि भाजपा को सहानुभूति की लहर से लाभ हुआ जिसने उसे उस वर्ष कर्नाटक में सत्ता में आने में मदद की, जेडी (एस) का समर्थन आधार धीरे-धीरे और सिकुड़ गया जब मुस्लिमों ने भी कांग्रेस का रुख कर लिया.

गुब्बी के विधायक एस.आर. श्रीनिवास और कोलार के विधायक के. श्रीनिवास गौड़ा जिन्हें पिछले साल राज्यसभा चुनाव में क्रॉस वोटिंग के लिए निष्कासित कर दिया गया था और पिछले हफ्ते अर्सीकेर के विधायक के.एम. शिवलिंगे गौड़ा और अर्कालगुड विधायक ए.टी. रामास्वामी जैसे कई मौजूदा विधायकों के पार्टी छोड़कर कांग्रेस और भाजपा में शामिल होने से पार्टी पर असर तो हुआ है लेकिन जेडी (एस) के एक नेता का दावा है कि इन सीटों पर पार्टी के पास नए और ज्यादा मजबूत चेहरों की कोई कमी नहीं है जो ये सीटें फिर से पार्टी की झोली में डाल सकते हैं. इसके अलावा, जनता दल के पुराने भरोसेमंद नेता सी.एम. इब्राहिम के राज्य अध्यक्ष होने, और हिजाब, हलाल मांस और मुस्लिम व्यापारियों के बहिष्कार जैसे मुद्दों पर पिछले एक साल में दक्षिणपंथी अभियानों के खिलाफ कुमारस्वामी के रुख के कारण, जेडी (एस) को विश्वास है कि वह मुसलमानों का समर्थन वापस पा सकती है. नारायण कहते हैं, जेडी (एस) को अक्सर चुनाव-दर-चुनाव में खारिज कर दिया जाता है और इसके अस्तित्व पर प्रश्न खड़े किए जाते रहे हैं. वे कहते हैं, ''ऐसा अब तक नहीं हुआ है और मुझे नहीं लगता कि यह होगा. यह मांग और आपूर्ति का साधारण फॉर्मूला है.'' इसलिए, पिछले तीन चुनावों में जेडी (एस) कुछ उत्तरी जिलों में भी छिटपुट सीटों पर कब्जा करने में कामयाब रहा है, जहां इसकी उपस्थिति ज्यादा नहीं है.

परिवार पर बहुत निर्भरता दिक्कतें भी लाई है. हासन के टिकट को लेकर भवानी और कुमारस्वामी के बीच लड़ाई खत्म नहीं हो रही. कुमारस्वामी अपनी भाभी की जगह यहां से स्थानीय कार्यकर्ता एच.पी. स्वरूप को चुनाव लड़ाने के पक्ष में हैं. पार्टी के लोगों का कहना है कि इस मामले में अब देवेगौड़ा को ही अनिवार्य रूप से हस्तक्षेप करना होगा. जेडी (एस) क्या फिर किंगमेकर की भूमिका निभा सकता है, बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करेगा कि वह अपने साथियों को कितना एकजुट रख पाता है. ■

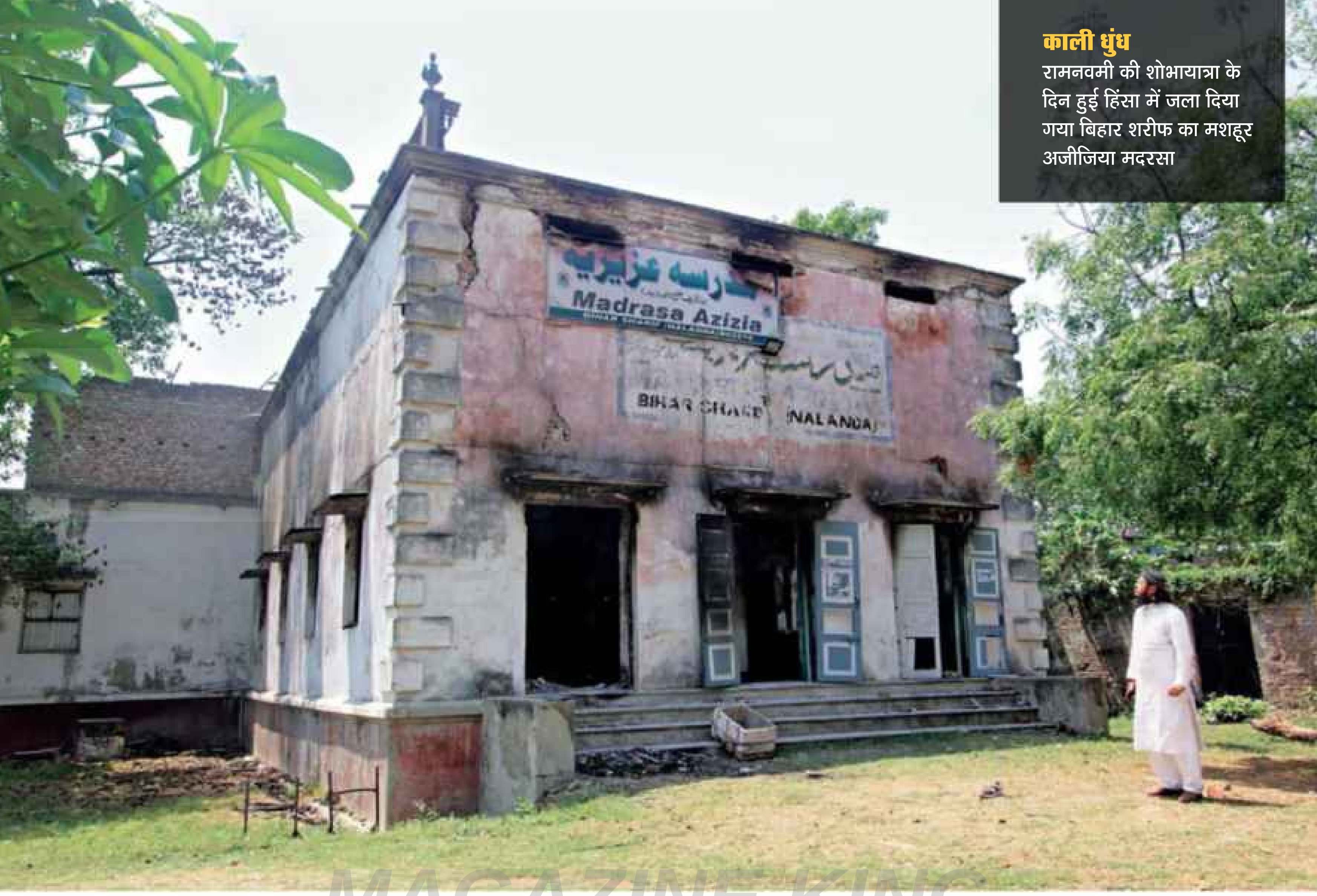

काली धुंध
रामनवमी की शोभायात्रा के दिन हुई हिंसा में जला दिया गया बिहार शरीफ का मशहूर अजीजिया मदरसा

सभी फोटो : रंजन राही

नफरत की आग में खाक किताबें

रामनवमी के मौके पर कई राज्यों में हिंसक वारदातें हुईं, पर बिहार के इस शहर में नफरत का खामियाजा लोगों के दिमाग को रौशन करने वाली किताबों को भी भुगतना पड़ा

पुष्यमित्र

उस लाइब्रेरी के विशाल कक्ष में जगह-जगह जली हुई किताबें नजर आ रही थीं. इनके अलावा बच्चों की आंसर शीट, उनके सर्टिफिकेट और अन्य कागजात भी जहां-तहां बिखरे थे. वह नालंदा जिले में स्थित बिहार शरीफ के 127 साल पुराने मशहूर अजीजिया मदरसे की लाइब्रेरी थी, जिसे एक धार्मिक जुलूस ने 31 मार्च को जला दिया. उस दोमंजिला विशाल कक्ष के दूसरी छोर की तरफ एक अलमारी अभी भी खड़ी थी. उससे धुआं निकल रहा था और उसके निचले रैक पर एक चिंगारी भी सुलग रही थी.

रामनवमी शोभायात्रा के दिन, 31 मार्च को अजीजिया मदरसे की लाइब्रेरी पूरी तरह जला दी गई. ''यहां से करीब 10-12 किमी की दूरी पर पुराना नालंदा विश्वविद्यालय है. हमने हिस्ट्री की किताब में पढ़ा है कि बख्तियार खिलजी ने वहां की लाइब्रेरी में आग लगा दी थी. उसमें कई जरूरी किताबें जल गई थीं. मगर हमने कभी सोचा नहीं था कि हम अपने ही शहर की इस लाइब्रेरी को इस तरह जलते हुए देखेंगे. खिलजी तो विदेशी था. वह हमारे देश को लूटने आया था. मगर यहां हमारे अपने

देश के लोगों ने किताबों पर गुस्सा उतारा है.’’ लाइब्रेरी को दिखाने के लिए हमें लेकर गए 18-19 साल के बारहवीं पास एक लड़के ने जब यह कहा तो लगा कि जैसे वह एक जिंदा इतिहास के निर्मम दौर को महसूस कर रहा हो. मदरसे के प्रिंसिपल मोहम्मद शाकिर कासमी के मुताबिक, उस लाइब्रेरी में धार्मिक और यूनानी-तिब्बी इलाज की 250 हस्तलिखित और दुर्लभ पांडुलिपियों समेत तकरीबन 4,500 किताबें थीं, जो सबकी सब जल गईं.

अजीजिया मदरसा के सेक्रेटरी मुख्तारुल हक बताते हैं, ‘‘उस रोज शहर में रामनवमी की शोभायात्रा निकल रही थी और हमारे रमजान के दिन थे. इफ्तार का वक्त हो गया था. अचानक शहर के गगन दीवान कब्रिस्तान के पास कोई झड़प हुई, हंगामा हुआ और फिर उग्र भीड़ वापस हुई तो वह इस मदरसे तक आ गई. जबकि यह मदरसा उस शोभायात्रा के लिए तय रूट में नहीं था. जब भीड़ मदरसे के गेट तक पहुंची तो यहां हमारे एक नेपाली गार्ड मोहन बहादुर के सिवा कोई नहीं था. उसने बताया कि भीड़ काफी उग्र थी और गेट के ग्रिल को तोड़ने की कोशिश कर रही थी. गार्ड ने हमें भी फोन किया. लोग अंदर घुसे तो पहले गार्ड पर हमला किया, मगर उसने खुद को हिंदू बताकर किसी तरह अपनी जान बचाई और भागा.’’

वे कहते हैं कि गार्ड से खबर मिलने के बाद से उन लोगों ने पुलिस-प्रशासन को कई दफा फोन किया, पर कहीं से उन्हें रेस्पॉन्स नहीं मिला. रातभर शहर में हंगामा होता रहा. वे डरे रहे कि रात मदरसे में क्या हुआ होगा, मालूम नहीं. सुबह चार बजे मदरसे के प्रिंसिपल जब वहां पहुंचे तो उन्होंने देखा कि सब जल चुका था.

इस मदरसे का इतिहास बताते हुए सेक्रेटरी मुख्तारुल हक कहते हैं, ‘‘1896 में जिस जमाने में पढ़ने-लिखने की ज्यादा बातें नहीं होती थीं, एक महिला सोगरा बीबी ने अपने शौहर अब्दुल अजीज के नाम पर इस मदरसे की शुरुआत की. रजिस्ट्री के हिसाब से यह बिहार का छठे नंबर का मदरसा था. उन्होंने अपनी सारी जायदाद, जिनमें कई जिलों में उनकी करीब 17,000 एकड़ जमीन थी और दूसरी चीजें भी होंगी, को जन कल्याण के लिए वक्फ कर दिया. उस वक्फ से जो पहली चीज बनी वह यह मदरसा थी और तय हुआ कि वक्फ की छह आना (37.5 फीसद) प्रॉपर्टी का इस्तेमाल मदरसे के संचालन में होगा. इस मदरसे में आज पहली से फाजिल (एमए) तक की हर विषय की पढ़ाई होती है. धर्म की और विज्ञान की भी. 500 बच्चे यहां एनरॉल हैं, जिनमें 300 नियमित आते हैं. यहां प्रयोगशालाएं हैं और कंप्यूटर लैब भी.’’

पिछले साल 22 सितंबर को युनाइटेड नेशनल पापुलेशन फंड की इंडिया रिप्रेजेंटेटिव एंड्रिया वोजनार इस मदरसे को देखने आई थीं. मदरसे के प्रिंसिपल कहते हैं कि वे यहां की लड़कियों से मिलकर काफी खुश हुईं और अपनी संस्था के ट्विटर हैंडिल पर यहां की लड़कियों के साथ अपनी तस्वीरें भी पोस्ट कीं. इस मदरसे से कई नामी-गिरामी लोग पढ़कर निकले. जैसे मौलाना अबू सलमा साहब जो मदरसा आलिया, कलकत्ता के प्रिंसिपल रहे. इनके अलावा मुफ्ती निजामुद्दीन, जो दारुल उलूम देवबंद के मुफ्ती-ए-आजम हैं.

प्रिंसिपल मोहम्मद शाकिर कासमी बताते हैं, ‘‘1910 से यह लाइब्रेरी चल रही है. यह काफी अच्छी लाइब्रेरी थी, इसलिए इस मदरसे के मुख्य गेट के बाद जो सबसे बड़ा हॉल था, उसमें हमने इस लाइब्रेरी को जगह दी. लाइब्रेरी में अपने जमाने की कई अहम किताबें थीं, जैसे मेडिकल साइंस से संबंधित *इल्मुल हिकमत, इम्लुम उसूल* और *इम्लुम तिब्ब* जैसी हस्तलिखित किताबें. ये किताबें दूसरी जगह नहीं मिलेंगी. ऐसी तकरीबन 250 हस्तलिखित किताबें थीं, जिनमें मेडिकल की किताबें थीं और फलसफे की भी. हिंदुस्तान की आजादी से जुड़ी कई रेयर किताबें भी यहां थीं. ये सब उस रात जलकर राख हो गईं. हमें अफसोस है कि इन जरूरी किताबों का हम अभी तक डिजिटाइजेशन नहीं करा पाए. यहां आठ अन्य अलमारियां थीं, जिनमें बच्चों की मार्कशीट और सर्टिफिकेट थे. वे भी जल गईं.’’

इस आगजनी में लाइब्रेरी के दोनों फ्लोर तो जल ही गए, कई और कमरों को नुक्सान पहुंचा है. मुख्तारुल हक कहते हैं, ‘‘हैरत की बात तो यह है कि 31 मार्च के कांड के बाद अगले दिन एक अप्रैल को पूरे दिन यहां पुलिस रही, इसके बावजूद उस रात दोबारा इस मदरसे को जलाने की कोशिश की गई. बंद पड़े कमरे के अंदर पेट्रोल बम डाला गया. इसे हमने अगले दिन फिर पुलिस को दिखाया. हम लोगों ने स्थानीय थाने में एफआइआर की है. इस इमारत की ज्यादातर दीवारें और छतें फटने लगी हैं, अब यहां रहना खतरनाक है. हमारा लगभग एक करोड़ रुपए का नुक्सान हुआ है. अब दोबारा इस मदरसे को हम पहले जैसी स्थिति में कब ला पाएंगे, कहना मुश्किल है.’’

जब 4 अप्रैल को *इंडिया टुडे* का यह संवाददाता बिहार शरीफ पहुंचा तो तीन दिन की बंदी के बाद शहर की दुकानें जरूर खुली थीं, मगर अमूमन काफी भीड़-भाड़ वाले इस शहर में इक्के-दुक्के लोग ही नजर आ रहे थे. जिला प्रशासन और शांति समिति की अगुआई

> **‘‘दोनों तरफ से 130 लोगों को गिरफ्तार किया गया है, अनुसंधान चल रहा है. 15 कांड दर्ज हुए हैं, जिनमें छह मुख्य कांड हैं. हम फरार लोगों को गिरफ्तार करने की कोशिश कर रहे हैं’’**
>
> **अशोक मिश्र,** एसपी, नालंदा

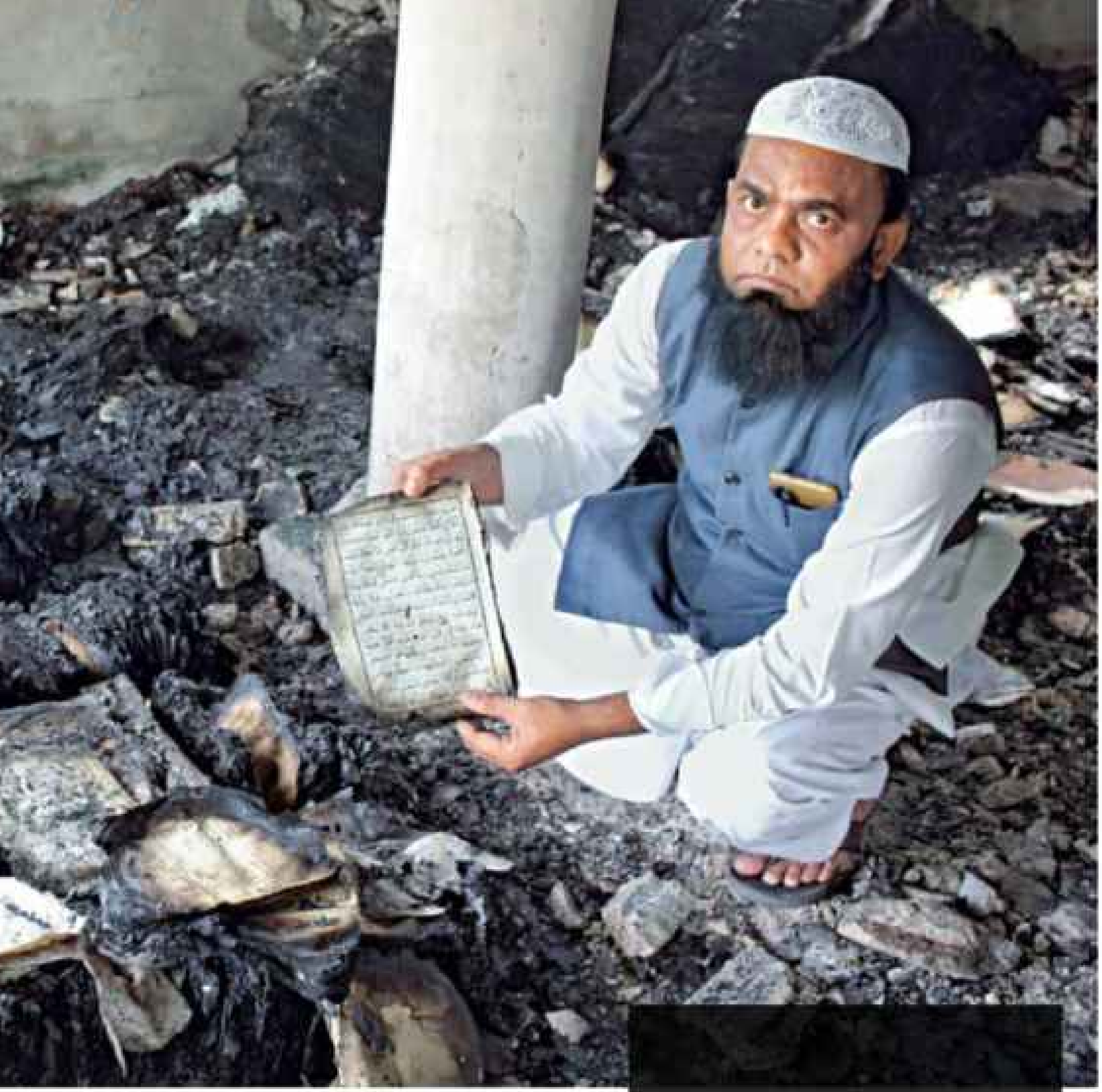

बस राख

अजीजिया मदरसे की लाइब्रेरी में रखी कई दुर्लभ किताबों को जलाकर खाक कर दिया गया

में उस रोज सुबह 11 बजे एक सद्भावना यात्रा निकाली जा रही थी. मगर उसमें कुछ अधिकारी, कुछ राजनेता, शांति समिति से जुड़े दोनों धर्मों के लोगों के अलावा कोई नहीं था. आम शहरी बस बरामदे और छतों से वीडियो बना रहे थे. वैसे पिछले तीन-चार दिनों से एहतियात के तौर पर पूरे नालंदा जिले का इंटरनेट भी बंद था.

यह सद्भावना यात्रा मुरादपुर मस्जिद के सामने से शुरू हुई. उस मस्जिद के सामने कई दुकानें जली हुईं थीं. उनमें एक दुकान नरेश कुमार की थी, जो पेशे से पेंटर हैं और घर पेंट करने का सामान भी बेचते हैं. उनसे सटे मोहम्मद नसीम खान की मुर्गियों की दुकान भी जला दी गई. दोनों दुकानें एक ही खपरैल में मस्जिद से बिल्कुल सटी थीं. प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि दंगाई मस्जिद के कैंपस में भी घुस गए और उसके गुंबद और वुजूखाने का शीशा तोड़ दिया. उस वक्त मस्जिद की सुरक्षा में तीन महिला पुलिसकर्मी और एक दिव्यांग पुलिस अधिकारी थे. लोगों ने बताया कि जब भीड़ ने हमला बोला तो महिला पुलिसकर्मी वहीं बेहोश हो गईं. वैसे, नालंदा के एसपी अशोक मिश्र ने इससे इनकार करते हैं.

मस्जिद के कैंपस में स्थित एक फल वाले के गोदाम को पूरी तरह जला दिया गया. फल वाला बार-बार रोकर दिखा रहा था कि कैसे अब उसका वह मकान भी जर्जर हो गया. वहां उसकी दो बाइक थीं और एक फ्रिजर, सब जला दी गईं. शहर में उस दिन कई दुकानें जलाई गईं. एक शॉपिंग मॉल डिजिटल दुनिया पर हमला कर लोगों ने उसे पूरी तरह लूट लिया. एशिया होटल को भी जला दिया गया.

उस रोज शहर में जो हुआ वह लोगों के लिए अनापेक्षित था. मुरादपुर मोहल्ले के चंद्रशेखर आजाद कहते हैं, ''पहले बिहार शरीफ में रामनवमी के मौके पर इतना बड़ा जुलूस नहीं निकलता था. पिछले चार-पांच साल से यहां बड़ी शोभायात्रा निकलने लगी है, जिसमें पूरे जिले के लोग आ जाते हैं. जुलूस का आकार लगातार बड़ा हो रहा है और उसके मुकाबले इस बार प्रशासन की तैयारी काफी कम थी. पहले बैरिकेडिंग करके शोभायात्रा के पूरे रास्ते को घेर दिया जाता था. पुलिस की भारी सुरक्षा होती थी, मगर इस बार तो कुछ इलाकों को पूरी तरह असुरक्षित छोड़ दिया गया. अगर पुलिस की व्यवस्था चाक चौबंद रहती तो इतना बड़ा कांड नहीं होता.'' वैसे, जिले के एसपी अशोक मिश्र व्यवस्था के लचर होने से इनकार करते हैं, ''ऐसा नहीं है, हमारे पास जो ऑर्डर थे, उसे हमने पूरा किया. मगर यह भी सच है कि कोई भी व्यवस्था आप कर लें, अगर भीड़ में कुछ असामाजिक तत्व हों, तो ऐसी घटनाएं हो जाती हैं.''

बिहार शरीफ शहर, जिसके नाम के पीछे ही शराफत जुड़ा हुआ है, के नाम में बिहार इसलिए है कि यहां बड़ी संख्या में बौद्ध विहार थे. इस शहर से सटा राजगीर एक जमाने में मगध साम्राज्य की राजधानी था. यहां शेख मखदूम शाह जैसे सूफी संत हुए. ऐसा नहीं है कि इस शहर में पहले सांप्रदायिक दंगे नहीं हुए, मगर शहर के लोगों का कहना है कि ऐसा माहौल उन्होंने पहले कभी नहीं देखा.

इस बार के तनाव में लोगों पर हमले कम हुए, किताबें अधिक जलाई गईं. लोगों ने अपना गुस्सा उन लिखित शब्दों पर उतारा जो इनसानी दिमाग को रौशन करते हैं. मदरसा अजीजिया के अलावा शहर के प्रमिला कॉम्प्लेक्स की चार दुकानों में भी आगजनी हुई. इनमें एक किताब और स्टेशनरी की काफी बड़ी दुकान थी. उस दुकान के सामने भी जली-अधजली किताबें पड़ी थीं. इस दुकान के मालिक नीरज ने बताया कि इन्हें जलाने वाले लोग छोटे-छोटे बच्चे थे, जो पेट्रोल बम लेकर दुकान में आग लगा रहे थे. उन्होंने अपने सीसीटीवी कैमरे में दर्ज वीडियो में इन्हें देखा है और उसकी फुटेज पुलिस को सौंप दी है.

इनमें सबसे बुरी घटना शहर के पहारपुरा मोहल्ले में हुई. 1 अप्रैल की शाम सवा सात बजे वहां के मख्दूम हुसैन बल्खी की दरगाह पर कुरान शरीफ समेत कई धार्मिक किताबों को जला दिया गया. बाद में वहां गोलीबारी भी हुई जिसमें दोनों तरफ के तीन लोगों को गोली लगी. एक किशोर गुलशन कुमार की मौत हो गई, दो अन्य घायल हैं, जिनका इलाज चल रहा है. जली हुई कुरान शरीफ की प्रतियां दिखाते हुए वहां के वार्ड नंबर 45 के पार्षद तसव्वुर हुसैन बम्मी कहते हैं, ''हम लोगों ने इन बातों को दबा लिया, क्योंकि अगर ये खबरें बाहर जातीं तो दुनियाभर में मुसलमान उग्र हो सकते थे. दंगा फैल सकता था. क्योंकि इस्लामी दुनिया में कुरान शरीफ को लेकर लोग काफी संवेदनशील हैं. लोग इसकी हिफाजत अपनी जान से बढ़कर करते हैं.''

बम्मी कहते हैं, ''हमने और एक अन्य वार्ड पार्षद रंजय कुमार वर्मा ने उग्र भीड़ को रोकने की पूरी कोशिश की. पुलिस को भी बुलाया, पर पुलिस से हमें सहयोग नहीं मिला. अगर पुलिस समय से आ जाती तो न गुलशन की मौत होती, न दो लोग घायल होते, और न ही कुरान शरीफ की प्रतियां जलाई जातीं.'' ■

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग प्रयाग

खास रपट | यूपीपीएससी

लोक सेवा आयोग में बदलाव की बयार

विवादों में घिरे रहने वाले उत्तर प्रदेश राज्य लोक सेवा आयोग में नई कार्यसंस्कृति पैदा करने के मिशन में जुटे चेयरमैन संजय श्रीनेत्र. पीसीएस परीक्षा में वैकल्पिक विषय खत्म कर संघ लोक सेवा आयोग को पीछे छोड़ा. अप्रैल से लागू हुई ओटीआर व्यवस्था

आशीष मिश्र

कैंडिडेट फ्रेंडली
उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग, प्रयागराज के गेट नंबर 3 के सामने बना बोधिसत्व सेल्फी पॉइंट

सुमित कुमार

प्रयागराज के कटरा इलाके में रहने वाली 24 वर्षीया कुमारी रश्मि बचपन से मेधावी छात्रा रही हैं. बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से इतिहास विषय में पोस्ट ग्रेजुएशन करने के बाद रश्मि ने सिविल सेवा को अपना लक्ष्य बनाया और तैयारी में जुट गईं. रश्मि ने 2016, 2018 और 2019 में उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) की सम्मलित राज्य प्रवर अधीनस्थ सेवा (पीसीएस) परीक्षा की प्रारंभिक व मुख्य परीक्षा उत्तीर्ण की लेकिन इंटरव्यू को न भेद पाईं. नतीजा बेहद मामूली अंकों से रश्मि का चयन न हो पाया और पीसीएस अफसर बनने का सपना अधूरा रह गया. ये वे वर्ष थे जब पीसीएस परीक्षा विवादों में घिर गई थी और स्केलिंग से जुड़ा विवाद कोर्ट की चौखट तक भी पहुंचा था. वर्ष 2019 में पिता का देहांत हो जाने के कारण परिवार संकट में आ गया और रश्मि दो साल परीक्षा नहीं दे सकीं. अपने आत्मबल को दोबारा जुटाते हुए रश्मि ने फरवरी के अंतिम हफ्ते में निकले पीसीएस-2023 परीक्षा के आवेदन पत्र को भरकर परीक्षा में शामिल होने का निर्णय लिया है. रश्मि के लिए एक बड़ी राहत भरी खबर यह है कि इस बार आयोग ने पीसीएस की मुख्य परीक्षा से वैकल्पिक विषय हटाने का अभूतपूर्व निर्णय लिया है.

इस निर्णय से उत्साहित रश्मि कहती हैं, ''दो साल वैकल्पिक विषय की तैयारी न कर पाने के कारण मेरा आत्मविश्वास कुछ कमजोर पड़ रहा था लेकिन अब वैकल्पिक विषय न होने से उन अभ्यर्थियों की संभावनाएं प्रबल हो गई हैं जो किसी एक विषय में विशेषज्ञता के बजाए सामान्य अध्ययन में विशेषज्ञता रखते हैं.'' रश्मि के जैसे लाखों अभ्यर्थी यूपीपीएससी में पीसीएस की मुख्य परीक्षा से वैकल्पिक विषय की अनिवार्यता हटाने से लाभान्वित होने की स्थिति में आ गए हैं (देखें बॉक्स). मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में कैबिनेट बैठक में 22 फरवरी को यूपीपीएससी की पीसीएस मुख्य परीक्षा में वैकल्पिक विषय को समाप्त करने के प्रस्ताव पर मुहर लगा दी गई. इस प्रकार यूपीपीएससी परीक्षा सुधार के मामले में संघ लोक सेवा आयोग से आगे निकल गया, जहां अभी भी वैकल्पिक विषयों को हटाने पर कोई निर्णय नहीं लिया जा सका है.

यूपीपीएससी में परीक्षा संबंधी नए सुधार लागू करने में मुख्य भूमिका आयोग के चेयरमैन संजय श्रीनेत्र की है. प्रवर्तन निदेशालय में नॉर्दन रीजन के स्पेशल डायरेक्टर रहे संजय श्रीनेत्र ने 18 मई, 2021 को यूपीपीएससी के चेयरमैन का दायित्व संभाला था. इसके बाद से श्रीनेत्र ने आयोग की कार्यसंस्कृति बदलने के लिए कई तरह की नई व्यवस्थाएं लागू की हैं. पीसीएस परीक्षा से वैकल्पिक विषय हटाने के लिए श्रीनेत्र ने देश और राज्य के विशेषज्ञों को सम्मिलित करते हुए एक पैनल बनाया और उन्हीं के सुझाव पर आधारित वैकल्पिक विषय हटाने संबंधी प्रस्ताव को राज्य सरकार को भेजा था. अभी तक यूपीपीएससी की मुख्य परीक्षाओं की व्यवस्था संघ लोक सेवा आयोग के पैटर्न पर थी. संघ लोक सेवा आयोग की मुख्य परीक्षा में भारत और अन्य सामान्य अध्ययन, निबंध, एक वैकल्पिक विषय से जुड़े दो प्रश्नपत्र पूछे जाते हैं. यूपीपीएससी ने अब वैकल्पिक विषय को हटाकर उसकी जगह उत्तर प्रदेश के बारे में जानकारी रखने वाले दो प्रश्नपत्र की व्यवस्था लागू की है. इस प्रकार मुख्य लिखित परीक्षा कुल 1,500 अंकों की ही होगी. इसके बाद इंटरव्यू के 100 अंक हैं. इंटरव्यू की व्यवस्था को पुख्ता करने के लिए इसे ''नाम रहित-चेहरा रहित'' किया गया है. इंटरव्यू के लिए आने वाले अभ्यर्थी का नाम, जाति और उसके कॉलेज या विश्वविद्यालय की

कुशल नेतृत्व
लोक सेवा आयोग के गलियारे में चेयरमैन संजय श्रीनेत्र

जानकारी साक्षात्कार परिषद को नहीं दी जाती है. अब हर अभ्यर्थी का एक यूनीक कोड होता है. साथ ही विशेष सॉफ्टवेयर के जरिए तैयार हुए विशेष अव्यवस्थति कोड से अभ्यर्थी को अंतिम समय तक यह नहीं पता लग पाता है कि उसे किस साक्षात्कार परिषद के सामने उपस्थति होना है. इसके साथ ही आयोग में सुबह और शाम के लिए अलग-अलग इंटरव्यू बोर्ड की व्यवस्था भी लागू की गई है. इंटरव्यू बोर्ड या साक्षात्कार परिषद में बैठने वाले सदस्यों के लिए भी कठिन मानक तय हुए हैं. अब हाइकोर्ट से सेवानिवृत्त न्यायाधीश, सेना में मेजर जनरल या उसके समकक्ष अधिकारी, आइएएस, पीसीएस के अफसरों व अन्य शीर्ष नौकरशाह के अलावा केवल कुलपतियों को ही साक्षात्कार परिषद में शामिल करने का नियम बनाया गया है. इंटरव्यू में पहली बार चेयरमैन समेत सभी सदस्यों की सीधी जिम्मेदारी भी तय करते हुए नई व्यवस्था लागू की गई है. पहले इंटरव्यू के बाद साक्षात्कार परिषद का अध्यक्ष सदस्यों से सलाह-मशविरा करके अभ्यर्थी को नंबर देता था. नई व्यवस्था के अनुसार अब साक्षात्कार परिषद में शामिल सभी चार सदस्य केवल प्रश्न ही नहीं पूछेंगे बल्कि नंबर भी देंगे. इंटरव्यू में अभ्यर्थी को मिलने वाले कुल अंक चेयरमैन और सभी सदस्यों द्वारा दिए गए कुल नंबरों का औसत होगा. इंटरव्यू बोर्ड के सदस्यों को नंबर देने के साथ ही उनकी जिम्मेदारी तय करने की व्यवस्था देश के किसी भी लोक सेवा आयोग में अभी तक नहीं है.

इतना ही नहीं यूपीपीएससी की परीक्षाओं में शामिल होने के लिए अब अभ्यर्थियों को बार-बार आवेदन करने की झंझट से भी निजात मिल गई है. 3 जनवरी को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने यूपीपीएससी में एकल अवसरीय पंजीकरण व्यवस्था (ओटीआर) की शुरुआत की. ओटीआर लागू करने में मुख्य भूमिका निभाने वाले आयोग के चेयरमैन श्रीनेत्र बताते हैं, ''अभ्यर्थी एक नाम से कई कई फॉर्म भर देते थे. अपनी सहूलत के अनुसार सेंटर मे जाकर परीक्षा दे देते थे. ईमानदार अभ्यर्थियों के हित और परीक्षा की शुचिता बनाए रखने के लिए एक संस्थागत प्रयास की जरूरत थी. अब जीवन भर कभी अभ्यर्थी को दोबारा आयोग की परीक्षाओं का फॉर्म नहीं भरना पड़ेगा. वह आयोग की वेबसाइट पर ओटीआर नंबर डालेगा और परीक्षा की फीस जमा कर देगा.'' ओटीआर व्यवस्था लागू करने के लिए आयोग ने नेशनल इन्फॉर्मेशन सिस्टम (एनआइसी) की मदद से एक सॉफ्टवेयर तैयार कराया है, जिसका कई स्तरों पर परीक्षण किया गया है, अब तक इस पर ढाइ लाख से अधिक लोग अपना पंजीकरण करा चुके हैं. पहली अप्रैल से ओटीआर व्यवस्था आयोग की सभी परीक्षाओं में लागू हो जाएगी. परीक्षा की आवेदन प्रक्रिया में अभी और सुधार होने जा रहे हैं. अभी तक अभ्यर्थी ऑनलाइन आवेदन फॉर्म भरने के बाद इसका प्रिंट आउट जरूरी दस्तावेजों के साथ आयोग को ऑफलाइन भेज रहे हैं. इसमें कई तरह की समस्याएं आ रही हैं. बड़ी संख्या में फॉर्म ऑफलाइन जमा न होने के कारण आवेदन निरस्त हो रहे थे और कई बार अभ्यर्थी फर्जी दस्तावेजों के साथ आवेदन कर रहे थे. इस समस्या से निबटने के लिए आयोग ऑनलाइन वेरिफिकेशन की व्यवस्था लागू करने की तैयारी कर रहा है.

> ''राज्य सरकार ने निष्पक्ष और पारदर्शी व्यवस्था के माध्यम से चयन प्रक्रिया की शुचिता सुनिश्चित की है. इसके माध्यम से प्रदेश में साढ़े पांच लाख से अधिक युवाओं को सरकारी नौकरी प्रदान की गई है. इस कार्य में उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग की महत्वपूर्ण भूमिका रही है''
>
> **—योगी आदित्यनाथ,**
> मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

श्रीनेत्र ने जब यूपीपीएससी की कमान संभाली उस वक्त अभ्यर्थी आयोग की परीक्षाओं में पूछे जाने वाले प्रश्नों पर सवाल उठा रहे थे. आयोग ने जब पीसीएस-2019 और पीसीएस-2020 की संशोधित उत्तरकुंजी एक साथ जारी की थी तो उसमें 38 सवाल गलत होने की पुष्टि हुई थी. इसके अलावा अन्य परीक्षाओं में भी प्रश्नों के विवाद लगातार सामने आते रहे हैं. श्रीनेत्र ने जब परीक्षाओं में गुणवत्तापूर्ण सुधार लाने के उद्देश्य से आयोग के विशेषज्ञों के कार्यप्रणाली की समीक्षा की और गुणवत्तापूर्ण न पाए जाने के कारण 80 विशेषज्ञों को पिछले साल 22 अगस्त को आयोग के पैनल से बाहर का रास्ता दिखा दिया. श्रीनेत्र बताते हैं, ''विशेषज्ञों के ज्यादा गलती करने पर सभी चयन आयोग को यह पत्र लिखा जाएगा कि वे भी इस विशेषज्ञ की सेवाएं न लें.''

आयोग की परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन को भी ''फूलप्रूफ'' बनाया गया है. पहले अभ्यर्थियों के रोल नंबर के साथ कॉपियां जांची जाती थीं पर अब कॉपियों पर रोल नंबर की जगह एक खास कोड होता है जिससे परीक्षक को यह नहीं पता चल पाता है कि वह किसकी कॉपी जांच रहा है. इतना ही नहीं. पहले यह तय नहीं था कि एक परीक्षक एक दिन में कितनी कॉपियों की जांच करेगा. चूंकि एक कॉपी को जांचने का मानदेय 500

सुमित कुमार

वैकल्पिक विषय से कठिनाइयां

- एक विषय में विशिष्ट ज्ञान रखकर आयोग की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उस विषय की निपुणता का सरकारी सेवा एवं उत्तरदायित्व निर्वहन में कोई भूमिका नहीं रहती
- पीसीएस परीक्षा में कुल 29 वैकल्पिक विषयों के कारण कुछ विषयों में अच्छे नंबर और कुछ विषयों में कम नंबर मिलने की संभावनाओं के कारण लगातार आशंकाएं बनी रहती थीं
- अत्यधिक वैकल्पिक विषयों के बीच अंकों की समरूपता की स्थिति स्थापित करने के लिए अपनाई जाने वालीं स्केलिंग पद्धतियों ने कई बार विवाद को जन्म दिया है
- आयोग की वर्तमान परीक्षा प्रणाली के चलते दूसरे राज्य के अभ्यर्थियों का पीसीएस परीक्षा में चयन हो जाता था जो बाद में कार्यभार न ग्रहण करने के कारण सीटें रिक्त रह जाती थीं
- वैकल्पिक विषय आधारित कोचिंग सेंटर की संख्या लगातार बढ़ रही थी जिनसे जुड़ी कई सारी गडबड़ियां पिछले दिनों जांच एजेंसियों को पकड़ में आई थीं

वैकल्पिक विषय हटने से लाभ

- मुख्य परीक्षा में सभी परीक्षार्थियों के लिए प्रश्नपत्र और एक तरह और अनिवार्य होने की स्थिति में परीक्षार्थियों के बीच प्रतियोगिता के लिए समान अवसर पैदा होंगे
- विभिन्न विषयों के बीच तुलनात्मक रूप से अच्छे व बुरे मार्किंग पैटर्न की स्थितियां और स्केलिंग को लेकर अभ्यर्थियों के बीच का संदेश समाप्त हो जाएगा
- पीसीएस परीक्षा में उत्तर प्रदेश राज्य के विशेष ज्ञान पर आधारित प्रश्नपत्रों की चयन प्रक्रिया से राज्य को अधिक से अधिक जानने और समझने वाले अधिकारी मिलेंगे
- परिवर्तित परीक्षा योजना में यूपी के अभ्यर्थियों का अधिक से अधिक चयन होगा और दूसरे प्रदेश के अभ्यर्थियों का कम चयन होने से रिक्त सीटों की संख्या में गिरावट आने की संभावना
- परिवर्तित परीक्षा योजना से राज्य की सिविल सेवा में किसी एक विषय में विशेषज्ञता के स्थान पर सभी क्षेत्रों में विशिष्ट ज्ञान से परीक्षा में अच्छे अभ्यर्थियों के चयन की अधिक संभावनाएं बढ़ेंगी

रुपए तय था, ऐसे में परीक्षकों में होड़ लगी रहती थी कि वे एक दिन में ज्यादा से कॉपियां जांच लें. अब एक परीक्षक एक दिन में 25 से ज्यादा कॉपियां नहीं जांचेगा.

आयोग की परीक्षाओं में अभ्यर्थियों के चयन की संभावनाओं को बढ़ाने के लिए खास प्रयास हुए हैं. अभी तक पीसीएस की प्रारंभिक परीक्षा में एक पद के सापेक्ष में 13 गुना अभ्यर्थियों का चयन किया जाता था. आयोग ने अब इसे बढ़ाकर 15 गुना कर दिया है. इसी तरह इंटरव्यू में एक पद के सापेक्ष दो अभ्यर्थियों का चयन किया जाता था. सिविल सेवा की तैयारी कराने वाली एक कोचिंग के प्रमुख आदित्य वर्मा बताते हैं, ''इंटरव्यू में एक पद के सापेक्ष दो अभ्यर्थियों का चयन करने के कारण जालसाजी को बढ़ावा मिल रहा था. इसमें जालसाज इंटरव्यू देने वाले अभ्यर्थियों को अपने झांसे में लेकर परीक्षा में सफल कराने का ठेका लेते थे.'' इस गड़बड़ी को दूर करने के लिए आयोग ने अब एक पद के सापेक्ष तीन अभ्यर्थियों को इंटरव्यू में बुलाने का निर्णय लिया है. यही नहीं मेडिकल अफसर, कॉलेजों के प्रधानाचार्य के पदों पर केवल इंटरव्यू के जरिए आयोग की सीधी भर्ती की प्रक्रियाएं भी सुधार के दायरे में हैं. अभी तक सीधी भर्ती के लिए होने वाले इंटरव्यू के लिए अभ्यर्थियों का चयन करने के लिए एक ऑब्जेक्टिव स्क्रीनिंग टेस्ट होती है. इस स्क्रीनिंग परीक्षा के आधार पर इंटरव्यू में शामिल होने वाले अभ्यर्थियों की मेरिट बनती है. इस प्रक्रिया में सुधार के लिए यूपीपीएससी ने सरकार को प्रस्ताव भेजा है कि भविष्य में स्क्रीनिंग टेस्ट के 50 प्रतिशत नंबर और इंटरव्यू के 50 प्रतिशत नंबर को जोड़कर अभ्यर्थी का चयन किया जाए.

आयोग के चेयरमैन श्रीनेत्र ने यूपीपीएससी के परिसर को भी 'कैंडिडेट फ्रेंड्ली' बनाने की कोशिश की है. आयोग के गेट नंबर तीन से भीतर प्रवेश करते ही 'बोधि संगम' नाम से एक सेल्फी पॉइंट बनाया गया है. यहां पर 'अप्प दीपोभव:' यानी 'अपना प्रकाश स्वयं बनो' जैसे कई सूक्तियां लिखी गई हैं. 'अमृत सरोवर' नाम से एक दूसरा सेल्फी पॉइंट चेयरमैन कार्यालय के बगल में बनाया गया है. श्रीनेत्र बताते हैं, ''आयोग परिसर में सेल्फी पॉइंट बनाने का मुख्य मकसद अभ्यर्थियों के मन से आयोग के प्रति भय या आशंकाओं को समाप्त करना है.''

इसी भय और आशंका को समाप्त करने की मकसद से पीसीएस परीक्षा का इंटरव्यू शुरू होने से पहले श्रीनेत्र सभी अभ्यर्थियों से एक साथ आयोग के सरस्वती हॉल में मिलते हैं. उनका हौसला बढ़ाते हैं और बिना किसी हिचक के साक्षात्कार बोर्ड के सामने जाने को प्रेरित करते हैं. आयोग के भीतर अंग्रेजों के जमाने के भवन ऑफिसर्स ट्रेनिंग स्कूल (ओटीएस) के कल्पवृक्ष हॉल में एक बड़ा संग्रहालय बन रहा है, जिसमें पुरातात्विक मूर्तियों के अलावा लोक सेवा आयोग के इतिहास से जुड़ी जानकारी और 'वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट' (ओडीओपी) से जुड़े उत्पाद प्रदर्शित होंगे. आयोग परिसर में सरयू भवन नामक ऑफिसर हॉस्टल और इसके आसपास के भवनों की जगह एक मल्टी स्टोरी बिल्डिंग बनाने का निर्णय लिया गया है. कुल 11 तल वाले इस भवन के दूसरे तल पर डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन हॉल और तीसरे तल पर साक्षात्कार कक्ष होगा. इसके बाद आयोग के सारे विभाग एक छत के नीचे हो जाएंगे.

परीक्षा प्रक्रियाओं में देरी और समय से परीक्षाफल घोषित न कर पाने से यूपीपीएससी आलोचना का शिकार होता रहा है. इसकी एक बड़ी वजह यह थी कि आयोग की परीक्षाओं से जुड़ी प्रक्रियाओं को पूरा करने के लिए कोई समय सीमा नहीं रहती थी. आयोग के चेयरमैन श्रीनेत्र ने अब परीक्षा की हर प्रक्रिया के लिए एक समय सीमा तय कर दी है, जिसका कड़ाई से पालन किया जा रहा है. परीक्षाओं के कैलेंडर को सख्ती से लागू किया गया है. आयोग ने 2022-23 के लिए कुल 22 परीक्षाओं का कैलेंडर घोषित किया था जिसके सापेक्ष अब तक 105 प्रतिशत उपलब्धि के साथ कुल 23 परीक्षाएं पूरी की जा चुकी हैं. 31 मार्च, 2022 तक आयोग ने 13,000 से अधिक पदों का विज्ञापन निकाला था. इस साल मार्च की शुरुआत तक इनमें से 92 प्रतिशत से अधिक यानी 12,000 से अधिक पदों पर चयन प्रक्रिया पूरी की जा चुकी है.

पिछले साल एक वर्ष के भीतर पीसीएस-2021 का परीक्षा परिणाम घोषित कर संघ लोक सेवा आयोग की बराबरी करने वाला यूपी लोक सेवा आयोग अब इस केंद्रीय संस्था को पीछे छोड़ने की तैयारी कर चुका है. यूपीपीएससी पीसीएस-2022 का अंतिम 15 अप्रैल से पहले घोषित करने का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रहा है. अगर श्रीनेत्र का यह लक्ष्य पूरा हुआ तो पहली बार यूपी लोक सेवा आयोग पीसीएस-2022 परीक्षा का नतीजा संघ लोक सेवा आयोग की आइएएस-2022 परीक्षा के नतीजे से काफी पहले घोषित कर देगा. ■

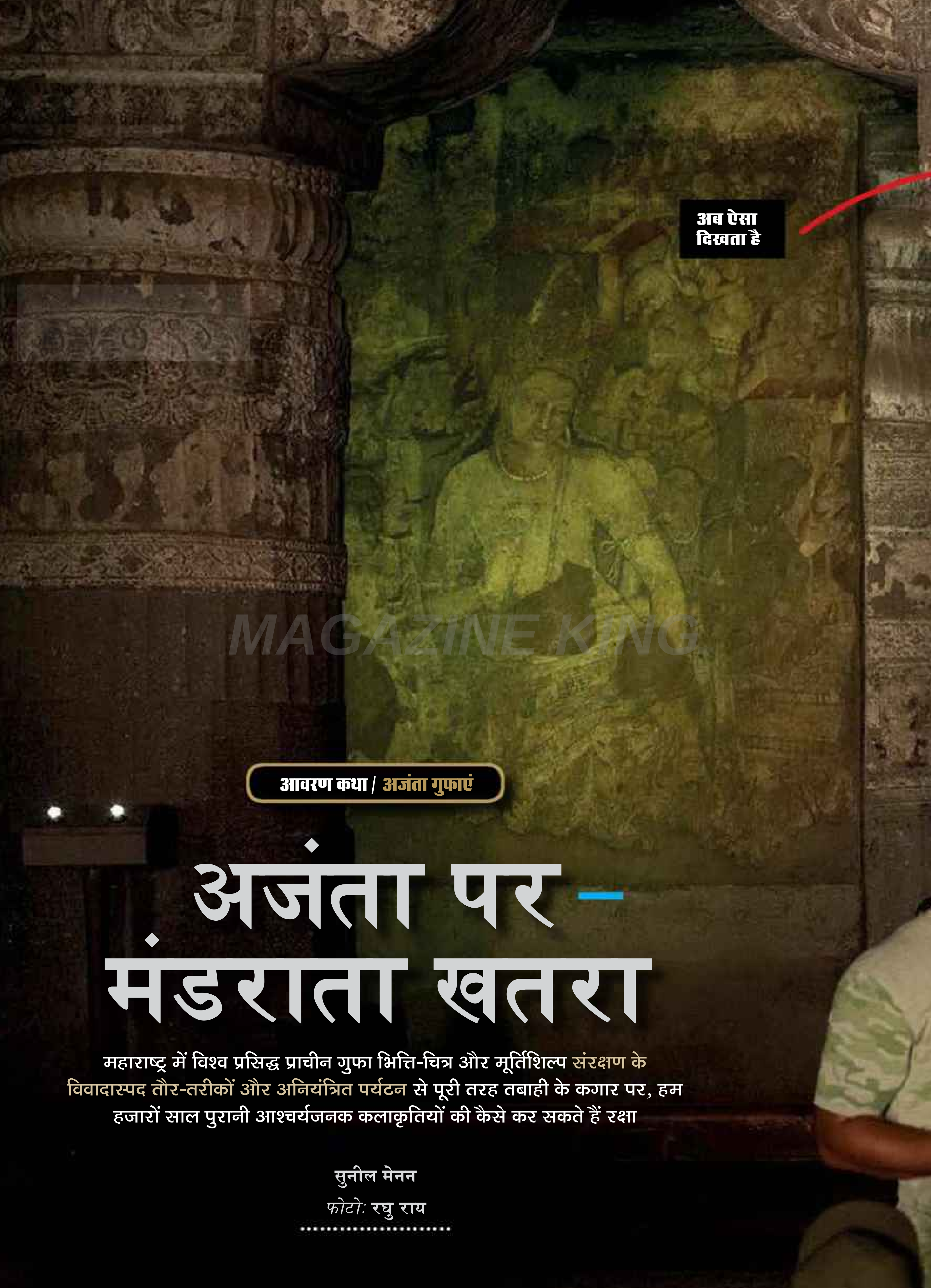

आवरण कथा / अजंता गुफाएं

अजंता पर मंडराता खतरा

महाराष्ट्र में विश्व प्रसिद्ध प्राचीन गुफा भित्ति-चित्र और मूर्तिशिल्प संरक्षण के विवादास्पद तौर-तरीकों और अनियंत्रित पर्यटन से पूरी तरह तबाही के कगार पर, हम हजारों साल पुरानी आश्चर्यजनक कलाकृतियों की कैसे कर सकते हैं रक्षा

सुनील मेनन

फोटोः रघु राय

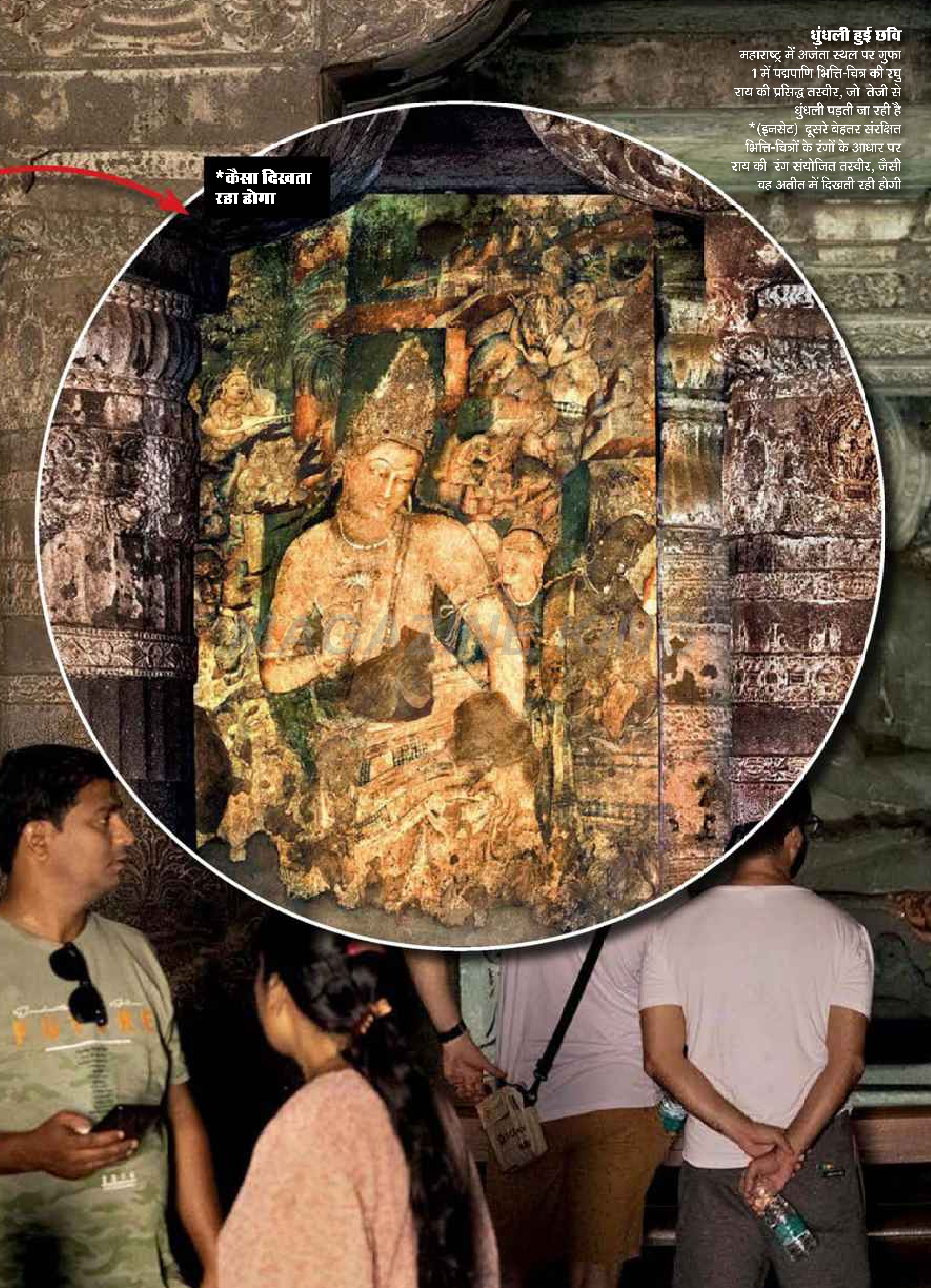

*कैसा दिखता रहा होगा

धुंधली हुई छवि
महाराष्ट्र में अजंता स्थल पर गुफा 1 में पद्मपाणि भित्ति-चित्र की रघु राय की प्रसिद्ध तस्वीर, जो तेजी से धुंधली पड़ती जा रही है
*(इनसेट) दूसरे बेहतर संरक्षित भित्ति-चित्रों के रंगों के आधार पर राय की रंग संयोजित तस्वीर, जैसी वह अतीत में दिखती रही होगी

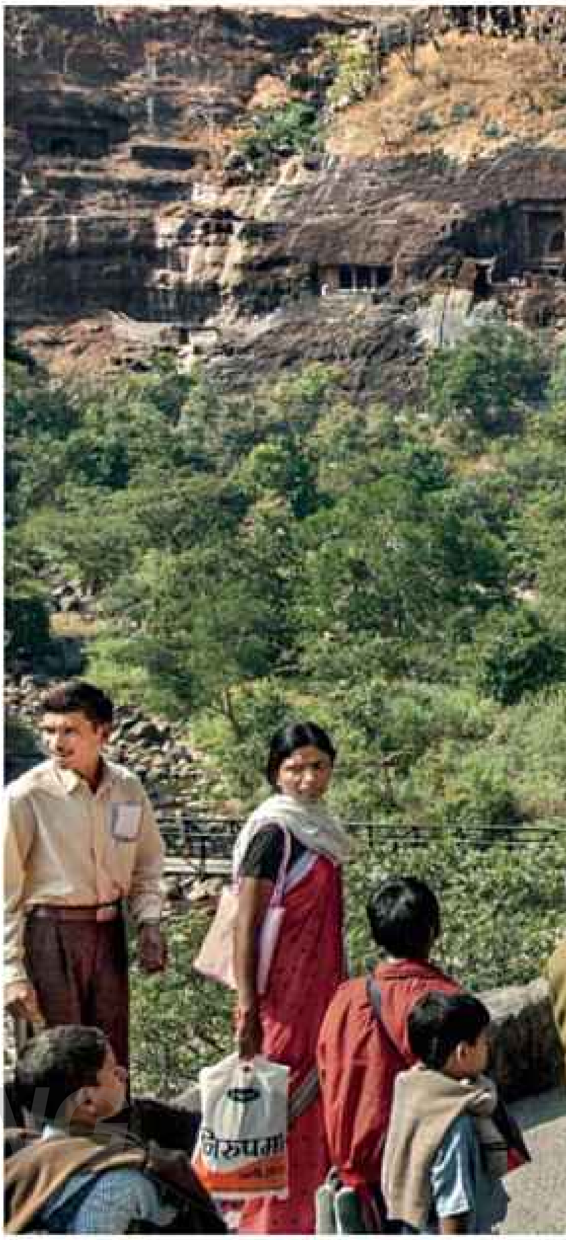

> "मनुष्य स्वर्ग में तभी सुखी रह सकता है, जब संसार में उसकी स्मृति हरी-भरी हो. (इसलिए) पहाड़ों पर स्मारक बनाया जाना चाहिए, जो तब तक कायम रहे जब तक सूरज-चांद रहे."
>
> **—भिक्षु बुद्धभद्र,**
> अजंता की गुफा 26 में शिलालेख, लगभग ईस्वी सन् 478

एक मायने में अजंता के मूल में मनुष्य की नश्वरता के खिलाफ लड़ाई ही अंकित है. 5वीं शताब्दी के बौद्ध भिक्षु के शब्दों में नष्टप्राय अतीत का डर और एक ही समय में बिना किसी विडंबना के दो दुनियाओं में शाश्वत बने रहने की आकांक्षा प्रवाहित है. महाराष्ट्र के औरंगाबाद के पास उत्तरी दक्कन के इस छोटे-से जंगली नुक्कड़ पर तकरीबन 1,500 वर्ष बाद भी वही डर अदृश्य काले बादल की तरह मंडराने लगा है. संभव है, ऐसी जगह दुनिया में और कहीं न हो. यहां वाघोरा नदी की धारा घोड़े की नाल जैसी आकृति बनाती है, जिसके चारों ओर ज्वालामुखी के लावे से बनी चट्टानों में 30 गुफाएं हैं, जो अपनी रहस्यमय श्रेणीबद्ध जटिलता और सौंदर्य से चमत्कृत कर देती हैं. मानो कोई सौंदर्यशास्त्र का ब्रह्मांड है, जो अभी भी अपने स्तूपों की डिजाइन, विकसित होती फर्श योजनाओं, महीन नक्काशी और चट्टान से मुक्त होने को तत्पर दिखते भव्य मूर्तिशिल्प, उत्कृष्ट अग्रभाग और अधूरे कक्षों के बीच बिखरे रहस्यों का खुलासा कर रहा है. इसके सुराग इसकी मंद रोशनी में छिपे हुए हैं, जो भारतीय इतिहास के बारे में हमारे विचारों को काफी बदल सकते हैं, यानी शक्ति, धर्म और कला की गतिशीलता का रहस्य, जो इसके प्राचीन युग के परदे में कैद है.

अतीत कभी न खत्म होने वाला जादुई खजाना है, जिसे हम अपने मौजूदा मानसिक और भौतिक वजूद की खातिर अनंत काल तक खंगाल सकते हैं. भारत इस गहरे कुएं से अपने राज्य-कौशल को सींच सकता है, सभ्यता की ऐसी गहराई बेहद थोड़े-से दूसरों के पास है. जी-20 की बैठक फरवरी में खजुराहो और एलोरा में हुई. आयोजन की सूची से अजंता आखिरी मौके पर हटा, वह भी हास्यास्पद गफलतों की वजह से, लेकिन यह समझना आसान है कि आखिर इसका चयन ही क्यों किया गया था, शायद हमारे लिए प्राचीन धरोहरों का इस्तेमाल कुछ झांकियां दिखाने भर का है. इन गुफाओं को लगातार याद किया जाता है और रौंदा जाता है, रह-रहकर उठने वाले जुमले की तरह-इंटरनेट का जुमला है 'प्राचीन भारत का लुवर.' इसकी दीवारों, अष्टकोणीय खंभों और छतों पर आश्चर्यजनक नजाकत और कामुकता के भित्ति-चित्र हैं जो उसके आध्यात्मिक आख्यान का विचित्र सहज विलोम प्रस्तुत करते हैं. ये चार गुफाओं में सबसे शानदार हैं. अगर झांकी कहना यूरोपीय उपमा का आलस भरी मदद लेने के पाप जैसा है, तो महान कलाकार अमृता शेर-गिल ने 1930 के दशक में ही अजंता के भित्ति-चित्रों को 'संपूर्ण पुनर्जागरण' से अधिक मूल्यवान बताकर हम सभी की ओर से प्रायश्चित किया था. मूल योजना के महज 49,500 वर्ग फुट में फैली यह चित्रकारी आज सबसे गहरे संकट में है. दिनोदिन, मिनट-दर-मिनट यह नष्ट होने की ओर बढ़ रही है, जिसे बुद्धभद्र ने शाश्वत रखने की कामना की थी.

'विरासत पर्यटन' मिलजुला मुहावरा है जिसके एक-दूसरे के विपरीत दो पहलू हैं. एक पहलू संरक्षण का है, तो दूसरा दोहन करने का है. 2008-18 के दौरान हर साल लगभग 4,00,000 पर्यटक अजंता पहुंचे, और महामारी के बाद धीरे-धीरे फिर वही चक्र शुरू होने लगा

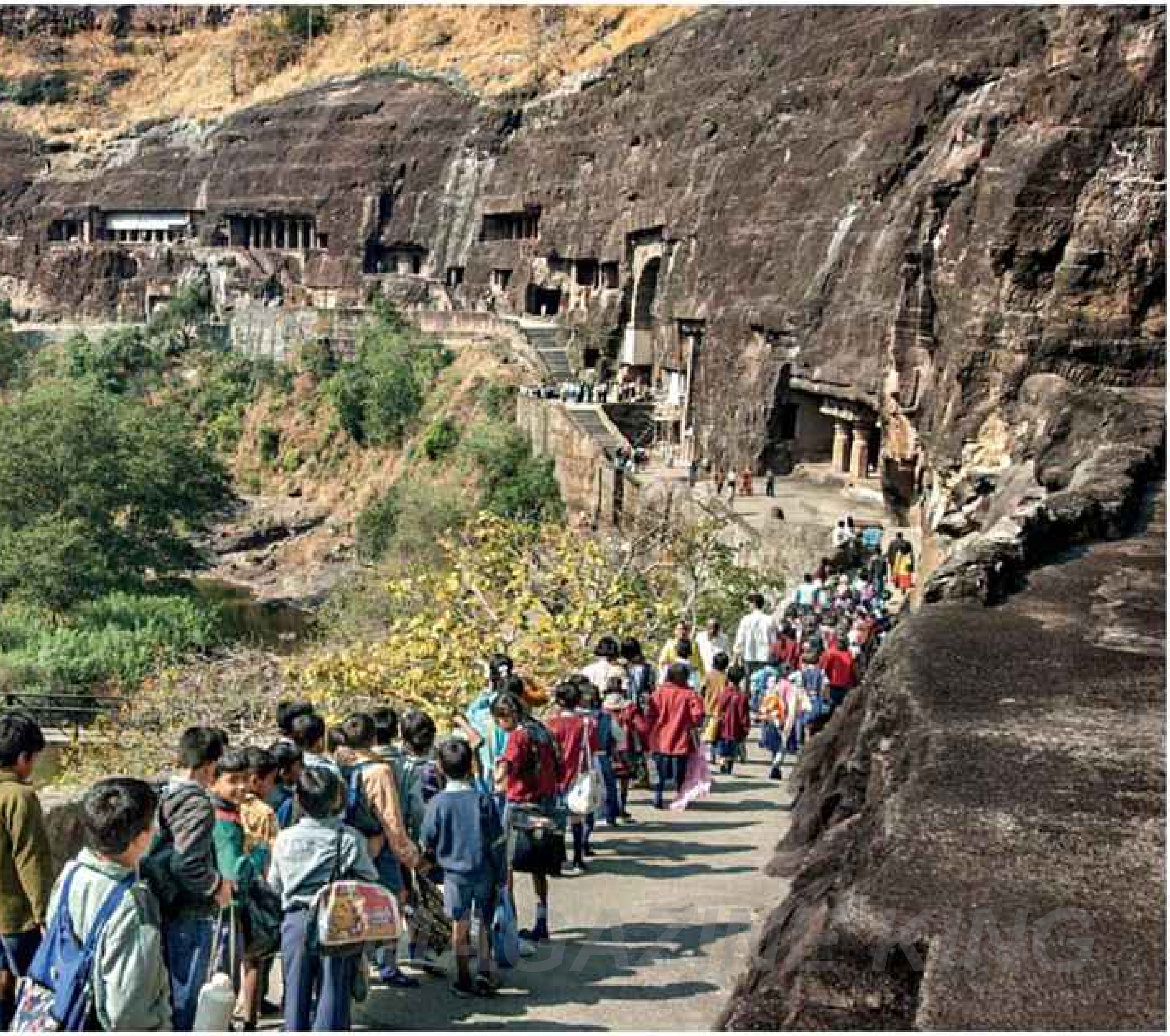

पर्यटकों की भारी आमद
हर रोज गुफाओं को देखने औसतन एक हजार पर्यटक बेरोकटोक पहुंचते हैं, लोगों के सांस लेने से निकलती अतिरिक्त आर्द्रता गुफा परिसर में भित्ति-चित्रों और मूर्तिशिल्पों के फीका पड़ने की बड़ी वजह

2008-18 के दौरान हर वर्ष तकरीबन 4,00,000 लोग अजंता दर्शन को पहुंचे. पीक सीजन में गुफाओं में एक समय में करीब सौ लोगों की भीड़ होती है, जबकि 1985 के बाद से अधिकतम 40 लोग ही होने चाहिए

है. पर्यटकों की बेहद कम आमद वाले मौसम में भी ड्राइवर राजेंद्र भोपे अपनी डीजल बस के 'टी-पॉइंट' से 10 चक्कर लगाते हैं—फरवरी में छह बसें पर्याप्त हैं. पीक सीजन में गुफाओं में हर समय सौ से अधिक लोगों की भीड़ होती है, जहां 1985 के बाद से ज्यादा से ज्यादा 40 लोग की सीमा तय है. इससे यहां के वातावरण में आर्द्रता और कार्बन डाइऑक्साइड का स्तर बढ़ जाता है. अजंता पर कई अध्ययन करने वाले नेशनल एन्वायरनमेंट इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (एनईईआरआइ-नीरी) के एक वैज्ञानिक बताते हैं, ''फिर, मानव शरीर से ऐसे गैस—वोलाटाइल ऑर्गेनिक कंपाउंड (वीओसी)—निकलते हैं, जिनका असर रंगों पर पड़ता है.'' दशकों से टंगस्टन, मर्करी और हैलोजेन बत्तियां मद्धिम आंच की तरह काम करती ही हैं. बारिश में बढ़ती अम्लता (एसिडीटी) बाहरी चट्टानों को कुरेद रही है, चट्टानों में बाल बराबर दरार से पानी रिसता है, जिसका अत्याधुनिक जियो-ट्रैकिंग से भी पता लगाना मुश्किल है. संक्षेप में कहें तो ऑर्गेनिक और इनऑर्गेनिक परिघटनाएं, धीरे-धीरे होने वाले रासायनिक परिवर्तन से सूक्ष्म कीटों की आमद बढ़ रही है (देखें, *कैसे भित्ति-चित्र हो रहे बर्बाद*). फिर, इसमें पिछली दो सदियों से मानवीय हरकतों को जोड़ लें तो मामला भयावह दिखता है. इन हरकतों में सीधे खुरचने, तोड़फोड़ करने से लेकर घोर उपेक्षा और भलमनसाहत की बेवकूफियां शामिल हैं. मूर्तिशिल्प विशेषज्ञ संजय धर से पूछा गया कि वे एक से दस के पैमाने पर तबाही को कहां आंकते हैं. वे थोड़ा ठहरे, पूछा कि क्या दस सबसे ज्यादा है. फिर, आराम से कहा, ''दस.''

संरक्षकों का सपना और दु:स्वप्न

यह तबाही फौरन नंगी आंखों से नहीं दिखती. जैसे ही आप फटाफट प्रवेश संबंधी कर्मकांडों से आगे विशेष क्षेत्र की ओर बढ़ते हैं. कुछेक मील दूर पार्किंग में, दुनियाभर के नस्लों के लोग शटल बसों, सामान वगैरह की जांच होती है. फिर भी कुछ चीजें चलती रहती हैं, जैसे पानी चट्टान में अपना रास्ता ढूंढ लेता है. पहाड़ी की लहरदार हरियाली के पार, एक सफेद बुद्ध मूर्ति, जो यहां से एक बिंदु की तरह दिखती है, गुफा 1 में धर्मचक्र मुद्रा में बैठने वाले के

भित्ति-चित्र कैसे हो रहे बर्बाद

प्राकृतिक या मानव-निर्मित गुफाओं का अपना एक खास लघु वातावरण होता है, जो उसके पर्यावरण को संचालित करता है. अजंता की दुखती रग मिट्टी का गारा, बारिश के पानी का रिसाव, आर्द्रता है, जिसमें फेरबदल होने से बड़ी मात्रा में सुक्ष्म जीव और कीट जन्म लेते हैं, उनके साथ चमगादड़ और मनुष्य की दखल भित्ति-चित्रों की तबाही ला रही है

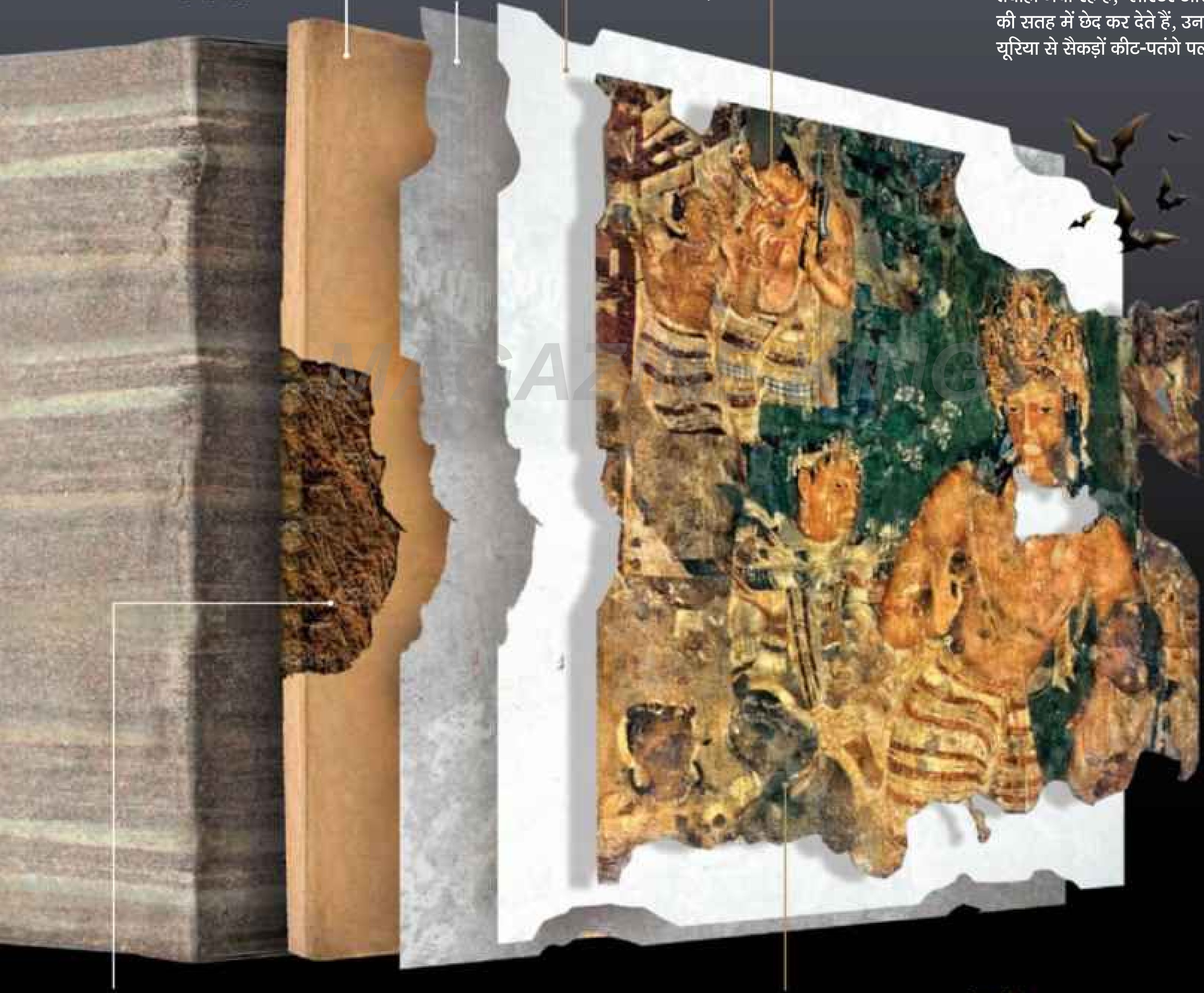

चमगादड़
सदियों से झूलते चमगादड़ आज भी तबाही मचा रहे हैं, प्लास्टर और चट्टान की सतह में छेद कर देते हैं, उनके यूरिया से सैकड़ों कीट-पतंगे पलते हैं

गारे के तत्व
लाल मिट्टी, चट्टान के चूरे और बालू के मिश्रण में 14 फीसद तक धान की भूसी मिलाकर बनाए गारे में सूक्ष्म जीवों के पनपने की वजह होती है, जिससे अजंता के भित्ति-चित्रों का 25 फीसद तक नुक्सान हुआ है. एलोरा के प्लास्टर में भांग या पटसन का इस्तेमाल है, जिससे अजीब रूप से सुक्ष्म जीवों के नुक्सान से बचाव हुआ है

पेंट फिल्म के तत्व
लाल, पीला, हरा रंग तो स्थानीय ज्वालामुखी के लावे से बनी चट्टानों से मिलते हैं, लैंपब्लैक या सूट, काओलिन मिट्टी और चूने से सफेद, अफगानिस्तान के लैपिस लाजुली से नीला. इन्हें एनिमल फैट से बने जैविक गोंद में मिलाया जाता है

रोशनी
अजंता में वर्षों से टंगस्टन, मर्करी और हैलोजेन बत्तियां जल रही हैं. फाइबरऑप्टिक्स, एलईडी कुछ कम गरम होती हैं, लेकिन सभी बत्तियां गर्मी छोड़ती हैं, जिससे भित्ति-चित्र धुंधले पड़ जाते हैं

स्रोतः एएसआइ की विज्ञान शाखा के कई अध्ययन और सीएसआइआर-नीरी के टूरिस्ट एन्वायरनमेंटल इम्पैक्ट एसेसमेंट स्टडी, 2013-14, जिसकी रिपोर्ट 2015 में सौंपी गई

सूक्ष्म जीव

नमी वाले मौसम में प्लास्टर के ऑर्गेनिक तत्व कई तरह की बैक्टीरिया, शैवाल, फंगस का भोजन और प्रजनन क्षेत्र बन जाता, ये गारे में गहरे पैठ जाते हैं और सतह में छेद कर देते हैं तथा क्षय बढ़ाने वाले एन्जाइम छोड़ते हैं

कीट-पतंगे

जैविक क्षय से प्लास्टर में हुए छेद कीटों के अंडों, लार्वा वगैरह के लिए मुफीद होते हैं. अजंता के भित्ति-चित्रों को सबसे ज्यादा नुकसान सिल्वर फिश (*लेपिस्मा सैकचारिना*) से हुआ है, जो कार्बोहाइड्रेट पर पलती हैं और प्लास्टर के भीतर रहती हैं. सिल्वर फिश वाघेरा नदी से आती हैं इसलिए रास्ते में पाइरेथ्रम (मच्छर भगाने की दवाइयों में इस्तेमाल होने वाला जहर) के छिड़काव से इनमें कमी आएगी

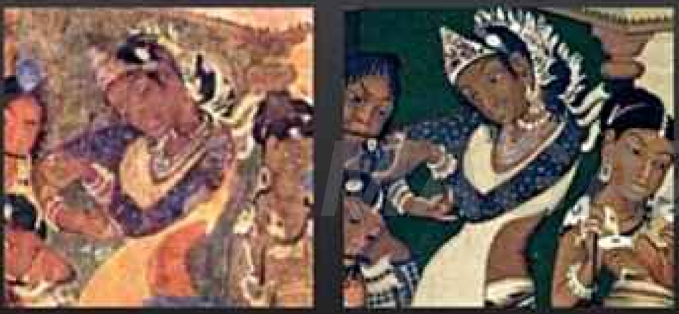

ऐतिहासिक भूलें

विक्टोरियन दौर के दो कलाकारों रॉबर्ट गिल और जॉन ग्रिफिथ ने अजंता भित्ति-चित्रों की नकल बनाने के लिए उन पर धड़ल्ले से वार्निश का इस्तेमाल किया. नामधारी इतालवी संरक्षक लोरेंजो सेकोनी ने 1920 में कोरे लाख का धड़ल्ले से इस्तेमाल किया. ये दोनों ही कालांतर में तबाही का सबब बने, सतह फट गई और रंग बदलने लगे

छोटे मौसमी संकेतक

सापेक्ष आर्द्रता

उच्च आर्द्रता सूक्ष्म जीवों के लिए मुफीद होती है. 25 डिग्री सेंटीगेड पर स्थायी आरएच वैल्यू 55-60 फीसद चित्रों के लिए आदर्श मानी जाती है. लेकिन अजंता की आर्द्रता में काफी कमी-बेशी होती है. नीरी के एक अध्ययन से पता चलता है कि पर्यटकों के सांस और शरीर की गर्मी से आर्द्रता का स्तर काफी ऊंचा हो जाता है. इसके साथ गर्मियों में मिट्टी के ईंटों में नमी पैदा होती है, जिससे दरारें पड़ जाती हैं

कार्बन डाइऑक्साइड

नीरी ने खासकर पर्यटकों की सांस से ही 836 पीपीएम जैसा उच्च स्तर दर्ज किया है. इससे सफेद रंग के कण ढीले पड़ जाते हैं

माइक्रोबॉयल लोड

आर्द्रता और गर्मी के असर से सूक्ष्म जीवों का स्तर बढ़ जाता है. नतीजतन, भित्ति-चित्रों में क्षय होता है

ग्राफिक: तन्मय चक्रवर्ती

साथ संवाद करती है. उस बस में तिब्बती तीर्थयात्रियों को शायद यह पता न हो, लेकिन आंबेडकरवादी अनुयायियों का एक देसी मठ है, जो उन पहाड़ियों पर स्थित है. वे उसे धम्मचल कहते हैं.

कुछ नष्ट हो रहा है. सीढ़ियों की पहली चढ़ाई के ऊपर, एक रास्ता कटता है, जो नदी के दूसरी तरफ लंबी दूरी तय करके ले जाता है. उससे समूचे परिदृश्य की एक मध्यम छटा दिखती है, एक फ्रेम में उसकी भव्यता और निखरती है. वहीं से चैत्य पोर्टिको वाली चट्टानें दिखती हैं. यह ऊपर से दिखने वाले उस बहुचर्चित दृश्य की कुछ भरपाई जैसी है, जिसे पहले अंग्रेज ने इसे देखा था. यहां बुलबुल, चिड़ियों की चहचहाहट के बीच दोस्ताना स्वभाव के स्थानीय लोग बुद्ध की जैसी-तैसी मूर्तियां बेचते मिलते हैं. कोई एक कंटीली झाड़ियों के बीच बिछी ईंटों की ओर इशारा करता है. यह मलबा नहीं है...किसी खास ढंग में बिछाया गया है, ये सामान्य से बड़े हैं. फिर, हैरान करने वाली खबर मिलती है—यह एक प्राचीन पक्के-ईंटों का मठ है, शायद कभी लकड़ी पर नक्काशी वाले ढांचों के नीचे हुआ करता था. यह अजंता से प्राचीन है? हम नहीं जानते. 2002 में एक खुदाई में पूर्वी रोमन साम्राज्य बाइजेंटाइन या सम्राट थियोडोसियस द्वितीय का सिक्का मिला था. फिर, उसे उपेक्षित, बेसहारा छोड़ दिया गया. यह जमीन वन विभाग की है. पीडब्ल्यूडी ने *उन्हीं* ईंटों के बीच से अपना रास्ता बना दिया है, जो कार्बन डेटिंग के लिए कराह रही हैं.

दूसरी तरफ, इधर से पुल के पार, मिनट भर चलने पर दुनिया की आंखों का वह तारा स्थित है.

यूनेस्को की 1983 की विश्व धरोहर सूची में शामिल पहले चार भारतीय स्थलों में यह एक है. इसके अलावा ताज महल, इसकी सहोदरा एलोरा वगैरह हैं. इससे इसे आम बौद्ध गुफाओं की तुलना में कहीं अधिक अंतरराष्ट्रीय और स्थानीय ख्याति हासिल है. असमानताएं बहुत हैं, लेकिन आकर्षण एकदम स्वाभाविक ही है. अजंता आपको मुग्ध कर देती है—अपनी खूबसूरती से, बेहद जटिल आकृतियों और बनावट से, आपकी आंखें यह समझ ही नहीं पातीं कि कहां टिकना है, किस संवेदना, भावना पर जोर देना है, किस एहसास को अपने भीतर भर लेना है. तराशे गए रॉक स्तूप के संयम को? या जातक रंग, परिधान, त्वचा के रंग, बुद्ध की निर्मल आंखों, मिथुनरत जोड़ों, रथ पर सवार राजाओं और यक्षों को, जिनकी रहस्यमय कहानियां आप तक इतिहास की धुंधली रेखाओं के जरिए पहुंचती हैं. जीवन के इस उत्सव को चित्रित करने वाले ये लोग कौन थे? आपने अस्पष्ट-से नाम पढ़े हैं—एक तो मूलसर्वास्तिवादी संप्रदाय... इतिहासकारों की कलम अब भी बीच हवा में लटकी हुई है.

हर हाल में, यह आज कुछ दशक पहले के मुकाबले कई अहम मामलों में बेहतर स्थिति में है. एक तो यही कि इकलौते प्रहरी के नाते भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआइ) के कुछ बहादुर और जुनूनी लोगों की छोटी-सी टोली ने हिमालय जैसी बाधाओं के बीच अपने मठवासी पूर्वजों के भक्ति-भाव के साथ चट्टानों और रंग-रोगन पर श्रमसाध्य काम किया. इस तरह अतीत के पापों को धोने और वर्तमान के खतरों से बचाव की कोशिश की. संरक्षण के रासायन विज्ञान के अनोखे विशेषज्ञ

MAGZINE KING

मैनेजर राजदेव सिंह जैसे लोगों ने दशक भर की श्रमसाध्य कवायद से 2,200 साल पुरानी कलाकृतियों की मानो ओपन हार्ट सर्जरी को अंजाम दिया. या अनजान-से पैदल सिपाहियों में एक मिलन चौले हैं, जिनका औरंगाबाद सर्कल के अधीक्षण पुरातत्वविद् के रूप में कार्यकाल इस जनवरी में नई दिल्ली से एक फोन कॉल के साथ अचानक समाप्त हो गया था. जब उन्होंने बीबी का मकबरा को अतिक्रमण से मुक्त कराया, तो उनकी खूब वाहवाही हुई, लेकिन जब उन्होंने वही नियम जैनियों पर लागू किया तो सूली पर लटका दिया गया, जिन्होंने एलोरा के पिछवाड़े तीन गुफाओं पर कब्जा कर लिया है. या कंबोडिया में ता प्रोह्म वृक्ष मंदिर जीर्णोद्धार टीम का हिस्सा रहे एकांतप्रिय डी.एस. दानवे हैं, जिन्हें हर तारीख, हर बल्ब को बदलना याद है. एएसआइ में गहरी खामियां हैं. मसलन, संकीर्ण नजरिया, और अफरा-तफरी वाला सुस्त सरकारी माहौल, खासकर ऊपरी हलके में जहां सरकारी दखल है (1993 से इसके 13 में से ज्यादातर प्रमुख नौकरशाह ही रहे हैं). लेकिन उसकी बुनियाद में खुद जाना-सीखा ज्ञान और कार्यपद्धति का विशाल खजाना भी है. अजंता-एलोरा का संसार विनोदी किस्म के वास्तुशिल्प का एहसास कराता है—अलौकिक प्रयास की बानगी देखिए, ढांचों के तल में उकेरी गई लघु आकृतियां मानो हांफते हुए और अजीब तरह से धनुषाकार झुककर अपने ऊपर टनों बोझ उठाए हुए हैं. शायद वे मौके पर मौजूद आधुनिक पुरातत्वविदों की प्रतिबिंब हो सकती हैं.

यूनेस्को के निर्देशन में 1990 की शुरुआत में एक जापानी-वित्त पोषित पहल से अजंता के जीर्णोद्धार की प्रक्रियाओं की एक श्रृंखला शुरू की गई. ऑप्टिक फाइबर से चार भित्ति-चित्र समृद्ध गुफाओं को रोशन किया गया; छत के साथ नए जल प्रवाह चैनलों से भारी बारिश के पानी के रिसाव को दूर करने में मदद मिली, अंदर भित्ति-चित्रों को नुक्सान पहुंचाने वाला रिसाव रोका गया और बाहर बोल्डर खिसकने का खतरा कम किया गया; 2014 तक भित्ति-चित्रों के चारों ओर बैरिकेड आ गए; दो सेतुमार्ग और एक पुल पर्यटकों को 850 मीटर की दूरी में बिखेर देता है और आप नदी के आर-पार टहलने के शौकीन हों तो कुछ और दूर जा सकते हैं. नजदीकी हवाई अड्डे पर उड़ान के डैने कुछ और खुल गए. कभी जिन प्राचीन सड़कों पर गांधार, अमरावती, उज्जैन और समुद्र तट से काफिले चला करते थे, उन पर मैकडैम का नया कोट चढ़ गया. कुछ समय के लिए तो ऐसा लगा कि अजंता की प्राचीन दुनिया आकर्षक आधुनिकता से ओत-प्रोत हो जाएगी. लेकिन भारत को अपनी शैली में लौटने में ज्यादा देर नहीं लगती. वही सुस्ती, संकीर्णता और संस्थागत हठ की परत गर्मी में उड़ती धूल की तरह हर नई पहल पर आ जमती है.

पहले अजंता के भित्ति-चित्रों को बचाने के लिए विशेषज्ञों ने भले कई तरह के संरक्षण के उपाय अपनाए, मगर सरकारी लेट-लतीफी और उपेक्षा ने भारी नुक्सान पहुंचाया

भित्ति-चित्रों पर हर बातचीत में आखिरकार एक अव्यक्त आशंका हावी हो जाती है, मानो हर कोई उसके अंत या कम से कम उसकी संभावना भांप पा रहा है. सामान्य कामकाज की गहमागहमी के बीच सबसे चमकदार पाठ भी मानो अपने कोनों में दबी हुई चेतावनी से अंधियारा लगने लगता है. यहां वह पुराना मुहावरा—मन का आशावाद, बुद्धि का निराशावाद—खूब फिट

अजंता को क्यों बचाएं?

किसी भी हब के बारे में सारे सवालों के जवाब एक जगह पर ही आकर मिल पाते हैं, और वह है केंद्रीय गतिविधि स्थल के नाते उसकी अहमियत. आप अजंता को कला, राजनैतिक इतिहास या धर्म किसी भी नजरिए से देखिएः प्रतीकात्मक या ठोस किसी भी रूप में उसका कोई विकल्प नहीं मिलेगा, इसमें जितना कुछ खुले तौर पर दिखता है, उससे कहीं ज्यादा रहस्यमय भी बना हुआ है. संरक्षक संजय धर इससे रू-ब-रू कराने की शुरुआत करते हैं. वे कहते हैं, ''यही वह जगह है जो सभी एशियाई कलाओं की जननी है.'' जरा सोचिए, हमारे उपमहाद्वीप में सत्ता के इतिहास और उसके धर्म में अजंता की केंद्रीयता क्यों नजर आती है. दरअसल, यह प्रतीकचिह्नों का एक ऐसा खजाना है, जो हमें विरासत में मिला है.

शुरुआत कला से करते हैं. हम श्रीलंका में सिगिरिया से लेकर चीन में सिल्क रूट के आखिरी छोर पर स्थित मोगाओ गुफाओं, जापान के सात महान मंदिरों में से एक होरीयुजी तक के कारवां में एक बेहद अहम केंद्र बने अजंता के निशानों को साफ देख सकते हैं. धर कहते हैं, ''पूरा एशिया ही इस एक जगह का कर्जदार है.'' हालांकि, इसके लिए जनक होना आवश्यक नहीं है. हम नहीं जानते कि अजंता भारत में पहली बौद्ध चित्रित कला की निशानी है, या फिर इस तरह की एकमात्र जगह है. लेकिन यह ऐसी एकमात्र जगह लगती जरूर है. शैलीगत और विषयगत

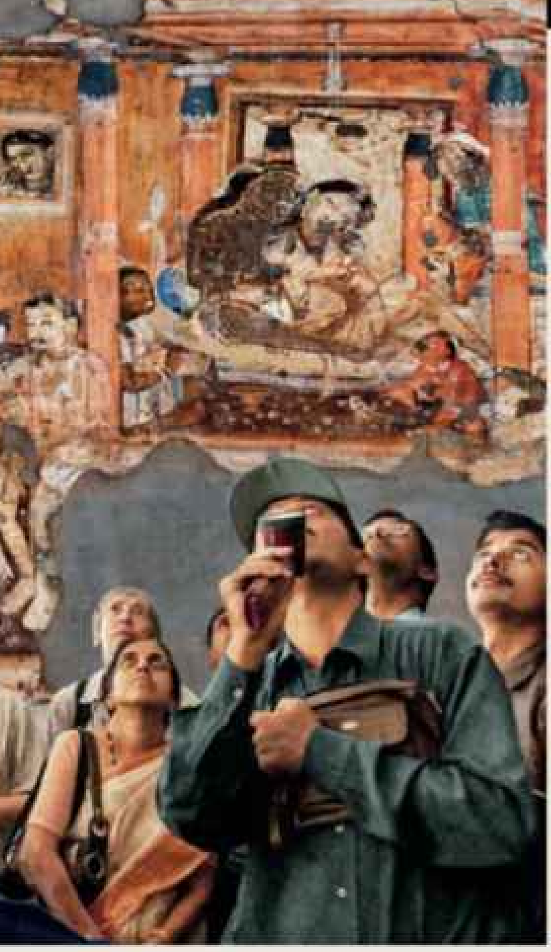

मौलिकता की झलक
गुफा 17 के बाहर प्राकृतिक रोशनी वाले वरामदे में एक भित्ति-चित्र

आधार पर अगर इसके अपने ही दो चरणों की प्राचीन कला के अन्य केंद्रों—मथुरा, गांधार, नागार्जुनकोंडा—और पश्चिमी भारत की रॉक-कट गुफाओं के पारिस्थितिकी तंत्र के साथ तुलना की जाए तो आधुनिक शोध में एक बेहद आकर्षक जातक स्वरूप सामने आता है. भौगोलिक रूप से देखें तो अजंता प्राचीन व्यापारिक मार्गों उत्तरपथ और दक्षिणपथ के चौराहे पर स्थित है. इन सभी बातों को एक रूपक के तौर पर समझें. एक सहस्राब्दी तक आकार लेती रही यह कला दूर-दूर तक फैले एक महाद्वीप, एक बेहद ऊर्जस्वी सौंदर्यशास्त्र और पूरे प्राचीन भारत के बीच एक सेतु की तरह है.

> **अजंता की गुफाएं अस्तित्व और प्रतीक के रूप में अनोखी हैं. ये प्राचीन एशियाई कला की जननी हैं**

धर्म की बात करें तो आप भारत में अपने विकास के दो भिन्न चरणों में बौद्ध धर्म के निशान देखेंगे, शुरुआती समय के सादा-सरल, मूर्तिविहीन स्तूप, जिसमें बुद्ध को सीधे तौर पर चित्रित नहीं किया गया है, और फिर सात शताब्दी बाद उनके पूर्ण साकार मानव स्वरूप में, बोधिसत्व जैसे महायान कुल के समांतर देवताओं के साथ. अजंता में अंतर्मन छू लेने वाले कठिन ध्रुपद से लेकर विपुल खयाल तक, सबका अनुभव एक जगह पर ही होता है. एलोरा के ताने-बाने के साथ यहां हिंदू धर्म के आकृति विज्ञान का जादू भी दिखता है, जैसे कोई फोटोग्राफिक निगेटिव हो.

आइए, अब दो महत्वपूर्ण तत्वों पर विचार करें. पहला है वास्तुशिल्प—गुफा. भीमबेटका और हजारों अन्य स्थलों पर 'प्रागैतिहासिक आध्यात्मिकता' की अभिव्यक्तियों के समय से ही गुफाओं या कंदराओं की खास अहमियत रही है, इसमें एक पवित्रता अंतर्निहित मानी जाती है. यह थोड़ी अजीब बात है कि बौद्ध गुफाएं फिर बनाई गईं. दो सदी से जारी बहस का हिस्सा बने रघु राय के अंदर का कलाकार बेहद सहजता से इसका जवाब देता है. जाने-माने फोटोग्राफर राय कहते हैं, ''अजंता की अधिकांश फोटोग्राफी फ्लैट, द्विआयामी, डॉक्यूमेंट्री विजुअल वाली रही है. मैं एक गुफा के अंदर होने के अनुभव को रिक्रिएट करना चाहता था.'' अगर थोड़ा अलग नजरिए से देखें तो हिंदू धर्म से जुड़े माने जाने वाले एलोरा में गर्भगृह—यानी हिंदू मंदिरों का आंतरिक स्थल, दरअसल एक गुफा के अलावा और कुछ नहीं है, जिसे ब्रह्मांडीय गर्भगृह के तौर पर दर्शाया गया है.

अगली चीज है ऑप्टिकल गेम—जरा ठहरकर स्तूप की आकृति पर नजर डालें, और लिंगम को देखें...एक दिव्य अनुभव सिहरन पैदा करता है! वे आइसोमॉर्फिक हैं, एक समान आकार वाले. फिर एक जेनेटिक ट्रांसफर? शिव के शास्त्रीय शैववाद में आकार लेने की कल्पना करें, पूरी दुनिया से विरत एक तपस्वी, या विशुद्ध चेतना... वे बुद्ध अधिक लगते हैं. अब लगभग एक-समान स्कल्पचर क्लस्टर को ही ले लें—बुद्ध देवदूत नागों, और शिव के चिरपरिचित गणों से घिरे हैं. अमरता पर अजंता की परिकल्पना इस तरह की है, मानो यह भी संक्रमणकाल का कोई एक क्षण हो.

कला जहां विश्व के दो प्रमुख धर्मों के महत्वपूर्ण सूत्रों को जोड़ती है, वहीं एक तीसरा सूत्र भी इसी में समाया है, वह है राजनैतिक इतिहास. यहां, फिर, अजंता प्राचीन और मध्यकाल, जिसकी परंपरागत शुरुआत 500 ईस्वी से मानी जाती है, के बीच एक कड़ी है. 480 ईस्वी के आसपास साइट को ऐसे क्यों छोड़ दिया गया? बहरहाल, हम उस तारीख तक कैसे पहुंचे? इसका जवाब, पहली बार 1953 में और अंतिम बार 2019 में अजंता आए मिशिगन के इतिहासकार वाल्टर स्पिंक के दशकों तक चले शोध में छिपा है. उन्होंने एक विद्वान के तौर पर अपना पूरा जीवन बेहद गहराई से शोध करने में गुजारा और छोटी-छोटी कड़ियों को जोड़कर एक वृहद तस्वीर सामने रखी. उनका 'संक्षिप्त कालक्रम' बताता है कि अजंता में बाद के पूरे चरण—25 या उससे अधिक गुफाओं, और उनके भित्ति-चित्रों—का रचनाकाल सदियों में नहीं, बल्कि सिर्फ 460 से 480 ईस्वी के बीच सिमटा हुआ है. वैसे तो इस पूरे पुनरुत्थान को दो दशकों में ही सिमटे होने का विचार विवादास्पद रहा है लेकिन दुनियाभर के अधिकांश विद्वानों ने अनमने ढंग से ही सही, इसे स्वीकार किया है. स्पिंक ने भारतीय इतिहास एक राजवंश के इर्द-गिर्द केंद्रित होने का दावा भी किया, जबकि तमाम आम लोगों ने तो इस वाकाटक राजवंश का नाम भी नहीं सुना होगा. उन्होंने लिखा है कि हरिसेना, जिनके संरक्षण में ही अजंता की गुफाओं ने आकार लिया, ''उस समय भारत ही नहीं, संभवतः पूरी दुनिया में सबसे महान राजा थे'' और यह भी कि ''गुप्तकाल में नहीं, बल्कि वाकाटक शासन के दौरान ही भारत का स्वर्ण युग अपने चरम पर पहुंचा था.''

एक उल्लेखनीय दावे पर स्वीकृत इतिहास में खासे संशोधन की जरूरत है. रोमिला थापर की शोधपरक किताब *अर्ली इंडिया* (2002) में अजंता के संरक्षक राजवंश का जिक्र पृष्ठ 228 पर कुछ इस तरह के वाक्य के साथ आता है, ''वाकाटक उत्तरी दक्कन पर राज किया करते थे.'' स्पिंक के विपरीत इसमें हरिसेना का उल्लेख तक नहीं है. सारे इतिहासकार अजंता के एक शिलालेख पर आधारित उनके इस दावे का समर्थन नहीं करते कि हरिसेना ने भारत के एक तट से दूसरे तट तक अपना राज स्थापित किया था, लेकिन जैसा हम कहते-सुनते आए हैं, वाकाटक को केंद्र में रखकर हंस टी. बक्कर जैसे लोग एक नए और अधिक विस्तृत इतिहास का खाका तैयार कर रहे हैं.

और आखिर में, बौद्ध रॉक-कट गुफाओं की इनसाइक्लोपीडिया पर काम कर रहे राजेश कुमार सिंह अजंता की पहेलियों से जुड़ी एक अन्य आकर्षक थीसिस सामने रखते हैं—उसमें नाटकीय बदलाव लेकर आते हैं. उनका निष्कर्ष कहता है, डिजाइन के विकास से जुड़े साक्ष्य बताते हैं कि अजंता में तीर्थ वास्तुकला की पूरी रूपरेखा अपने दूसरे चरण के बीच अचानक बैक्ट्रिया और गांधार के कलाकारों के आ जाने की वजह से बदल गई थी, जो हुनिक युद्धों से भागकर आए थे. इसमें केवल गूढ़ बौद्ध कला नहीं है, हमें इसके बीच में कुछ अनदेखे गांधार शिलालेखों के साथ हिंदू गर्भगृह का आकार लेना स्पष्ट दिखता है. कुछ अन्य लोगों की नजर में अजंता की दीवारों पर उकेरे गए भित्ति-चित्रों की सफाई स्पष्ट तौर पर 'विदेशियों' के शामिल होने को दर्शाती है. वे कौन थे? क्या वास्तव में उस भित्ति-चित्र में 'फारसी दूतावास' था? स्वात में चांदी के कटोरे पर अंकित एक पक्षी गुफा-1 की छत के पैनल पर बने पक्षी की तरह क्यों दिखता है? इस तरह के तमाम सवालों का जवाब अबूझ पहेलियों में छिपा है, जिनके सुलझने का इंतजार किया जा रहा है.

बैठता है. मानो संरक्षण की यह बहादुराना लड़ाई सिर्फ होनी को कुछ देर टालने भर की है—जैसे जानलेवा बीमारियों से पीड़ित परिवार के बुजुर्ग के आसपास सब सामान्य होने का भाव दिखाया जाता है. कुछ अपनी डरावनी अशंकाओं को साफ-साफ जाहिर कर देते हैं. तीन दशकों से अजंता का रहस्य सुलझाने को अपने जीवन का लक्ष्य बनाकर उसमें जुटे स्वतंत्र विद्वान-लेखक राजेश कुमार सिंह उदास हैं, ''मुझे यकीन हो चला है कि ये भित्ति-चित्र 50 साल बाद हमारे साथ नहीं होंगे.'' वैज्ञानिक जवाब देने से बचते हैं. 2010 में अजंता स्थल प्रबंधन योजना तैयार करने वाली टीम की अगुआ वास्तुकार-संरक्षक आभा नारायण लांबा मुस्कराते हुए मजाकिया लहजे में यह कहकर टाल देती हैं, ''आपको दिल्ली के तुगलक स्मारकों पर स्टोरी करनी चाहिए, अजंता दरअसल हमारी सबसे बेहतर प्रबंधन वाले स्थलों में एक है!'' फिर कुछ कहने को तैयार होती हैं, मगर उसमें बहुत कुछ अनकहा छोड़ देती हैं, ''अजंता के मुद्दे उस स्थल से जुड़े स्थानीय हैं.'' यूनेस्को की तिब्बत और लद्दाख में पुराने बौद्ध थांगका और भित्ति-चित्रों की पुनरुद्धार परियोजनाओं पर वर्षों बिताने वाले धर कहते हैं, ''खतरा चित्रों तक सीमित नहीं है.'' वे अपने विश्लेषण में ''प्रबंधन पर्यावरण'' को जोड़ते हैं, खासकर गैर-जानकार, अनगढ़ संरक्षण उपायों को.

कोई गलत नहीं है. लेकिन ये मसले हैं क्या? एलोरा में कैलाशनाथ के उस्ताद वास्तुकार ऊपर से नीचे की ओर गए और ऐसे खोदा कि वह आश्चर्यजनक स्मारक एक ही टनों भारी ठंडी, लेटी चट्टान का हिस्सा है. इसके उलट अजंता में हमें सबूतों को लेकर नीचे से ऊपर जाना है. यहां की भित्ति-चित्रों की प्रकृति और स्थिति को समझने के लिए इस सबूत को साथ रखकर देखना होगा, क्योंकि यह आधुनिक संरक्षकों को भ्रमित करता है, तो एक अहम मामला माइक्रोस्कोपिक है. दूसरा मामला मनुष्य की उमंग...और हिंसा, जाने या अनजाने, के इतिहास का है.

अजंताः टूटा-फूटा जातक

कला का पहला नमूना उसी हाथ ने गढ़ा जो अब सबसे बड़ा खतरा पैदा कर रहा है—यानी प्रकृति. लगभग 6.6 करोड़ वर्ष पहले, विशाल ज्वालामुखीय विस्फोटों के लावा से दक्कन ट्रैप का निर्माण हुआ, जो ठंडा होकर बसॉल्ट चट्टान बना—यह वही चट्टान है जो चंद्रमा में अंधेरी छाया, लुनर मारिया बनाती है. सहस्राब्दियों के अंतराल में वाघोरा नदी ने उसे यू-आकार के कंठ में बदला, जो हाथी की पीठ जैसे बौद्ध तीर्थस्थल का अभास देता है. ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी के आखिरी वर्षों में, सातवाहन काल के दौरान पहले मानव मूर्तिकारों ने खुदाई शुरू की—चट्टान कठोर थी लेकिन हथौड़े और छेनी से आसानी से कट रही थी.

तब तीसेक में से छह गुफाएं खोदी गईं—गुफा 9 और 10, खनिज रंगों के आकर्षक मेल से बौद्ध चित्रपट तैयार हो गए—जिसमें बुद्ध नहीं थे, जैसा कि उन पूर्व-महायान दिनों में चलन था. मैनेजर सिंह ने *इंडिया टुडे* को बताया, ''पूजा में इस्तेमाल होने वाले तेल के दीयों से कालिख की परतें जम जातीं. लेकिन चूने के प्लास्टर के बेस पर रंग चढ़ाए गए थे इसलिए क्षतिग्रस्त नहीं है.'' अगली गतिविधि सात सदियों के लंबे ठहराव के बाद शुरू हुई, जब अजंता अपने पूर्ण आकार में प्रस्फुटित हुई. इस बार, प्लास्टर या गारे में सुधार किया गया. वाघोरा नदी की मिट्टी में लाल मिट्टी, सिलिकेट युक्त रेत और धान की भूसी का मिश्रण बनाया गया. फिर चूने के पानी की एक परत चढ़ाई गई. फिर उस पर चर्बी डाली गई, जो गोंद का काम करे. फिर, चमकीले रंगों में जैसे अपने दिल को उड़ेल दिया गया, ठीक जैसे मौन को तोड़कर भाषा फूट पड़ती है. मैनेजर सिंह कहते हैं, मूल प्रिय रंग, पुरा-पाषाणकालीन भीमबेटका तक सभी तरह से एक ही रहा था—लाल गेरू, पीला गेरू, हरे रंग के लिए टेरावर्ट—लैम्पब्लैक के साथ, चूने से तीन तरह के सफेद, काओलिन मिट्टी और सहज रूप से दिखने वाला अफगानिस्तान से लैपिस लाजुली भी जुड़ा (''पहले के चित्रों में नीला रंग बिल्कुल नहीं है''). शाश्वत सौंदर्य का आह्वान करने वाले कैनवास की रचना के संदर्भ में यह संपूर्ण जैविक प्लास्टर तकनीक के क्षेत्र में लंबी छलांग जैसा था. मैनेजर सिंह कहते हैं, ''रंग पक्के हैं.'' लेकिन सौंदर्य की इस खोज में, 5वीं शताब्दी के भित्ति-चित्रों में अनजाने ही उनकी दीर्घायु को बलिदान कर दिया गया. आखिर, जैविक का अर्थ है क्षय.

एएसआइ की अपनी खामियां हैं, चाहे लेट-लतीफी हो या बाबूशाही. अजंता को बचाने की समन्वित और समग्र योजना के अभाव से समस्या और गंभीर ही होती गई है

उजाले का कहर

ये गुफाएं ऐसे बनाई गई हैं ताकि इनमें सिर्फ मद्धिम सूरज की रोशनी ही पहुंचे, रोशनी के लिए लगाई गई बत्तियों से गर्मी होती है, जिससे वर्षों के अंतराल में चित्रों के रंग फीके पड़ जाते हैं

ईस्वी 480 के आसपास अजंता को अचानक और रहस्यमय ढंग से उपेक्षित छोड़ दिए जाने के लंबे दौर में संस्कृति पर प्रकृति भारी पड़ गई. यह दौर 7वीं शताब्दी में ह्वेन त्सांग के इस बारे में बात करने के कुछ समय बाद शुरू हुआ. उस उपेक्षा के दौर में सूक्ष्म जीवों और कीट-पतंगों को समृद्ध कार्बनिक प्लास्टर में पनपने का खूब मौका मिला. खासकर सिल्वर फिश छेद कर देती हैं और प्लास्टर में वनस्पति मूल के सेलूलोज फाइबर और पशु प्रोटीन पर दावत उड़ाती हैं. फिर, प्लास्टर के अंदर उनकी खुद की अनदेखी सामूहिक कब्र ने दूसरों के लिए अंतहीन भोज की व्यवस्था की. मैनेजर सिंह कहते हैं, ''एक सहस्राब्दी में उन्होंने अजंता के भित्ति चित्रों के एक-चौथाई हिस्से को नष्ट कर दिया.'' ये अब भी ऐसा कर रहे हैं, जैसा कि 2021 में फ्यूमिगेशन से पता चला. नीरी के अध्ययन में पाया गया कि माइक्रोकलाइमेट कीट लार्वा, प्यूपा और बैक्टीरिया, शैवाल, कवक, कीड़ों-मकोड़ों वगैरह के लिए मुफीद है. उपेक्षा की उन शताब्दियों के दौरान रात में सिल्वर फिश बाहर निकलती, उन कीड़ों की एक पूरी शृंखला होती जो बदले में गुफाओं में राज करने वाले चमगादड़ों का भोजन बनती. अब उनके लिए दरवाजे बंद कर दिए गए हैं, लेकिन धीरे-धीरे सड़ने वाले यूरिया के साथ एक सहस्राब्दी के चमगादड़ों के अम्लीय मलमूत्र का जमाव अभी भी अपना काम कर रहा है. ये डरावने जीव, कीड़ों की दुनिया के अनजान अजूबे, असंख्य दरारों से टपकता बारिश का पानी, गुफा 10 के सामने गिरा एक शिलाखंड, अंदर तीन फुट तक पसरी गीली घास, यानी एक मायने में जंगल दरवाजे पर खड़ा था. कुछ ऐसा ही हाल था अजंता का, जब 28 अप्रैल, 1819 को पहला यूरोपीय शख्स वहां पहुंचा था. शायद वह बाघ के शिकार के दौरान एक स्थानीय भील की अगुआई में वहां पहुंचा और इसमें कोई संदेह नहीं कि उसे वैसा ही एहसास हुआ था, जैसे *टेंपल ऑफ डूम* में इंडियाना जोन्स को हुआ था. फिर, वह उसी तोड़फोड़ को आगे बढ़ा गया जैसे बाकी लोगों ने भित्ति-चित्रों को बर्बाद करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी. गुफा 10 के बाहर एक खंभे पर बुद्ध की बेरंग होती मूर्ति की छाती पर उसने चाकू से गोद दिया, जो अजंता के शिलालेखों की एएसआइ सूची में 'अतिक्रमण'; 'जॉन स्मिथ, 28वीं कैवलरी' के रूप में दर्ज है.

भलमनसाहत का बुरा नतीजा

औपनिवेशिक युग के हस्तक्षेपों पर नाराजगी जताना आसान है—उनके झुंड की डकैती के तरीके, शुरुआत में अजंता के भित्ति-चित्रों को 'बर्बर' कहा जाना और, सबसे बढ़कर, प्रतिकूल नजरिए वालों की पुनरुद्धार के आदिम तौर-तरीके वगैरह. ट्रॉफी के शिकारियों ने भित्ति-चित्रों को काटा-पीटा. ब्राह्मी लिपि को डिकोड करने वाले जेम्स प्रिंसेप ने 1836 में लिखा कि एक डॉ. जेम्स बर्ड ने ''विरोध के बावजूद चार चित्रों को उखाड़ने की कोशिश की.'' लूट के उन दिनों का एक, गुफा 16 से *कनवर्जन ऑफ नंदा* का 14×10 इंच का टुकड़ा बोस्टन म्यूजियम ऑफ फाइन आर्ट्स में है.

लेकिन दूसरा पहलू भी था. 1880 में प्रकाशित बर्गेस और फर्ग्यूसन का भारत की रॉक-कट गुफाओं का संपूर्ण अध्ययन व्यवस्थित रूप से एक भूले-बिसरे सौंदर्य ब्रह्मांड को सामने लाता है, जो आज भी इस विषय पर ओल्ड टेस्टामेंट की तरह है. इसकी अनिश्चितता की आशंका भी शुरुआत से ही घर करने लगी थी. मेजर रॉबर्ट गिल ने तीन दशक ''ऐडजुंटा में'' बिताए, प्रत्येक भित्ति-चित्र की श्रमसाध्य नकल तैयार की (जो लंदन की आग में खाक हो गई). कला पारखी जॉन ग्रिफिथ्स ने 1872 में फिर नकल तैयार की (उनकी 125 में से अधिकांश प्रतियां 1885 में विक्टोरिया और अल्बर्ट संग्रहालय की आग में भस्म हो गईं). दोनों ने अपने तात्कालिकता के चक्कर में भित्ति-चित्रों पर वार्निश लगाई. यह विनाशकारी साबित हुई. 1884 तक रंग उधड़ने लगे. जापानी कलाकार कम्पो अरई की भी 1917 की प्रतियां आग के हवाले हो गईं. उन्होंने कहा कि वार्निश ने सतह को ''चिकना, बदसूरत'' बना दिया और ''चित्रों का रंग बदल दिया था.'' प्रकृति के कीट-पतंगों की टोली वहां मौजूद थी. महिला मताधिकार की पैरोकार लेडी क्रिस्टियाना हेरिंगहैम 1909-11 में तीन यात्राओं के दौरान भित्ति-चित्रों की नकल करने के लिए एड्वर्डियन इंग्लैंड के पोम्पाडोर और खूबसूरत टोपियों को पीछे छोड़ आई थीं. उनके पति ने झल्लाकर लिखा, ''गहरे कोनों में रॉक कॉर्निस के बीच आवाज करते चमगादड़ ...'' वे सभी घंटों मचान पर छत की ओर मुंह किए लेटे रहे, ताकि 5वीं शताब्दी की चित्रकारी की बारीक नकल निकाली जा सके, जबकि नीचे तेंदुए और भालू मंडरा रहे थे.

फिर हैदराबाद के निजाम आए, जिनके राज में अजंता पड़ता था. उनके मशहूर पुरातत्वविद् गुलाम यजदानी ने 1930 तक पहली आधुनिक फोटोग्राफिक रंगीन और मोनोक्रोम प्रतिकृतियां बनाईं. उसी के आसपास, आधुनिक भारतीय कला अजंता में गहराई से रुचि ले रही थी. यूरोपीय आधुनिकतावाद से दूर बंगाल स्कूल का प्रसिद्ध 'इंडियन टर्न' खिल रहा था. लेडी हेरिंगहैम की मदद करने वाले असित हलदार ने अजंता को अपनी कला में लगभग ज्यों का त्यों उतार दिया. अजंता से साबका तूफानी तेवर वाली अमृता शेर-गिल के लिए भी परिवर्तनकारी था—अजंता की मायावी छायाएं उनकी दक्षिण भारतीय त्रयी में दिखती हैं. निजाम ने दुनिया के सर्वश्रेष्ठ पुनरुद्धार विशेषज्ञों में एक लोरेंजो सेकोनी को भी आमंत्रित किया, जिन्हें कभी मोना लिसा का निरीक्षण करने के लिए बुलाया गया था. अफसोस, यह तेज दोधारी तलवार साबित हुआ. यजदानी ने सोचा कि सेकोनी और उनकी सहायक काउंट ओरसिनी ने अजंता के जीवन को ''कम से कम कुछ शताब्दियों'' तक बढ़ा दिया है. मैनेजर सिंह अपने पूर्ववर्ती के काम के बारे में हल्की सहमति देते हैं, ''उन्होंने उधड़ते प्लास्टर को नहीं जोड़ा होता, तो भित्ति-चित्र कब के खत्म हो गए होते.'' ''गुफा 1 के भीतरी गलियारे में जस्ता की एक नाली डाली गई'' जिसने शायद प्रतिष्ठित पद्मपाणि को बचाया, जो हमारे कवर की शोभा बढ़ा रहा है. लेकिन विक्टोरिया दौर की क्षति की भरपाई करने की कोशिश कर रहे सेकोनी ने जिन उपायों का सहारा लिया, उन्हें आज प्रारंभिक विज्ञान की निर्दोष मूर्खताओं में शुमार किया जाता है. उन्होंने शराब, तारपीन, कास्टिक सोडा, हाइड्रोक्लोरिक एसिड, अमोनिया के पतले मिश्रण और, सबसे घातक, बिना ब्लीच किए शेलक की उदार कोटिंग का इस्तेमाल किया. आज, हम देखते हैं कि प्राचीन कला पर उसकी धूसर और धुंधली छाया पड़ गई है.

तबाही का यह स्थल मैनेजर सिंह को विरासत में मिला. नए उपकरण मौजूद थे. मसलन, एक्स-रे फ्लोरेसेंस, एफटीआइआर स्पेक्ट्रोस्कोपी, वगैरह. उनकी टीम ने 1998 में काम शुरू किया. इंच दर इंच, गुफा दर गुफा आगे बढ़ते हुए, भित्ति-चित्रों से जितना संभव हो उतना घातक शंख, वार्निश और कालिख को निकाला. रंगों के लिए साइक्लोडोडेकेन, 'गीले जापानी टिश्यू के साथ' चमगादड़ के मल को साफ किया गया; मूर्तियों के लिए एथिल सिलिकेट; चट्टान के लिए वेकर का इस्तेमाल किया गया. ये अगली पीढ़ी के रसायन हैं, लेकिन हैं तो रसायन ही, हालांकि यह भी संदेह से परे नहीं है. नए प्रतिमानों की ओर तेजी से बढ़ रही दुनिया में नए उपाय भी हैं, जैसे सूक्ष्मजीवविज्ञानी हस्तक्षेप. आखिर, औपनिवेशिक काल में वार्निश का इस्तेमाल भी तो भलमनसाहत के साथ ही किया गया था.

लेपन और क्षय रोकने की कोशिशें

ज्यादातर दर्शक अजंता में वास्तुशिल्प के एक अनूठे नमूने को देखने से चूक जाते हैं. यह है बहुत पैसे से बना 'अजंता विजिटर सेंटर', जो पार्किंग क्षेत्र के बगल में ही है. जापानी इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी (जेआइसीए) के उदार कर्ज से वित्त-पोषित यह अजंता-एलोरा विकास योजना (एईडीपी) फेज-2 और आधुनिक स्थल प्रबंधन का शोपीस है. इससे काफी बड़ी संख्या में पर्यटक महाराष्ट्र पर्यटन विकास निगम (एमटीडीसी) के साढ़े चार एकड़ में फैले म्यूजियम और प्रदर्शनी की ओर जाते. इस तरह गुफाओं में पहुंचने वाली भीड़ कुछ कम हो जाती. दुनिया भर में यही तरीका अपनाया जाता है. 2010 में एलोरा के लिए स्थल प्रबंधन योजना तैयार करने वाली समिति के संरक्षक गुरमीत राय कहते हैं, ''चीन में मोगाओ गुफाओं के कुछेक मील के भीतर स्थित दो दर्शक केंद्र में ही 95 फीसद दर्शक खप जाते हैं, ज्यादातर संतुष्ट होकर और थककर लौटते

SCIENTIFIC

धीमी प्रगति
संरक्षण के काम सभी संबंधित पक्षों के साथ समन्वय के बदले अलग-अलग और टुकड़ों में किए गए हैं

चट्टान काटकर बनाई गई गुफाएं देश के वास्तुशिल्प इतिहास का अभिन्न अंग हैं. उनके संरक्षण के लिए दीर्घावधिक नजरिया और विशेषज्ञों की निगरानी जरूरी है, न कि कोई एकाधिकार वाला प्राधिकरण

हैं.'' स्पेन के ऑल्टामीरा में हर हफ्ते सिर्फ पांच दर्शकों को इजाजत मिलती है. फ्रांस के लैसकॉ में तो काफी सख्ती है, उसमें किसी को जाने की इजाजत नहीं. दोनों स्थलों पर दर्शकों को गुफा कलाकारी की प्रतिकृतियां ही देखने को उपलब्ध हैं.

भारत में ऐसे विजिटर सेंटर की कल्पना '90 के दशक के मध्य में की गई; काम 2006 में शुरू हुआ. लागत छह साल में दोगुनी हो गई, 130.3 करोड़ येन से 261.4 करोड़ येन हो गई. चरण दो की सभी परियोजनाओं पर कुल 649 करोड़ येन का लगभग आधा आवंटित किया गया. विविध नाटकीय व्यक्तित्वों और संस्थानों ने इस कोशिश को सजीव बना दिया. मसलन, लार्सन ऐंड टुब्रो, टाटा कंसल्टेंसी, छाया ऐंड छाया, रामोजी राव स्टूडियो के अच्छे लोगों, विविध वास्तुकारों, शोधकर्ताओं, ठेकेदारों ने भी अपनी प्रस्तुतियां देकर पैसे बनाकर चले गए. नतीजे प्रभावशाली हैं: भले ही इसका पॉलीकार्बोनेट शीट वाला केंद्रीय स्तूप परमाणु रिएक्टर जैसा दिखता हो. इसके नीचे एक विशाल फिल्म स्क्रीन है, जो एक फिश-आई प्रोजेक्टर और बड़े बोस स्पीकर से सुसज्जित है. यह सब एक सुंदर विशाल एम्फीथिएटर के इर्दगिर्द है. चार आदमकद गुफा प्रतिकृतियों, आरसीसी-स्टायरोफोम-कॉर्न मिश्रण से बने ज्वालामुखीय चट्टान के बीच भित्ति-चित्रों की विशाल ब्रोमाइड प्रतिकृतियां ठीक वैसा ही आभास देती हैं, जैसी वे हैं. इसके साथ कॉन्फ्रेंस हॉल, लाइब्रेरी, एक या दो बड़ा विशाल कैफेटेरिया. यह तब के इनक्रेडिबल इंडिया का हिस्सा था. !

यह आज भी है. लेकिन 2017 से बंद पड़ा है. हालांकि मध्य फरवरी में अचानक हुई गहमागहमी से जमी धूल उड़ने लगी, लंबे समय से जो सफाई लंबित थी. जी-20 जो आ रहा था! पूरा सेक्टर सक्रिय हो उठा. औरंगाबाद के फ्लाइओवरों के नीचे फूलों की क्यारियां सजने लगीं, और एलोरा के गेट के बाहर बुलडोजर दुकानों को ढहाने लगे. हड़बड़ी में पीडब्ल्यूडी अजंता को जाने वाली सड़क के आखिरी हिस्से को दुरुस्त करने की समय-सीमा चूक गया था, सो, किसी ने सोचा कि प्रतिनिधियों को हेलिकॉप्टर से उड़ा ले जाया जाए. मानो फाहियान के कथन को लगभग हू-ब-हू सत्य करना था, जिसने 5वीं सदी की शुरुआत में कहा था कि सड़कें इतनी ''दुखदायी'' थीं कि स्थानीय लोग हमेशा दर्शकों को उड़ते हुए अजंता जाते देखते थे. आखिरकार उड़ने की समृद्ध ख्वाहिश धरी रह गई. योजना रद्द हो गई और एलोरा की विचित्र प्रतिकृतियों पर जी-20 का बिल्ला लगाए महिला-20 की भद्र टोली लौट आई.

अमल की दरारें

गुफाएं ऐसे बनाई गई थीं, ताकि सूरज की मद्धिम रोशनी ही अंदर आए, सीधे किरणें न घुसें. अजंता के घुमावदार कॉरिडोर से निकलने वाली कई रिपोर्टें भी दिन की रोशनी नहीं देख पाई हैं. नीरी की 2015 की रिपोर्ट एएसआइ की सुरक्षित आलमारी में बंद है. सीएसआइआर के धरोहर मिशन के तहत उसके बाद के अध्ययन भी शायद विरले दस्तावेजों में शुमार हों. जेआइसीए के तीन दशकों के काम के समय-समय पर सेल्फ-ऑडिट जरूर ऑनलाइन हैं. उसके तीखे निष्कर्ष अच्छी विनम्र भाषा में कमतर बयानी की मिसाल हैं (2017 की एक तालिका का फुटनोट कहता है, ''प्रशासकीय खर्च के बारे में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं कराई गई''). जेआइसीए की 2007 की रिपोर्ट में लिखा गया कि स्थानीय एएसआइ मैनेजर को पर्यटन प्रबंधन की जानकारी नहीं है और स्थानीय एमटीडीसी मैनेजर को धरोहर प्रबंधन के बारे में मालूम नहीं है. यह फांक नीचे हलके तक उतरती है. ये उस काम के लिए दो सज्जन हैं और साझा प्रबंधन की बात तो भूल ही जाइए, वे एक-दूसरे से बातचीत तक नहीं करते. एमटीडीसी का दायरा वहां शुरू होता है, जहां एएसआइ का खत्म होता है, यानी टिकट ऑफिस पर. स्थानीय अधिकारी तो विनम्र हैं, लगता है कि कोई समग्र नीति है ही नहीं. इसकी एक मिसाल तो विजिटर सेंटर ही है. सभी स्थानीय छोटे व्यापारियों को 2002 में दो मील दूर घटिया-से 'शॉपिंग प्लाजा' में जबरन विदा करने के बाद उसका पूरी कमाई पर एकाधिकार है, और हर मायने में पूरी की पूरी कमाई मुंबई पहुंच जाती है. सैयद मुमताज हुसैन ने अजंता के पास 1975 में पहली किताब की दुकान खोली थी, अब उनके बेटे नए स्थल से भद्दी कलाकृतियों की प्रतिलिपि बेचते हैं, ''कमाई आधी हो गई है.'' पर्यटन से स्थानीय अर्थव्यवस्था में जान फूंकने की सभी सुंदर बातें नई दिल्ली के गलियारों में गूंजती हैं और यूनेस्को के खूबसूरत डोसियर में कैद रहती हैं.

अजंता को कैसे बचाया जाए

मौजूदा योजनाओं में विभिन्न स्थलों पर अलग-अलग ध्यान केंद्रित किया जाता है. आगे बेहतर रास्ता यही होगा कि सभी संबंधित स्थलों के लिए एक समग्र रणनीति बनाई जाए जिसमें पर्यटन, संरक्षण, शोध जैसी सभी जरूरतों को जोड़कर देखा जाए

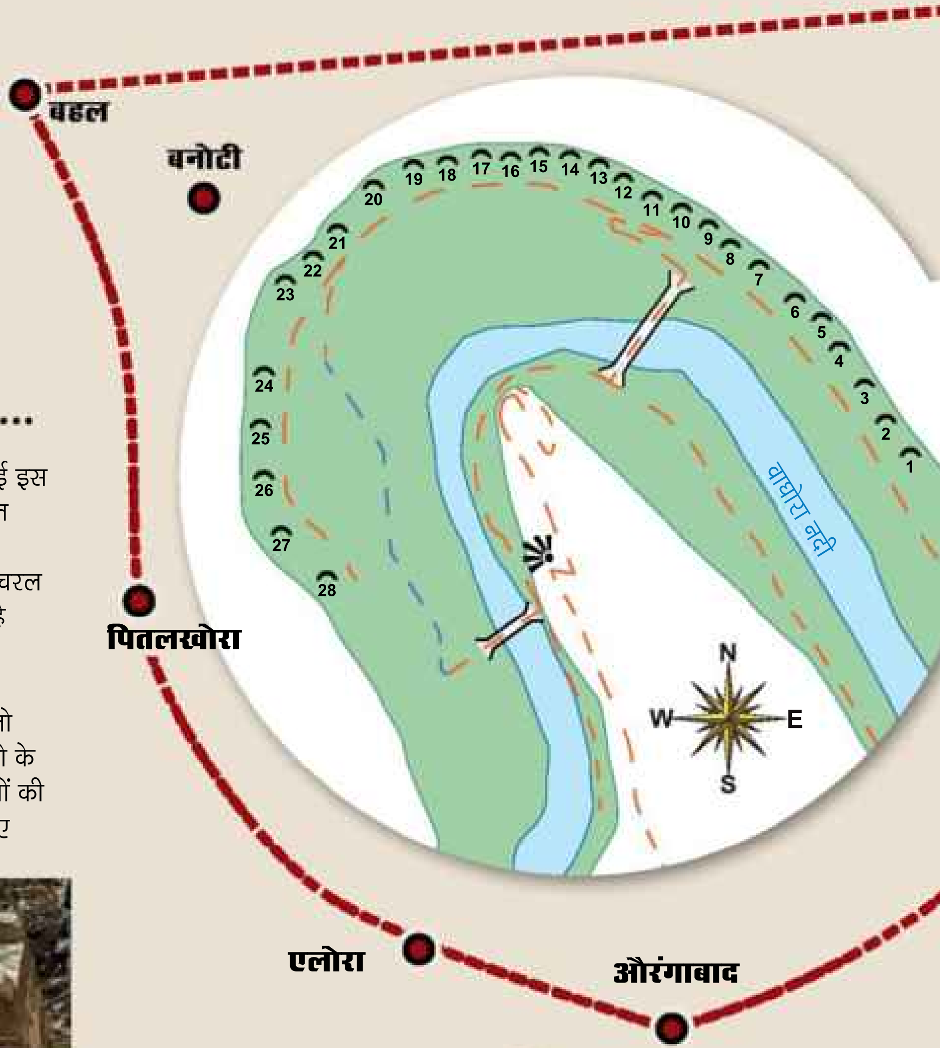

भारत में रॉक-कट आर्किटेक्चर केंद्रित यानी चट्टानों को काटकर बनाई गई इस तरह की सभी करीब 1,200 साइट को 'विरासत समूह' मानकर एक एकीकृत प्रबंधन प्राधिकरण के तहत लाया जाए और अजंता को इसका नोडल सेंटर बनाया जाए. कंबोडिया का अंगकोर आर्कियोलॉजिकल पार्क हो या 121 'कल्चरल लैंडस्केप' यूनेस्को अक्सर विरासत स्थलों को एक समूह के तौर पर देखता है

प्राथमिक स्तर पर संरक्षण की जिम्मेदारी संभालने वालों (एएसआइ, एमटीडीसी) को एक व्यापक निगरानी ढांचे की संभावनाएं तलाशनी चाहिए जो ऐसी अंतर-विषयक समिति हो सकती है, जिसमें विशेषज्ञ, वैज्ञानिक, यूनेस्को के प्रतिनिधि और फंड मुहैया कराने वाले शामिल हों. द्विवार्षिक आधार पर स्थलों की समीक्षा, वैज्ञानिक सर्वेक्षण, और जरूरी बदलाव जैसे कदम उठाए जाने चाहिए

अन्य स्थल इसलिए भी उपेक्षित रह जाते हैं क्योंकि सबका ध्यान विश्व धरोहर स्थलों पर केंद्रित होता है और वे न केवल पर्यटन का सारा भार वहन करते हैं बल्कि तमाम संसाधन भी सोख लेते हैं. पितलखोरा में द्वारपाल और अजंता में खंडहर बन चुकी पकी ईंटों के मठ में नजर आने वाला सूनापन, इसी विषमता को दर्शाता है. अगर एकीकृत योजना हो तो सभी को फायदा मिल सकेगा

पकी ईंटों का मठ

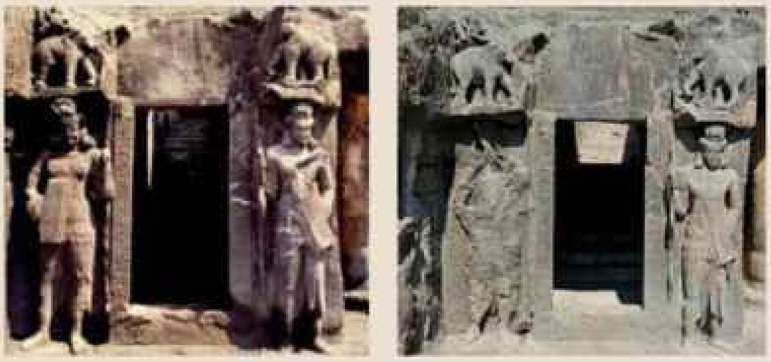

पितलखोरा पहले और बाद में

हवाई अड्डे से महज आधे घंटे की दूरी पर स्थित एलोरा के विपरीत अजंता करीब 100 किमी दूर है और आतिथ्य सुविधाएं भी बेहद सीमित हैं. यहां अमूमन औरंगाबाद से पर्यटकों के दिनभर के लिए ही आने का एक पैटर्न दिखता है, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने की संभावनाएं बनाता है

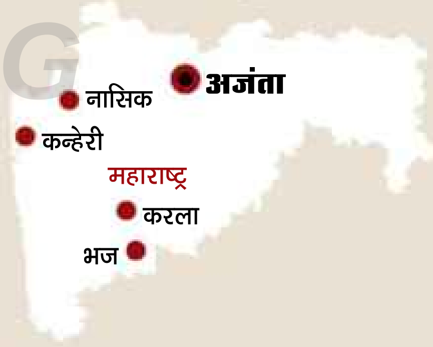

अब, इस क्षेत्र को एक केंद्र मानकर कल्पना करें—यहां एक आधुनिक आर्कियोलॉजी यूनिवर्सिटी, विरासत-स्थल के अनुरूप आतिथ्य सेवाएं और पूरी तौर पर एक 'हेरिटेज और नेचर सर्किट' है, जो आसपास की विभिन्न साइट जैसे घटोत्कच, पितलखोरा, बनोटी वगैरह को भी जोड़ता है

अन्य देशों का क्या है रुख

लासकॉ, फ्रांस **(1)**, ऑल्टमीरा, स्पेन **(2)** और मोगाओ, चीन **(3)** पर्यटक प्रवाह को पूरी तरह या काफी हद तक मोड़ने के लिए प्रतिकृतियां/आगंतुक केंद्र (विजिटर सेंटर) का उपयोग करते हैं. मिलान के सांता मारिया डेले ग्राजी, जहां दा विंची का लास्ट सपर म्यूरल **(4)** संरक्षित है, एक समय में केवल 30 लोगों को ही जाने की अनुमति देता है. जापान के होरयूजी मंदिर के भित्ति-चित्र **(5)** तो ज्यादातर ताले में ही बंद रहते हैं. अजंता आगंतुक केंद्र **(6)** में इलेक्ट्रॉनिकली निर्धारित टाइम स्लॉट के साथ आने वाले पर्यटकों की संख्या नियंत्रित किए जाने को एक अनिवार्य हिस्सा बनाया जाना चाहिए

1

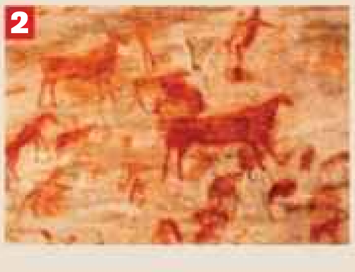

2

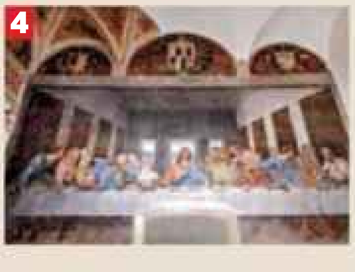

4

3

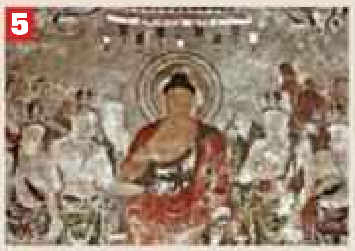

5

घटोत्कच
अजंता
गुफा
व्यू पॉइंट
पुल
रास्ते
बोखरदान

- सघन वन क्षेत्र में नहीं आने वाली इन्यादी रेंज नेचर टूरिज्म के लिहाज से काफी शानदार जगह उपलब्ध कराती है—अजंता में लोग समृद्ध पक्षी जीवन का आनंद ले सकते हैं, ईबर्ड डॉट ओआरजी पर 152 प्रजातियां सूचीबद्ध हैं. बनोटी को एडवेंचरस ट्रेक में बदलने की जरूरत है

- पर्यटकों, स्कॉलर, स्कूली बच्चों (जो यहां आने वालों का एक बड़ा हिस्सा होते हैं) के लिए आकर्षक प्रोग्राम कैलेंडर के साथ आगंतुक केंद्र को फिर से खोलें

- नदी के दूसरे किनारे को एक विश्राम स्थल, जलपान गृह और घूमने-फिरने योग्य क्षेत्र—स्थानीय लोगों की भागीदारी के साथ—के तौर पर विकसित करें ताकि यहां आने वाली पर्यटकों के लिए घूमने का दायरा बढ़ सके

अजंता वीसी में एक प्रतिकृति

6

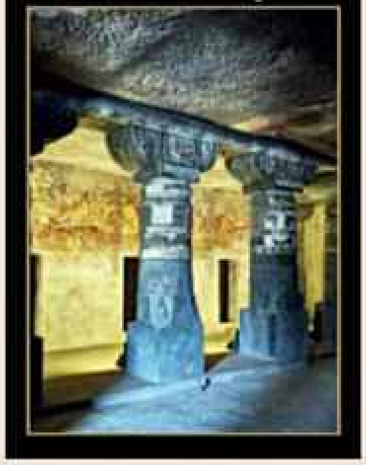

आगे क्या उपाय मुमकिन

- भारत के संरक्षण विज्ञान को रसायनों के इस्तेमाल जैसी 20वीं सदी की प्रथाओं से आगे बढ़ना चाहिए. विरासत स्थलों और पर्यावरण के अनुकूल जैविक उपाय दुनियाभर में आकर्षक संभावनाएं बढ़ा रहे हैं. सोलंटम, सिसिली (नीचे) में ग्रीको-रोमन साइट की फ्लोर मोजेक पर ऑरेगनो और थाइम जैसे पौधों का तेल काफी कारगर साबित हुआ है

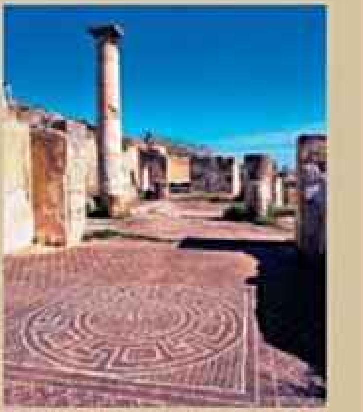

- सीएसआइआर-एनईईआरआइ जैसे संस्थानों को विभिन्न साइट से संबंधित वैज्ञानिक निष्कर्षों को सर्कुलेट करने के साथ-साथ इनके अनुवाद में तेजी दिखानी चाहिए और संरक्षकों का पूल भी अपडेट करते रहना चाहिए. भारत में एक ही जगह पर अटके रहने वाला नौकरशाही रवैया भी एक बड़ी समस्या है

- भारत में शोध के लिहाज से एक बड़ी शून्यता है—दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण बौद्ध स्थलों में से एक के लिए हमारे पास बस कुछ गिने-चुने साइट एक्सपर्ट ही हैं. संरक्षणवादी संजय धर कहते हैं, ''चीन के मोगाओ में साइट पर हर समय 300 शोधकर्ता होते हैं, जो भूविज्ञान से पुरातत्व तक सब विषयों पर कुछ न कुछ अध्ययन करते रहते हैं''

- पर्यटन पर गंभीर समाजशास्त्रीय अध्ययन (उदाहरण स्वरूप 'प्रामाणिक' और कैजुअल टूरिस्ट में स्पष्ट अंतर) पश्चिम की नीतियों के बारे में बताता है. वर्ग और 'रोमांटिक जोड़ों' जैसे अद्वितीय पैटर्न पर अपनी अंतर्दृष्टि और पैनी करते हुए हमें भी अपने पर्यटन स्थलों से जुड़ी एक गंभीर श्रेणी पर ध्यान देना चाहिए

यह एक और अजीब दुनिया लगती है, जो नेक इरादों से भरी हुई है, मगर बेहद धीरे सरक रही है. फिलहाल डब्ल्यूएचसी के लिए काम करने वाले द्रोण फाउंडेशन की संरक्षक शिखा जैन बताती हैं, ''विश्व विरासत समिति (डब्ल्यूएचसी) के नियम भी अभी तैयार ही हो रहे हैं. रेट्रोस्पेक्टिव स्टेटमेंट ऑफ यूनिवर्सल वैल्यू (आरएसओयूवी) को 2009 में पूर्व में दर्ज सभी स्थलों के लिए अनिवार्य बनाया गया. उसी के बाद स्थल प्रबंधन योजनाओं की बाढ़ आई.'' अजंता के लिए आभा नारायण लांबा की योजना दर्जन वर्ष पहले ही तैयार हो गई. उसके आधार पर संरक्षक राधिका धूमल पुष्ट करती हैं कि उन्होंने दशक भर पहले आरएसओयूवी कर लिया था. डब्ल्यूएचसी ने उसे 2021 में ही अपनाया. हर छह साल पर समीक्षा के अलावा, संरक्षण की पूरी स्थिति रिपोर्ट आखिरी बार डब्ल्यूएचसी में 2002 में पेश की गई. इस बीच फर्क यह है कि कुछ और जगह के प्लास्टर झड़ गए.

फौरन कार्रवाई की जरूरत

असली दुविधा यह है कि पर्यटकों की आमद को कैसे देखें: यह बेहिचक भली है या अभिशाप? संकट अमूमन अति की हद तक प्रतिक्रिया पैदा करता है यानी फौरन फाटक बंद किया जाए. और जो अतिशय पर्यटन जोखिम से आंख मूंदे हुए हैं, उन्हें झिड़की मिलती है. पेरू को माचू पिचू के लिए यूनेस्को की कई चेतावनियां मिल चुकी हैं. संख्या की समस्या को हल करने के लिए अजंता को हब बनाने का प्रस्ताव नासमझी लगता है (देखें, *अजंता को कैसे बचाएं*), लेकिन हर पक्ष के विशेषज्ञों को मिलाकर विशेष, बहुपयोगी निगरानी समिति बनाने की समग्र क्षेत्रीय योजना की कई शर्तें हो सकती हैं. मुंबई में जोगेश्वरी गुफाओं के लिए स्थल योजना तैयार कर रहीं धूमल कहती हैं, ''चट्टान काटकर बनाई गई गुफाएं भारतीय वास्तुशिल्प इतिहास का विशेष पहलू हैं. उनके लिए दीर्घावधिक निगरानी और नजरिए की जरूरत है.''

फिलहाल, अजंता की बहुमूल्यता से शायद ही कुछ भी मेल खाती है. स्थानीय अर्थव्यवस्था इससे एकदम अछूती है. बाकी बौद्ध गुफा स्थल उपेक्षा के शिकार हैं. इन सबको सामूहिक दर्जा दिया जाए? आइसीओएमओएस ब्रिटेन के पूर्व अध्यक्ष संरक्षक रिचर्ड ह्यूज कहते हैं, ''विलक्षण अंतरराष्ट्रीय मूल्य है, इसलिए मामला तो बनता है और ऐतिहासिक स्थलों के विकास का चलन भी है.'' एएसआइ धरोहर स्थलों की अपनी ट्रस्टीशिप को अक्सर अपनी मिल्कियत मान बैठता है, इसलिए उसके और देश के सबसे काबिल संरक्षकों के बीच बड़ी खाई है, जो कभी अजंता में काम नहीं पाते. धर कहते हैं, ''एएसआइ की व्यवस्था ऐसी है कि जो भित्ति-चित्र संरक्षण में प्रशिक्षित न हो, वह कल के अजंता का प्रभारी बन सकता है. उसके ज्यादातर काम ठेकेदारों को दे दिए जाते हैं.'' वे एक ऐसी बात भी बताते हैं जिसको लेकर अभी कानाफूसी भर है. ''उसके अपने कलाकार भित्ति-चित्रों पर काफी कूची चला रहे हैं.''

बेशक, एएसआइ की अपनी प्रतिभाओं की इकलौती छतरी से बड़ी छतरी बेहतर ही होगी. पूर्व महानिदेशक गौतम सेनगुप्ता एएसआइ के लिए ''अधिक स्वायत्तता'' की मांग करते हैं. अजंता ऐसी केस स्टडी है जिससे पूरा सिस्टम एक्स-रे मशीन के नीचे आ जाएगा. यह अपनी धरोहर से हमारे रिश्ते की भी व्याख्या करता है. अजंता को याद करना एक शुरुआत हो सकती है. तब बुद्धभद्र की आशंकाएं दूर की जा सकती हैं कि अंत सांध्यवेला का प्रतिबिंब है. ■

कलाएं यहां से लेंगी अब नई करवट

आर्थिक राजधानी मुंबई में हाल में कला का एक बड़ा केंद्र खुलाः नीता मुकेश अंबानी सांस्कृतिक केंद्र. दृश्य और मंचीय कलाओं को इससे तगड़ा प्रोत्साहन मिलने की उम्मीद

सुहानी सिंह

मुंबई के बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स में प्रवेश करें और रिलायंस जियो की चमक-दमक आपका ध्यान आकृष्ट न करे, ऐसा हो नहीं सकता. यहीं जियो वर्ल्ड गार्डन है जिसमें अरिजित सिंह और प्रतीक कुहाड़ से लेकर एड शीरन और स्क्रीलेक्स तक न जाने कितनी सेलेब्रिटी परफॉर्म कर चुकी हैं; फिर कई लग्जरी स्टोर, रेस्त्रां और यहां तक कि एक ड्राइव-इन थिएटर वाला विशाल मॉल जियो वर्ल्ड ड्राइव भी है. इस 18.5 एकड़ के जियो वर्ल्ड सेंटर के अंदर फाउंटेन ऑफ जॉय और जियो कन्वेंशन सेंटर भी हैं, जहां सबसे बेहतरीन और भव्य प्रदर्शनियों या ट्रेड शो की मेजबानी की जा सकती है. अब इसी विशाल परिसर का एक और बड़ा आकर्षण बना

अटलांटा की फर्म टीवीएस डिजाइन की ओर से डिजाइन किए गए एनएमएसीसी की सोच दरअसल भारतीय कला को दुनिया के मंच पर पहुंचाने की और साथ ही दुनिया की बेहतरीन कला प्रस्तुतियों और नमूनों को हिंदुस्तान में लाने की है

NITA MUKESH AMBANI CULTURAL CENTRE
2

सभी फोटो/साभार: एनएमएसीसी

मुनादी शान की
1. द ग्रैंड थिएटर
2. एनएमएसीसी के लोकार्पण के मौके पर मुकेश और नीता अंबानी
3. केंद्र का परिसर

है: नीता मुकेश अंबानी सांस्कृतिक केंद्र यानी एनएमएसीसी. 2,000 सीटों की क्षमता वाला ग्रैंड थिएटर, 250 सीट वाला स्टुडियो थिएटर और 125 सीटर क्यूब के रूप में तीन सभागार और आर्ट हाउस कहलाने वाला चार मंजिला आर्ट स्पेस. एनएमएसीसी में तैयार इन स्थानों से भारत में मंचीय और दृश्य कलाओं को तगड़ा प्रोत्साहन मिलने वाला है.

दुनिया के बड़े सांस्कृतिक केंद्रों की टक्कर का एक केंद्र बनाना नीता अंबानी का वर्षों पुराना सपना था. भरतनाट्यम में प्रशिक्षित और मुंबई के नरसी मोनजी कॉलेज में थिएटर से जुड़ी रहीं अंबानी को हमेशा से कला के प्रति गहरा लगाव रहा है. वे अपने भव्य घर एंटीलिया में बड़ी अंतरराष्ट्रीय शख्सियतों और समूहों के लिए और इसके अलावा देशभर में रिलायंस के विभिन्न कार्यक्रमों में नामचीन शास्त्रीय गायकों और नृत्यांगनाओं को प्रदर्शन के लिए बुलाती ही रही हैं. एनएमएसीसी के लोकार्पण के मौके पर अंबानी के शब्द थे, ''संस्कृति तो आपसी समझ, सहिष्णुता और एक-दूसरे के प्रति सम्मान से मिलकर बना वह धागा है जो विभिन्न समुदायों और मुल्कों को एक साथ जोड़ता है. संस्कृति मानवता के लिए उम्मीदें और खुशियां बढ़ाने का साधन है. इसलिए एक कलाकार के रूप में मुझे आशा है कि यह केंद्र कला, कलाकारों और दर्शकों के लिए बेहतरीन जगह साबित होगा. यह एक ऐसी जगह है जहां हमारे लोग अपनी विरासत पर गर्व महसूस कर सकें.''

यह बात एनएमएसीसी के उद्घाटन के अवसर के लिए तैयार नाट्य प्रस्तुति से भी साफ जाहिर है. *द ग्रेट इंडियन म्यूजिकल: सिविलाइजेशन टु नेशन* नाम के इस नाटक में भारत की आजादी तक के इतिहास की झलक दिखाई गई है. इसकी भव्यता का अंदाजा इसी से लगाइए कि इसमें 350 से ज्यादा कलाकार हैं और 1,100 से ज्यादा कॉस्ट्यूम. 55-पीस लाइव ऑर्केस्ट्रा है जिसमें अगुआई बुडापेस्ट स्कोरिंग आर्केस्ट्रा की है. इनके लिए एनएमएसीसी के ड्रेसिंग रूम कम पड़ गए तो जियो वर्ल्ड कन्वेंशन सेंटर के तीन पवेलियन में से एक को बैकस्टेज एरिया में बदला गया. इसका निर्देशन किया है 2016 की म्यूजिकल प्रस्तुति *मुगल-ए-आजम* और फिल्म *गांधी, माइ फादर* (2007) के लिए जाने गए फिरोज अब्बास खान ने. कोरियोग्राफी राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता वैभवी मर्चेंट और समीर-अर्श तन्ना के साथ-साथ मयूरी उपाध्याय की, कॉस्ट्यूम डिजाइनर मनीष मल्होत्रा और संगीतकार अजय-अतुल. इसकी मांग इतनी है कि ग्रैंड थिएटर में तीन सप्ताह तक चलने वाले शो के लिए 5 अप्रैल तक ही 400 रुपए से लेकर 25,000 रुपए तक लगभग सारे टिकट बिक चुके थे.

एक अन्य पवेलियन में इंडिया इन फैशन नाम से कॉस्ट्यूम आर्ट एग्जिबिशन लगी है, जो तमाम ख्यात डिजाइन लेबल पर भारतीय शिल्प परंपरा की छाप को दर्शाती है जिसमें

मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट, कोको चैनल और मुसी यीव सां लॉरां पेरिस जैसे नाम शामिल है.

लॉन्च के मौके पर अंबानी की बेटी ईशा ने कहा, ‘‘हम दुनिया को भारत की बेहतरीन कलात्मक चीजें दिखाना चाहते हैं और साथ ही दुनिया भर की बेहतरीन कलात्मक चीजों को यहां लाने की उम्मीद करते हैं.’’ इस केंद्र की प्रोग्रामिंग फिलॉसफी मोटे तौर पर इसी पर आधारित है. सारी तैयारियों के बीच पूरे संगठनात्मक ढांचे और लीडरशिप के बीच समन्वय के साथ-साथ प्रोग्रामिंग संबंधी सलाह का दायित्व निभाने वाले एनएमएसीसी के एक प्रतिनिधि ने कहा कि इसके पीछे मिशन ‘उभरते कलाकारों को तैयार करना, कला शिक्षा पर (ध्यान देना), साथ ही छोटे-छोटे गांवों से लेकर महानगरों तक के कलाकारों को बढ़ावा देकर भारतीय संस्कृति के व्यापक फलक को सामने लाना है.’’ इसमें स्कूल-कॉलेजों की आउटरीच जैसी पहलकदमियों और आर्टिस्ट रेजिडेंसी प्रोग्राम को प्राथमिकता मिलेगी. उन्होंने कहा, ‘‘यह सिर्फ एक ऐसी जगह नहीं कि जिसे कोई बुक करता है और जो चाहता है, उसके हिसाब से चीजों को रखता है. मैंने पश्चिम से सीखे कुछ डिजाइन आइडिया और विचारों का उपयोग करके कुछ बनाने की कोशिश की है जिसका भारतीय संस्कृति के साथ तादात्म्य हो.’’

उम्दा की झलक
1. यायोई कुसमा का इंस्टॉलेशन *क्लाउड्स*
2. इंडिया इन फैशन प्रदर्शनी में *द हिप्पी ट्रेल सेक्शन*

अटलांटा स्थित फर्म टीवीएस डिजाइन की तरफ से डिजाइन किए गए इस सांस्कृतिक केंद्र के तीन सभागार इस मिशन के अनुरूप नजर आते हैं. द आर्ट हाउस का आर्किटेक्ट रिचर्ड ग्लुकमैन ने डिजाइन किया है, जो भारतीय और विदेशी प्रतिष्ठानों और बेहतरीन कला प्रदर्शनियों की मेजबानी करेगा. अभी यहां ‘संगम’ नाम की प्रदर्शनी चल रही है. प्रतिनिधि के मुताबिक, क्यूब और स्टूडियो थिएटर ऐसी खास जगहें हैं जो ‘अत्याधुनिक प्रदर्शन’ और ‘कुछ नया आजमाने की कोशिश करने वाले कलाकारों’ की जरूरतें पूरी करेंगे. इसी तरह ग्रैंड थिएटर को अपने नाम के अनुरूप लार्जर दैन लाइफ शो होस्ट करने के लिए बनाया गया है जिसमें ब्रॉडवे और द वेस्ट एंड आदि के शो शामिल हैं. इसमें भारत का सबसे बड़ा प्रोसीनियम और एक डॉल्बी साउंड सिस्टम है, जो ऑस्कर अवार्ड की मेजबानी करने वाले लॉस एंजेलिस के डॉल्बी थिएटर से प्रेरित है. इसमें 18 ‘डायमंड’ बॉक्स भी हैं, जो थिएटर की सबसे खास सीटें हैं, जिसमें दर्शकों को इनसुइट, प्राइवेट पाउडर रूम और खास किस्म का मेन्यू मिलेगा. टीवीएस डिजाइन की वेबसाइट के अनुसार, ऑस्ट्रिया-निर्मित छत थिएटर के बेहतरीन फीचर में एक है, जिसमें ‘कमल की 17 पंखुड़ियों और अरबी जालीदार पैटर्न का इस्तेमाल किया गया है’ और इसमें 8,400 स्वारोवस्की क्रिस्टल जड़े हैं.

परफॉर्मिंग आर्ट स्पेस में निवेश करने वाला अंबानी परिवार भारत का ऐसा पहला कारोबारी परिवार नहीं है. जेआरडी टाटा और जमशेद भाभा इसमें अग्रणी थे, जिनकी तरफ से मुंबई में बनवाया गया नेशनल सेंटर फॉर द परफॉर्मिंग आर्ट्स (एनसीपीए) आज भी फल-फूल रहा है; शहर में बिरला मातोश्री सभाग्रह कला प्रस्तुति के शुरुआती केंद्रों में से एक रहा है जिसका निर्माण रामेश्वर दास बिरला ने कराया था; आनंद महिंद्रा समूह की तरफ से इस दिशा में कई पहल की गई हैं, जिनमें मेटा (महिंद्रा एक्सीलेंस इन थिएटर अवार्ड्स), ब्लूज फेस्टिवल और हाल में शुरू किया गया वाद्ययंत्रों से जुड़ा परकशन फेस्टिवल शामिल हैं. गोदरेज समूह भी 2020 तक इंडिया कल्चर लैब को वित्तीय मदद देता रहा है. हालांकि, बदकिस्मती से कोविड महामारी के दौरान इसे बंद करना पड़ा. अपनी संपत्ति को एक कलात्मक उपक्रम से जोड़कर अंबानी परिवार अब उन कारोबारी घरानों में शुमार हो गया है, जो कला को अपनी विरासत मजबूत करने का एक साधन मानते हैं. यह कहना गलत न होगा कि एनएमएसीसी इस परिवार के प्रति धारणा को पूरी तरह बदल देगा.

नीता अंबानी के मुताबिक, ‘‘कलात्मक और सांस्कृतिक विरासत ही तो भारत की अमूर्त राष्ट्रीय संपत्ति’’ है. और वे किसी भी तरह के बदलाव में कला की ताकत को बहुत अच्छी तरह समझती हैं, चाहे वह पेंटिंग हो, या इमेज हो या फिर कसीदेकारी वाली पोशाक. केंद्र की शुरुआत के मौके पर उन्होंने कहा, ‘‘हम चाहते हैं कला हर बच्चे और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित और सशक्त करती रहे, जिससे उनकी रचनात्मकता, उनकी पसंद-नापसंद, उनकी आशाएं और उनके सपने साकार रूप लेते रहें. एक सम्मानित कारोबारी की ये बातें कला क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिए निश्चित तौर पर बहुत सुकून देने वाली हैं.’’■

कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार
राष्ट्रीय लोक नाच महोत्सव 2023
श्री जितेन्द्र कुमार राय
श्री दीपक

अधूरी पहल
पटना में आयोजित 'राष्ट्रीय लोक नाच महोत्सव' की एक प्रस्तुति

बस बदनाम ही रहेगा लौंडा?

बिहार सरकार ने लौंडा नाच और इसके कलाकारों को बढ़ावा देने के लिए पटना में एक महोत्सव का आयोजन तो किया लेकिन वह इसको लेकर सहज नहीं दिखती. आखिर क्यों?

पुष्यमित्र

पिछले दिनों (15-16 मार्च को) बिहार की राजधानी पटना में एक अनूठा लोक नाच महोत्सव हुआ. इस महोत्सव में भाग लेने वाले सभी नर्तक स्त्रियों का भेस रच कर नाचने वाले पुरुष थे. इनमें ज्यादातर पारंपरिक कलाकार थे, जो सदियों से अपने समाज में इस तरह का नृत्य करते रहे हैं और जिन्हें लोग नटुआ या लौंडा कहते हैं. अमूमन समाज में इन कलाकारों को अच्छी नजर से नहीं देखा जाता. इसलिए जब सरकारी मदद से पहली दफा लौंडा नाच महोत्सव हुआ तो सहज ही लोगों का ध्यान उधर चला गया. खासतौर पर लौंडा नाच कलाकारों को लगा कि इस आयोजन से समाज में उनका सम्मान बढ़ेगा. इस साल बिहार दिवस पर एक लौंडा नर्तक उदय के जीवन पर बनी फिल्म द *लिपस्टिक बॉय* का प्रीमियर भी बिहार सरकार ने कराया, इस वजह से भी कलाकार काफी उत्साहित थे. मगर महोत्सव में पहुंचे दर्शक और कलाकार उस वक्त चौंक गए, जब उन्हें पता चला कि सरकारी महोत्सव होने के बावजूद सरकार का कोई नुमाइंदा उनकी हौसला अफजाई के लिए इस आयोजन में नहीं पहुंचा. इसके अलावा महोत्सव के नाम को भी लौंडा नाच से बदलकर राष्ट्रीय लोक नाच महोत्सव कर दिया गया था.

महोत्सव के प्रचार-प्रसार के लिए जो पोस्टर बने थे, उनमें आयोजन का नाम राष्ट्रीय लौंडा नाच महोत्सव ही रखा गया था. मगर 15 मार्च को जिस रोज महोत्सव का उद्घाटन होना था, आयोजन स्थल प्रेमचंद रंगशाला में नए पोस्टर लग गए, जिन पर राष्ट्रीय लोक नाच महोत्सव, 2023 लिखा था. इस आयोजन के सूत्रधार लौंडा नाच कलाकार उदय का कहना था, ''शायद ट्रांसजेंडरों के एक समूह ने लौंडा शब्द पर आपत्ति जताई है, या जो भी वजह हो. जहां तक लौंडा नाच कलाकारों का सवाल है, हमें इस नाम को लेकर कोई आपत्ति नहीं है. हमें तो समाज इसी नाम से पुकारता है, अब यही हमारी पहचान है.''

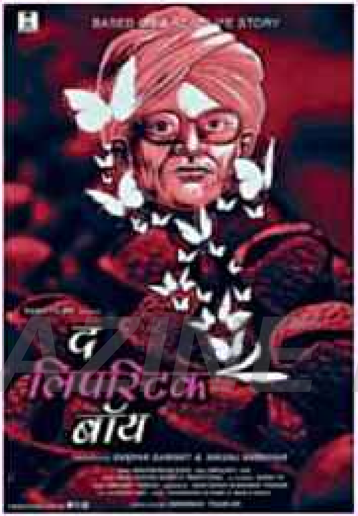

संघर्षों की कहानी
कला संस्कृति विभाग के सचिव रवि परमार से 2018 में बिहार कला सम्मान प्राप्त करते लोक कलाकार कुमार उदय सिंह (नीचे दाएं); उन पर बनी फिल्म का पोस्टर (ऊपर)

उस रोज सिर्फ इतना ही नहीं हुआ. महोत्सव का उद्घाटन शाम पांच बजे होना था. मगर उद्घाटन करने वाले मंत्री और अधिकारियों में से कोई नहीं आया. आयोजन के पोस्टर पर उद्घाटनकर्ता के रूप में कला संस्कृति विभाग के मंत्री जितेंद्र कुमार राय, सचिव वंदना प्रेयसी और अपर सचिव दीपक आनंद का नाम था. जब शाम साढ़े सात बजे तक कोई नहीं आया तो मजबूरन बिहार संगीत नाटक अकादमी की सचिव सुषमा कुमारी से आयोजकों को समारोह का उद्घाटन कराना पड़ा. दूसरे दिन भी विभाग के मंत्री और सचिव स्तरीय अधिकारियों ने आयोजन से दूरी बनाए रखी. आयोजकों ने तो इस बारे में साफ-साफ नहीं कहा, मगर ऐसी चर्चाएं थीं कि लौंडा नाच की समाज में बदनामी की वजह से ही मंत्री और अधिकारी इस महोत्सव से बचते रहे. हालांकि कला-संस्कृति सचिव बंदना प्रेयसी ने कहा कि उन्होंने कभी औपचारिक रूप से इस आयोजन में आने की सहमति नहीं दी थी.

इस सबके बावजूद आयोजन के दोनों दिन लोगों की अच्छी भीड़ जुटी और लगभग सभी प्रस्तुतियों को दर्शकों की भरपूर सराहना मिली. मगर जब भी कलाकारों को अपनी बात रखने का मौका मिलता उनका यह दर्द छलक ही जाता था कि मंच पर तो उन्हें तालियां मिलती हैं, वहां से उतरकर बाहर निकलते ही गालियों और कटाक्ष का सिलसिला शुरू हो जाता है.

आयोजक उदय बताते हैं, ''इस आयोजन में बिहार के भोजपुर, बक्सर, सीवान, सारण और बेगूसराय जिले की आठ टीमें ऐसी थीं जो पारंपरिक रूप से अपने इलाके में लौंडा नाच किया करती हैं. इनमें से ज्यादातर कलाकार बूढ़े हो गए हैं. मगर ऐसे कलाकारों को पहली दफा मंच मिला. पहली बार इन कलाकारों को लगा कि इन्हें प्रतिष्ठा मिली. इसके अलावा तीन नाट्य समूह थे. एक रंग समूह पटना का, एक बलिया का और एक आजमगढ़ का. ये समूह लौंडा नाच की शैली को अपनाकर सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दिया करते हैं. इनके अलावा मुंबई से बॉलीवुड कलाकार मनोज पटेल भी आए थे.'' मनोज लौंडा नाच के मसले पर बनी फिल्म द *लिपस्टिक बॉय* में मुख्य कलाकार की भूमिका में हैं. यह फिल्म इस महोत्सव के सूत्रधार लौंडा नाच कलाकार उदय के जीवन और संघर्ष पर बनी है और इस साल बिहार दिवस के मौके पर पटना में उसका प्रीमियर भी हुआ.

द *लिपस्टिक बॉय* के निर्माता दीपक सावंत और निकुंज शेखर हैं. इसके निर्देशक अभिनव ठाकुर हैं. निर्माता निकुंज शेखर बताते हैं, ''यह फिल्म उदय जी के जीवन पर बनी है. इसमें हमने

यह दिखाने की कोशिश की है कि एक लौंडा नाच कलाकार के जीवन में कितने संघर्ष होते हैं. उपलब्धि पाते-पाते उसे काफी वक्त लग जाता है और इस दौरान कलाकार खुद ही कहीं खो जाता है. यह फिल्म क्लास ऑडिएंस के लिए है. फिल्म अमिताभ बच्चन की आवाज और उनकी उपस्थिति से शुरू होती है.''

फिल्म कलाकार के रूप में पॉपुलर होने की वजह से मनोज पटेल की दोनों प्रस्तुतियों को खूब सराहना मिली और दूसरे दिन जब उनसे मंच से बोलने को कहा गया तो वे भी बहुत भावुक हो गए. उदय कहते हैं, ''यह भावुकता ही लौंडा नाच कलाकारों के जीवन का हिस्सा है.''

लौंडा नाच और उसकी बदनामी

लौंडा शब्द बिहार के समाज में सहज स्वीकार्य नहीं है. यही इस नाच परंपरा की बदनामी की असल वजह है और शायद इसलिए ही सरकार ने इस महोत्सव का नाम बदल दिया. प्रेयसी कहती हैं, ''यह उचित नाम है भी नहीं. दरअसल इस आयोजन को शुरू करने की हमारी प्रेरणा भिखारी ठाकुर के समूह के कलाकार रामचंद्र मांझी थे, जिन्हें 2021 में भारत सरकार ने पद्मश्री अवार्ड दिया. मगर मैं मानती हूं कि उनकी नृत्य शैली का नाम बिदेसिया था. लौंडा नाच नहीं. लौंडा शब्द सभ्य समाज के अनुकूल नहीं है.''

हालांकि यह सिर्फ सरकारी पक्ष नहीं था. आधुनिक रंगमंच पर बिदेसिया नाटक को देश भर में ले जाने वाले जाने-माने नाट्य निर्देशक संजय उपाध्याय भी अलग वजहों से लौंडा शब्द से असहमत दिखते हैं. वे कहते हैं, ''यह एक सामंती शब्द है, जिसे जमींदारों ने इन लोक नर्तकों की पहचान को पुल्लिंग तक सीमित कर देने के लिए रचा है.''

उपाध्याय आगे बताते हैं, ''दरअसल स्त्री का भेस रचकर नृत्य करने की परंपरा आज की नहीं है. यह संभवत: चैतन्य महाप्रभु के वक्त से शुरू हुई है, जब कृष्ण प्रेम में वे और उनके अनुयायी खुद को स्त्री समझने लगते थे. बिहार में विदापत नाच समेत कई लोक नाच शैलियां हैं. जिनमें पुरुष स्त्री की भूमिका निभाते हैं. मगर उन नाच शैलियों का कंटेंट अलग है. उनमें सामाजिक मसले उठाए जाते हैं. आज तो जो लौंडा नाच है, वह महज आइटम सांग बनकर रह गया है.''

बिहार की लोककलाओं पर अच्छी पकड़ रखने वाले निराला बिदेसिया इस परंपरा को शिव और विष्णु तक ले जाते हैं और कहते हैं कि कृष्ण ने तो अपने जीवन में कई दफा स्त्री रूप धरा. उनके शब्दों में, ''दरअसल लौंडा नाच की जो परंपरा है, वह एक तरह का विद्रोह भी है. क्योंकि उस जमाने में जितनी अच्छी नर्तकियां थीं, वे राजाओं और जमींदारों की महफिलों के लिए रिजर्व थीं. ऐसे में लोक को ऐसे स्त्री बनने वाले पुरुषों से ही काम चलाना पड़ता था.''

हालांकि बिहार की लोक संस्कृति पर शोध करने वाले जेएनयू के कला और सौंदर्यशास्त्र संस्थान में असिस्टेंट प्रोफेसर ब्रह्म प्रकाश इन विचारों से असहमत दिखते हैं. उनका निष्कर्ष है, ''लौंडा नाच दरअसल वर्किंग क्लास का नृत्य है. पूरे देश में वर्किंग क्लास के ऐसे नृत्य हर जगह हैं. इनमें भदेसपन है और अक्सर सरकारी सहायता पाने की कोशिश में इनका नाम बदला जाता है और इन्हें शास्त्रीय स्वरूप देने की कोशिश की जाती है. मगर यह ठीक नहीं. लौंडा नाच की अपनी पहचान है, कंटेंट है. इन पर सवाल उठाना बेमतलब, बेमानी है.''

लौंडा नाच पर मौजूदा खतरा सिर्फ बदनामी का नहीं है. गली-गली में खुल गई ऑर्केस्ट्रा कंपनियां भी इन्हें चुनौती दे रही हैं. लौंडा नाच समूहों की आजीविका विवाह, मुंडन और दूसरे राजनैतिक-सामाजिक आयोजनों में किराए पर बुलाए जाने से चलती रही हैं. मगर अब ऑर्केस्ट्रा समूह बहुत कम दरों पर डांसर लड़कियों की सेवा उपलब्ध करा दे रहे हैं. ऐसे में लौंडा नर्तकों की मांग लगातार घट रही है.

बहरहाल अच्छी बात यह है कि बिहार सरकार ऐसे महोत्सव को आगे भी आयोजित करना चाहती है. हालांकि विभाग लौंडा नाच की भदेस संस्कृति और इसके नाम को लेकर अभी भी सहमत नहीं. यही वजह है कि कला-संस्कृति सचिव बंदना प्रेयसी कहती हैं, ''हम इसे सॉफेस्टिकेटेड और ऑर्गेनाइज तरीके से लगातार करना चाहते हैं. बस हम चाहते हैं कि यह थोड़ा-सा सभ्य समाज के अनुकूल हो जाए.''

लौंडा नाच की लोकप्रियता इसके भदेसपन की वजह से है. यहीं से इसका नाम भी निकला है. नाम बदलने की सरकार की कोशिश इस कला की स्वीकार्यता बढ़ाने में कारगर तो साबित हो सकती है, लेकिन इस बदलाव को उस समाज तक पहुंचने में शायद बहुत लंबा अरसा लगे जिसने यह नाम ईजाद किया है.■

लौंडा नाच का भूत-वर्तमान

लौंडा नाच यानी पुरुष के स्त्री के भेस में नाचने की परंपरा काफी पुरानी है, यहां तक कि मिथकों में भी इसका खूब जिक्र मिलता है. खुद भगवान विष्णु ने भी मोहिनी का रूप धर कर नृत्य किया था. हालांकि जाने-माने नाट्य निर्देशक संजय उपाध्याय मानते हैं कि इस परंपरा की शुरुआत चैतन्य महाप्रभु के जमाने से हुई, जब कृष्ण भक्तों ने खुद को राधा और गोपी मानकर स्त्री रूप और भाव में नृत्य करना शुरू किया. बिहार के इलाकों में परंपरा के रूप से ऐसे कई लोक नृत्य हैं, जिनमें पुरुष स्त्री की भूमिका निभाते हैं. इनमें विदापत नाच प्रमुख है. ऐसा माना जाता है कि बिहार में जब सामंती युग शुरू हुआ तो जमींदारों ने स्त्री का भेस रचकर नृत्य करने वाले पुरुषों को संरक्षण देना शुरू किया. वजह? उस वक्त जो स्त्रियां महफिलों और कोठों में नाचती-गाती थीं, उनका प्रदर्शन अमूमन राजा और अत्यंत धनी लोगों तक ही सीमित रहता था. आजादी के बाद जमींदारी खत्म हुई तो लौंडा नाच करने वालों ने इसे आम जनों के लिए उपलब्ध किया और लोग अपने यहां के सामाजिक आयोजनों में उन्हें नाचने के लिए बुलाने लगे.

नाम भी, बदनाम भी
पटना में आयोजित 'लोक नाच महोत्सव' में प्रस्तुति देते बॉलीवुड के एक्टर और लोक कलाकार मनोज पटेल

दोनों फोटो: कुमार गंधर्व प्रतिष्ठान, देवास

कालजयी कुमार गंधर्व की सदी पर

संगीत

राजेश गनोदवाले

उसी धारवाड़ से जहां की उपज पंडित कुमार गंधर्व थे, आज के दिग्गज गवैये एम. व्यंकटेश कुमार भी आते हैं. वे कुमार गंधर्व के बारे में कहते हैं, ''उनके लिए गंधर्व नाम सार्थक है. स्वर गंधर्व थे वे. सौ वर्षों में ऐसा एक कलाकार पैदा होता है. उन्होंने संगीत को आध्यात्मिक सुंदरता से जोड़ा था.'' व्यंकटेश ने यह बात यूं ही नहीं कही.

पद्मविभूषण कुमार गंधर्व को कायदे से सदी का गवैया ही कहना होगा. सार्वजनिक जीवन से संबद्ध कलाकार हमेशा जन स्वीकृति के कारण लोकप्रिय होते आए हैं, वही उनकी असल पूंजी है. बगैर गुणग्राही श्रोताओं के सामने सितारा कलाकार भी जमीन पर सिमट जाता है. कुमार जी के मामले में दो विरले उदाहरण दिखाई पड़ते हैं. अपने श्रोताओं से उन्हें खासा लगाव था. वे उनके मुताबिक महफिल जम न पाने पर अपनी ही इच्छा से दोबारा गाने को तैयार हो जाते थे (रायपुर का ऐसा वाकया काफी चर्चित है). उधर, गुणी सुनने वाले भी उनके पास दौड़े चले आते थे. ऐसे में जब उन्हें याद करने की घड़ी आए तो जन्मशती का महत्व समझना कठिन नहीं.

कुमार गंधर्व मात्र खयाल गायक नहीं, बहुत कुछ थे. यानी अपनी गायिकी से खुद ही जिरह करता हुआ एक विचारवान मानस. खयाल के स्थापित घरानों के समकक्ष अपना नवरूप लेकर छा जाने वाला व्यक्तित्व. उनके होने के सौ साल का अवसर अब शुरू हो गया है. ऐसे में देश की संगीत पट्टी, खासकर खयाल गवैयों के गलियारों में जन्म शताब्दी की गूंज बनी रहेगी.

संभव है, अन्य संस्थाएं या समूह भी श्रद्धावश कुछ न कुछ करना चाहें लेकिन मुख्य आयोजन देवास के कुमार गंधर्व प्रतिष्ठान का ही रहेगा. उसी दिशा में पहला हस्तक्षेप करने कुमार जी की पुत्री कलापिनी कोमकली ने 3 अप्रैल को ही मुंबई रवानगी डाल दी जहां 8 तारीख से ''पंडित कुमार गंधर्व जन्मशती समारोह'' का औपचारिक शुभारंभ होना है. इस खास घड़ी पर परिवार जितना गद्गद है उतना ही सजग भी. यकीनन जब दिग्गज गवैये की पुत्री स्वयं गायक हों तो पिता की रचनात्मक विरासत पर एकाधिकार सहजबात है. वे साफ कहती हैं कि गली-कूचों में होने वाले आयोजनों को जन्मशती से न जोड़ा जाए. जबकि कुमार जी के सुपौत्र भुवनेश कोमकली इस मायने में जरा उदार दिखाई देते हैं. उस दिग्गज शख्सियत के सौ वर्ष की वेला पर दोनों लगभग दो वर्षों से 'कैसे हो, क्या हो' की उधेड़बुन को अब जाकर नतीजे तक ला पाए हैं. योजनाएं सुंदर हैं और एकाधिक. कलापिनी बताती हैं, ''मुंबई से सिलसिला आरंभ होगा. दिल्ली, धारवाड़, चंडीगढ़, नागपुर, बनारस आदि इस तरह करीब साल भर हर महीने एक समारोह होगा. गाना बजाना, बातचीत और प्रदर्शनी को जोड़कर उत्सव को बहुरंगी बनाया जाएगा.''

कार्यक्रमों की इस श्रृंखला का आरंभ ''कालजयी'' शीर्षक से मुंबई के टाटा थियेटर में नेशनल सेंटर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स (एनसीपीए) के साथ मिलकर होगा जिसमें दो दिनों तक नौ कलाकार सुने जाएंगे. पहली सांझ घराने की तीसरी पीढ़ी अर्थात सुपौत्र भुवनेश के गायन से होगी जो खुद निष्णात गवैये हैं. पिता मुकुल शिवपुत्र और दादा की ईजाद की हुई शैली को वे अपने श्रम से सींच रहे हैं. एक खास प्रसंग का आरंभ उनके जरिए होने का रोमांच उनके कहे में साफ झिलमिलाता है. वे कहते हैं,''पिछले सौ सालों

कुमार गंधर्व तपेदिक की वजह से साढ़े छह वर्ष तक अपनी विधा से दूर रहे, लेकिन जब वापस लौटे तो उनका संगीत पुनर्नवा हो चुका था

सुरों का गंधर्व
कुमार गंधर्व अपनी एक प्रस्तुति के दौरान (फाइल फोटो)

में इतना क्रांतिकारी गवैया सामने नहीं आया. साठ के दशक में उन्होंने आधुनिक मनस्थिति अपना ली थी. उनके लिए आमतौर पर होने वाली कॉन्सर्ट से वह तारीख अलग होगी.''

भुवनेश के कहे को समझना कठिन नहीं. कुमार जी आजीवन जितनी चुनौतियों से घिरे, उनके किसी समकालीन के साथ ऐसा नहीं रहा. 'घरानों की जकड़बंदियों से बाहर निकलो' वाला उनका चिंतन आज भारतीय शास्त्रीय संगीत का मूलाधार-सा है. समारोह में कुमार जी की गायिकी के सर्वांग को आत्मसात कर अथवा उनके किसी भी रचनात्मक अवदान से अपनी संगीत यात्रा को खूबसूरत बनाने वाले कलाकार भी संवाद में बात रखेंगे. वरिष्ठ शिष्य सत्यशील देशपांडे और गायिका श्रुति साडोलिकर से 'इस गायन पद्धति' को लेकर क्या सोचते हैं, समझने को मिलेगा. नृत्यांगना शमा भाटे, कुमार जी की रौशनी से अपना नृत्य चिंतन व्यक्त करेंगी.

उत्सव में एम. व्यंकटेश कुमार और उल्हास कशालकर जैसे बेहतरीन गायक तो हैं ही, नई पीढ़ी से सितारिये निलाद्रि कुमार और तबला वादक सत्यजीत तलवलकर भी सम्मिलित हैं. तैयार और समझबूझ के साथ संगत करने वालों की जमात में सत्यजीत अगुआ हैं. वे याद करते हैं, ''बचपन में ही घर में कुमार जी का कैसेट लगा दिया जाता था. वह संस्कार कानों में कहीं जाकर ठहर गया.''

जन्मशती की सुगंध तो और भी राज्यों-शहरों में फैलेगी लेकिन ग्लैमर की नगरी मुंबई में ''कलात्मक वैचारिकता'' का आरंभ करने वाले गायक को नई पीढ़ी भी अपने करीब आते देखेगी, जो इसका एक अहम उद्देश्य है.

आमतौर पर जन्मशती सरीखे आयोजन एकरसता के कारण निर्जीव होकर रह जाते हैं. इस बात का खास खयाल रखते हुए प्रतिष्ठान ने युवाओं को कुमार जी के संघर्षमय दिनों, जब वे तपेदिक से जूझ रहे थे, की झलकियां दिखाना भी तय किया है. कुमार जी तपेदिक से पीड़ित होने के बाद लगभग साढ़े छह वर्ष तक अपनी विधा से दूर रहे थे. गाना पूरी तरह बंद और जीवन पलंग पर सिमट गया था. लेकिन अपने ही हौसले से वे फिर उठ खड़े हुए. जब दोबारा स्वस्थ होकर बाहर निकले तो उनका गायन पुनर्नवा हो चुका था. दुनिया चकित थी. राग वही थे लेकिन उसे देखने की दृष्टि बदल गई थी. वे जो गा रहे थे, उनसे पहले किसी ने वैसा गाना नहीं सुनाया था. गौर कीजिए कि कुमार जी से पहले अकेला ऐसा कोई गवैया नहीं हुआ जिसके गायन की समूची इमारत चिंतन पर टिकी हुई हो. घराने उनके लिए बेमानी थे. पुत्री द्वारा संपदित किताब *कालजयी कुमार* में खुद कुमार जी का संगीत पर कथन उनके खुले मन को दर्शाता हैः ''जो संगीत के गले में अपना नाम खुदा पत्थर लटकाते चलते हैं, अंत में फिर संगीत कम, पत्थर ही पत्थर ज्यादा दिखाई देते हैं. कला में किसी एक दुकान का ग्राहक बन जाने से काम नहीं चलता.''

कुछ ऐसी दूसरी बातें और कुमार जी के जीवन से जुड़े कई पहलुओं को समाहित करने वाली उनकी एक जीवनी का भी 8 अप्रैल को लोकार्पण होगा. *वा घट सभी से न्यारा* नाम से इसे ध्रुव शुक्ल ने लिखा है. इसके अलावा उनके ऊपर एक वृत्तचित्र भी बन रहा है. इसे नई पीढ़ी के डॉक्युमेंटरी मेकर अमित दत्ता बना रहे हैं.

कुमार जी के बारे में तमाम बातें अधूरी रह जाएंगी अगर इस दौरान उनके घर का जिक्र न हो. मध्य प्रदेश का एक औद्योगिक शहर है देवास. कुमार गंधर्व इसकी एक मझौली-सी पहाड़ी पर बने घर में रहते और रचते थे. इस असाधारण व्यक्तित्व का वह कक्ष उनकी दैहिक अनुपस्थिति के बावजूद जीवंत लगता है. हर दिन यहां प्रवेशद्वार पर, भीतर जाने से पहले कलाकार या रसिक समाज के लोग श्रद्धा से शीष नवाते देखे जाते हैं. इस स्थान की दिनचर्या अब लगभग साल भर बदली हुई दिखाई देगी. जन्मशती के चलते यहां साल भर हलचल और बढ़ी-चढ़ी दिखेगी. भोपाल के टॉप ग्रेड वायलिन वादक पंडित प्रवीण शेवलीकर 1995 में देवास में उनकी स्मृति में वायलिन बजाने के अलावा 2007 में घर में संपन्न समारोह में भी वादन कर चुके हैं. वे इसे कभी न भूलने वाली याद कहते हैं, ''यह बात पूरी तरह सही है कि उनके कक्ष में आध्यात्मिक अनुभूति होती है. उस घर का आभामंडल ही आपको एकाग्र कर देता है. मैं उन्हें संगीत का ऋषि व्यक्तित्व ही कहूंगा.''

पारंपरिक संगीत से परे जाकर उसमें से नया तत्व खोज निकालना आसान काम नहीं था. और न उस काल में किसी अन्य कलाकार में ऐसी ताकत थी. कुमार जी निर्विवाद रूप से कालजयी स्वर बनकर आए थे. बने रहेंगे.■

जीवंत स्मृति
कुमार गंधर्व के देवास स्थित घर में उनका कक्ष और तस्वीर

रंगमंच

तीस साल की अस्मिता

गैर-बराबरी को लेकर विद्रोही तेवर रखने वाले एक नौजवान के शुरू किए थिएटर ग्रुप ने पूरे किए घटना प्रधान तीन दशक. उसकी आंदोलनधर्मिता से जुड़े किस्से आज दिल्ली और उत्तर भारत के जनमानस की जबान पर

विनय सुल्तान

अक्तूबर 1984. तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद पूरा दिल्ली सिख विरोधी हिंसा में झुलस रही थी. जान बचाने के लिए कई सिख परिवार घर छोड़कर रिलीफ कैंप में रह रहे थे. 21 साल का एक नौजवान शाहदरा के इसी किस्म के कैंप में बतौर स्वयंसेवक काम कर रहा था. इस दौरान उसका सामना एक महिला से हुआ, जिसकी बिटिया की शादी चंद महीनों बाद होनी थी. पर जान बचाने की जल्दी में वह गहने घर पर ही छोड़ आई थी. अब उसे यह डर सता रहा था कि कहीं दंगाई घर न जला दें. उसने यह तकलीफ इस नौजवान को बताई. नौजवान दंगों के बीच उस महिला के जेवर लाने को तैयार हो गया. महिला के कहे अनुसार, पड़ोसी से चाबी ले वह उस घर में पहुंचा. जेवर सहेजे और रिलीफ कैंप की तरफ पैदल ही निकल पड़ा.

कुछ दूरी पर उसका सामना दंगाइयों के एक गिरोह से हो गया. नौजवान ने उस दौर के चलन के हिसाब से दाढ़ी बढ़ा रखी थी. लेकिन न तो उसके केश बढ़े हुए थे और न ही सर पर दस्तार बंधी थी. पर दंगाई 'सरदार-सरदार' चिल्लाते उसकी तरफ लपके. हॉकी के मैदान पर पसीना बहा चुने नौजवान ने दौड़ लगाई और बच निकला. दंगों के दौर का खून से सना यथार्थ इस 21 साल के नौजवान के जीवन में अपनी पूरी नाटकीयता से घट रहा था. दौर बदला पर तीन चीजें इस नौजवान की जिंदगी से नत्थी होकर रह गईं: मानवीय मूल्य, करीने से बढ़ी दाढ़ी और नाटकीयता. नौजवान का नाम अरविंद गौड़.

> **"मेरे नाटकों में सामाजिक-राजनैतिक तेवर होता है. मैं सीधे-सीधे अपनी बात कहता हूं. मुझे आर्टिस्टिक अप्रोच की उतनी जानकारी नहीं है"**

गैर-बराबरी से अरविंद की पहली मुठभेड़ स्कूल के दौर में ही हो गई थी. उनकी पढ़ाई दिल्ली में ही विवेक विहार के एक सरकारी स्कूल में हुई थी. बगल में एक प्राइवेट स्कूल था. अरविंद याद करते हैं, "आर्थिक तंगी के चलते पिताजी प्राइवेट स्कूल में दाखिला नहीं करवा पाए थे. जब भी स्कूल जाता तो देखता कि बगल के स्कूल के छात्रों की वर्दी, बस्ते और क्लासरूम, सब हमसे बेहतर. बात चुभती." इस गैर-बराबरी के खिलाफ पहला उनका पहला विद्रोह छठी क्लास में फूटा. स्कूल में छात्रों को बैठने के लिए टाट-पट्टी तभी मिलती जब कोई अधिकारी निरीक्षण के लिए आता. अरविंद के एक दोस्त के पिता मजदूर यूनियन में थे. उसने अरविंद के सामने 'इन्कलाब' का प्रस्ताव रखा. वे तैयार हो गए. अगले रोज इन दोनों के उकसावे पर छात्रों ने हड़ताल कर दी. इस पर दो चांटे मारकर उन्हें कक्षा में बैठा दिया गया. लेकिन नतीजा यह हुआ कि उस दिन से हर छात्र को बैठने के लिए टाट-पट्टी मिलने लगी. गैर-बराबरी के प्रति गुस्सा बचपन से ही पनपने लगा था. पर उसे अभिव्यक्त करने का माध्यम नहीं मिल रहा था.

नाटक भी अरविंद के भीतर पनप रहे गुस्से की अभिव्यक्ति का पहला माध्यम न था. रचनात्मकता का पहला अंकुर कविता की शक्ल में फूटा. अस्सी के आस-पास का दौर था. चेहरे पर अभी रुंआल उग ही रही थी. पढ़ने-लिखने के सिलसिले में दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी के चक्कर लगने लगे, जहां का ड्रामा ग्रुप उस दौर में शबाब पर था. अरविंद ने इससे पहले अखबार में नाटकों की समीक्षा पढ़ी थी, देखा न था. लाइब्रेरी में पहली बार रिहर्सल और फिर उन्हें मंच पर घटते देखा. उनकी भी दिलचस्पी बढ़ी. शुरुआत में नुक्कड़ नाटक में छोटे-मोटे रोल मिले. पर उन्हें इस कला का कहन समझ में आने लगा.

अरविंद को शुरुआती दौर में दो ऐसे बड़े रंगकर्मियों की संगत मिली जो अपने आप में चलते-फिरते स्कूल थे: हबीब तनवीर और इब्राहीम अलकाजी. तनवीर के साथ उन्हें पहली बार बड़े नाटक में बैक-स्टेज संभालने का तजुर्बा हुआ. अलकाजी के साथ उन्होंने जरूरी बुनियादी अनुशासन सीखा. पर इस बीच एक संपादक के साथ हुई बहस के चलते उनका एक पांव फिसलकर पत्रकारिता में आ गिरा. केंद्र में इंदिरा गांधी की सरकार थी और दिल्ली यूनिवर्सिटी के कुछ छात्र सरकार के खिलाफ आंदोलन कर रहे थे. छात्रों की पुलिस के साथ झड़प हुई और लाठीचार्ज हो गया. छात्रों ने कुछ बसों में आगजनी कर दी. अगले दिन *नवभारत टाइम्स* में पूरा ब्यौरा छपा. पांच छात्रों को हिरासत में लेने का जिक्र था. पर पांचवां छात्र (अरविंद) दूसरे दिन अखबार के संपादक सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' के चैंबर में जा पहुंचा. अरविंद ने पूरी घटना पर लड़ पड़ने की मुद्रा में अज्ञेय के सामने सफाई रखी: मेरा आंदोलन से कोई लेना-देना न था. दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी से घर लौट रहा था कि राजेंद्र नगर बस स्टैंड पर पुलिस ने बेवजह हिरासत में ले लिया. अज्ञेय ने अरविंद को वह सब लिखकर देने को कहा. अगले दिन यह शिकायत 'संपादक के नाम पत्र' की शक्ल में छप गई. बस, जल्द ही वे नाटकों की समीक्षा लिखने लगे. *नवभारत टाइम्स* में नाटकों से जुड़ा साप्ताहिक कॉलम आने लगा.

अब बात 1989 की. पहली जनवरी को 'जन नाट्य मंच' से जुड़े सफदर हाशमी साहिबाबाद के झंडापुर में नुक्कड़ नाटक *हल्ला बोल* कर रहे थे, तभी चाकू मारकर उनकी हत्या कर दी गई. देश भर के कलाकारों में आक्रोश छा गया. इस हत्या से उपजे गुस्से ने दिल्ली में कुछ बुनियादी सवाल खड़े करने शुरू किए: सांस्कृतिक संस्थानों की कमान कलाकारों के हाथ में क्यों नहीं? सरकार उन्हें स्वायत्तता क्यों नहीं देती? राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय रेपर्टरी/रंगमंडल में हड़ताल हो गई. दूसरी तरफ कठपुतली कलाकार श्रीराम सेंटर के बाहर धरने पर बैठे थे. उनके समर्थन के लिए

फोटोः चंद्रदीप कुमार

अनगढ़ों की आस
अरविंद गौड़ ने प्रतिभा के नाम पर किसी भी नए कलाकार को रिजेक्ट नहीं किया

To Get All The Popular Newspapers. Type in Search Box of Telegram -

@LBSNEWSPAPER

If You Want to get these Newspapers Daily at earliest

English Newspapers»»

Indian Express, Financial Express, The Hindu, Business Line, The Times of India, The Economic Times, Hindustan Times, Business Standard, First India, Mint, Greater Kashmir, Greater Jammu, The Himalayan, The Tribune, Brill Express, The Sikh Times, Avenue Mail, Western Times, Millennium Post, The Statesman, State Times, The Pioneer, Hans India, Free Press, Orissa Post, Mumbai Mirror, Mid-Day, Deccan Chronicle, Deccan Herald, Telangana Today, Financial Times, The Asian Age, The Telegraph, Oheraldo, Gulf of Times, The New York Times, The Washington Post, Los Angeles Times, USA Today, The Wall Street Journal, The Guardian, The Times

Hindi Newspapers»»

दैनिक जागरण, राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, हिंदुस्तान, नवभारत टाइम्स, बिज़नस स्टैंडर्ड, अमर उजाला,पंजाब केसरी, उत्तम हिन्दू, जनसत्ता, लोकसत्ता, हरिभूमि, द पायनीयर,जागरूक टाइम्स, राष्ट्रीय सहारा, दैनिक ट्रिब्यून, युवा गोरव, भारतीय सहारा, स्वंतंत्र वार्ता, सीमा संदेश, दैनिक सवेरा,एक्शन इंडिया, मदरलैंड वॉइस, देशबंधु, हिमाचल दस्तक,

Others»»

Hindi & English Editorial, Employment News, Malayalam Newspapers

Type in Search box of Telegram @LBSNEWSPAPER And you will find a Channel named newspaper join it and receive daily editions of all popular epapers at the earliest

Join Our Telegram Channel

Or

JOIN CHANNEL

you can click on this link

https://t.me/LBSNEWSPAPER

एक साझा मोर्चा बनाया गया पर यह ढाई महीने लंबा धरना आपसी फूट के चलते नाकाम हो गया. अरविंद उससे सक्रियता से जुड़े थे. इस घटना ने थिएटर और मंडी हाउस से दिल को बेजार कर दिया.

अरविंद बतौर स्वतंत्र पत्रकार पहले से काम करते रहे थे. इस बार उन्होंने नए उभरते इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की तरफ रुख किया. प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया (पीटीआइ) की इलेक्ट्रॉनिक इकाई उस वक्त खबरों के अलावा दूरदर्शन के लिए डॉक्युमेंट्री भी बनाया करती थी. वहां वे बतौर रिसर्चर लग गए. थिएटर से होने के नाते ऑडियो-विजुअल माध्यम की बुनियादी समझ उन्हें थी. अब कैमरा-एडिटिंग और दूसरे तकनीकी पक्ष की समझ मिल रही थी. मन रम रहा था पर दिमाग के एक कोने में नाटक अब भी अटका हुआ था. दो साल पीटीआइ में काम करने के बाद उन्होंने फिर से नाटक की दुनिया में लौटने का मन बनाया.

अब साल 1992. एक तरफ बाबरी मस्जिद ढहाई जा रही थी. दूसरी तरफ अरविंद गौड़ बिखरी चीजों को जोड़कर कुछ गढ़ने की कोशिश में थे. अस्मिता थिएटर ग्रुप उसी दौर में पैदा हुआ एक विचार था. ग्रुप ने पहले नाटक की तैयारी शुरू की. भीष्म साहनी का *हानूश* खेलने का फैसला हुआ. जोड़-तोड़कर पैसे जमा किए और श्रीराम सेंटर का बेसमेंट ऑडिटोरियम बुक करवाया गया. फरवरी 1993 में नाटक होना था. साहनी खुद शो देखने आने वाले थे. महीनों की तैयारियों के बाद अरविंद अपने थिएटर ग्रुप के साथ पहली दफा मंच पर जा रहे थे. पर शो से एक रात पहले एक और नाटकीयता उनके इंतजार में थी. नाटक के मुख्य अदाकार ने मेहनताने की मांग रख दी. उधार के पैसे पर हॉल बुक हुआ हो तो कलाकार के लिए पैसे कहां से आते. कहा गया कि टिकट बिकने के बाद मिले पैसों से मेहनताना मिल जाएगा. पर बात न बनी. दूसरा कलाकार लेने को चंद घंटों का समय था. शो से ऐन पहले कई कलाकारों के किरदार बदले गए. कच्ची-पक्की तैयारी के साथ नाटक हुआ और उम्मीद के उलट अच्छा हुआ. गच्चा देने वाला ऐक्टर एनएसडी का पढ़ा हुआ था और आजकल सिनेमा में है. उसकी अदाकारी की बहुत धमक थी. वहीं से अरविंद ने सबक सीखा: ''बड़े नामों के पीछे भागने की बजाए अनगढ़ अदाकारों को नाटक सिखाऊंगा. मैं खुद ऐक्टर बनने आया था पर एक बड़े डायरेक्टर ने कद-काठी और शक्ल-ओ-सूरत देखते हुए मुझे रोल देने से मना कर दिया. यह बात मेरे दिमाग में घर कर गई. उसी का नतीजा था कि अस्मिता में सीखने आने वाले किसी भी कलाकार को मैंने रिजेक्ट नहीं किया.''

कुछ महीने बाद अरविंद फिर श्रीराम सेंटर लौटे पर पुख्ता तैयारी के साथ. गिरीश कारनाड का नाटक *तुगलक* खेला गया, बेसमेंट के उसी हॉल में पर इस दफा पैर रखने की भी जगह न थी. लोगों ने अस्मिता के *तुगलक* को बहुत सराहा. फिर अरविंद ने पीछे मुड़कर न देखा. लेकिन अस्मिता की असल पहचान बनी उसके नुक्कड़ नाटकों की वजह से.

अस्सी और नब्बे के दौर में नुक्कड़ नाटक वामपंथी आंदोलन का पर्याय बने हुए थे. जन नाट्य मंच और इंडियन प्रोग्रेसिव थिएटर एसोशिएसन (इप्टा) नुक्कड़ नाटक करने वाले दो बड़े ग्रुप थे. जन नाट्य मंच का जुड़ाव सीपीएम और इप्टा का सीपीआइ के साथ था. इनके नुक्कड़ नाटकों के मूल में कम्युनिस्ट विचारधारा का प्रचार हुआ करता था. अरविंद ने महिलाओं से जुड़ी समस्याएं, जाति व्यवस्था, भ्रष्टाचार और पुस्तकालय जैसे विषय उठाने शुरू किए. अरविंद कहते हैं, ''पार्टी की विचारधारा के प्रचार की मजबूरी में कई जरूरी मुद्दे नुक्कड़ का विषय नहीं बन पाते थे. मैंने इन मुद्दों पर काम किया. इससे नुक्कड़ नाटक एक खास विचारधारा के प्रभाव से आजाद हुआ.''

और फिर 2011. भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन वह मौका था जब अस्मिता को देश भर में बड़ी पहचान मिली. अरविंद गौड़ इस आंदोलन से जुड़े शुरुआती लोगों में थे. वे इंडिया अगेंस्ट करप्शन की कोर कमेटी के सदस्य थे. भ्रष्टाचार के खिलाफ शुरू इस नागरिक आंदोलन की आखिरी परिणति एक राजनैतिक पार्टी के तौर पर हुई. अरविंद अपने ग्रुप को किसी राजनैतिक दल की सांस्कृतिक इकाई बनाने से बाल-बाल बचे. वे याद करते हैं, ''शांति भूषण जी के घर पर हो रही मीटिंग में पहली बार राजनैतिक पार्टी बनाने का प्रस्ताव आया. मैंने प्रस्ताव का विरोध नहीं किया. मेरा बस यही कहना था कि मैं आंदोलन के साथ था. अगर आगे राजनैतिक रास्ता अख्तियार करना है तो मेरा और इंडिया अगेंस्ट करप्शन का साथ यहीं तक था. मेरे कई साथियों ने मुझसे कहा कि मैं बड़ी भूल कर रहा हूं. लेकिन मेरे दिमाग में यह बात बहुत साफ थी. मुझे किसी राजनैतिक दल का हिस्सा नहीं बनना.''

आज अरविंद गौड़ और उनके थिएटर ग्रुप अस्मिता के रंगकर्म का सिलसिला तीन दशक से मुसलसल जारी है. इस थिएटर ग्रुप ने फिल्म उद्योग को कई अच्छे कलाकार दिए. लेकिन अस्मिता का असल योगदान नुक्कड़ को आम लोगों तक पहुंचाने और आम लोगों की पहुंच नुक्कड़ तक बनाने की रही है. लक्ष्मी नगर के एक स्कूल की साधारण-सी इमारत से चलने वाला यह थिएटर ग्रुप आज भी सामाजिक मुद्दों पर नुक्कड़ करने वाला सबसे सक्रिय थिएटर ग्रुप है. ■

बातचीतः अरविंद गौड़

''मैं नाटक का मजदूर हूं''

- **आप तीस साल से लगातार रंगकर्म से जुड़े हुए हैं. कभी ऊब नहीं हुई?**

यह तो हर पेशे में होता है. ख़ास तौर से ऐसे पेशे में जो आर्थिक रूप से बेहद अस्थिर हो. मैं खुद को नाटक का मजदूर कहता हूं. मैंने अप्रशिक्षित लोगों के साथ नाटक करना चुना है. उन्हें तैयार करना बहुत मेहनत का काम है. लेकिन इस सिलसिले में हम लगातार नई चुनौती से भिड़ते हैं. हर नए कलाकार के साथ हर दिन नया सीखने को मिलता है. इसलिए मन ऊबता भी है तो कुछ देर के लिए.

- **आपके आलोचक कहते हैं कि आप रंगकर्मी कम एक्टिविस्ट ज्यादा हैं.**

यह सच है. अगर अंदर का आक्रोश ही खत्म हो जाएगा तो काम करने की तलब भी मिट जाएगी. एक्टिविस्ट कोई बुरा शब्द नहीं है. इसे पिछले दौर में नकारात्मक तौर से पेश करने की कोशिश जरूर हुई है. मेरे नाटकों में एक सामाजिक-राजनीतिक तेवर होता है. मुझे आर्टिस्टिक अप्रोच की जानकारी उतनी नहीं है. मैं सीधे-सीधे अपनी बात कहता हूं. एक नाटक में मनोरंजन के तत्वों की जितनी दरकार है मैं उतनी रखने की कोशिश करता हूं. लेकिन मैं कला और एक्टिविज्म के हवाले से नाटक को बांटता नहीं हूं. इतना फीसदी कला और इतना फीसदी एक्टिविज्म. मैं कथ्य की मजबूती में भरोसा रखता हूं. हम चुनते उसी स्क्रिप्ट को हैं जिसका कथ्य हमारे हिसाब से मजबूत होता है. मैं कला के लिए कला नहीं करता.

- **आप एक्टिविज्म की बात करते हैं. यह तो बहुत सारे थियेटर ग्रुप कर रहे हैं. फर्क क्या है?**

मेरे आसपास जो घट रहा मैं उससे आंखें नहीं बंद कर सकता. लेकिन मेरे एक्टिविज्म में फर्क यह है कि मैंने कभी किसी पार्टी का झंडा नहीं उठाया. मैं मुद्दों को लेकर आगे बढ़ता हूं, राजनीतिक हितों को नहीं. भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन में मैं शुरुआती कोर कमेटी के सात सदस्यों में से था. लेकिन जब उस आंदोलन ने राजनीतिक रास्ता अख्तियार किया तो मैंने किनारा कर लिया. मैंने किसी भी राजनीतिक पार्टी से किसी भी किस्म का लाभ नहीं लिया.

नहीं देखती अपना नाटक

*रंगकर्मी **नीलम मानसिंह चौधरी** (72) अपनी चर्चित प्रस्तुति हयवदन, एक बार शेक्सपियर को करने की चाहत, स्टेज पर अपनी रचना प्रक्रिया और थिएटर की सीमाएं तोड़ने के आरोपों पर*

● आपने गिरीश कारनाड के *हयवदन* को हाल ही में आदित्य बिरला ग्रुप के आद्यम प्रोजेक्ट के तहत अपूर्व भव्यता के साथ पेश किया. स्टेज पर ट्रक, उसकी छत पर सैक्सोफोन के साथ पूरा म्युजिक ऑर्केस्ट्रा. पर ऐसे नाटक के 8-9 शो और खत्म!

हमने इसे पुराने जमाने की ट्रैवलिंग कंपनी की शक्ल में रचने को सोचा. सीनोग्राफर दीपन शिवरामन ट्रक का आइडिया लाए. थिएटर में म्युजिक के मेरे गुरु बी.वी. कारंत रहे हैं. उन्हीं की सीख में सैक्सोफोन जैसे कुछ साज जोड़-घटाकर अपना म्युजिक गढ़ती हूं. शो कब, कहां, कितने होंगे, इससे मेरा कोई वास्ता न था. इसमें अमूमन मुंबई के रंगकर्मियों को ही मौका मिलता आया था. चंडीगढ़ से मुझे मौका मिला, वही बड़ा तजुर्बा था. इसमें छूट मिली कि कल्पना के घोड़े जहां तक दौड़ा सकें दौड़ा लें.

● आपकी प्रस्तुतियों में स्टेज पर कुकिंग, नहाना-खाना सब दिखाने को लेकर आपके आलोचक आप पर एक तरह से थिएटर की सीमाएं लांघने और दर्शकों की कल्पनाशीलता को सीमित कर देने का आरोप लगाते हैं. आप क्या कहेंगी?

सबका अपना-अपना तरीका है. खाना असली होगा, ऐक्शन सच हो तो वो जज्बात में भी उतरता है. चिट्ठी लिखनी है तो बनावटी क्यों, सच में लिखो. तो ये काम करने का एक फेथ है, बिलीफ है. मैंने किचन कथा की तो उसका हरेक सीन कुकिंग टाइम से जुड़ा था. जब कहा जाता है कि कलाकार को अपनी च्वाइस से गढ़ने-बनाने की आजादी होनी चाहिए तो फिर मेरी च्वाइस की आखिर आलोचना क्यों?

● खुद के नाटकों को आप किस तरह से देखती हैं?

तैयार हो जाने के बाद मैं अपने नाटक कभी नहीं देखती. उसके बाद तो वह कलाकारों और दर्शकों के बीच का मामला है. मैं खुद को उससे बाहर कर लेती हूं. मेरे ऐक्टर भी परेशान हो जाते हैं कि प्ले के बाद मैं कोई नोट्स नहीं देती. मैं कहती हूं कि मुझे जो कहना था, ग्रैंड रिहर्सल में कह दिया. अब आप हैं और दर्शक हैं.

● अपने आसपास को ऑब्जर्व कर, उससे सीखकर, ग्रहण कर अपनी सेंसिबिलिटीज गढ़ने का आपका क्या तरीका होता है?

बहुत मुश्किल है बता पाना. ब्रह्मांड को देखने का आपका एक लेंस बन जाता है. डेढ़ महीने की रिहर्सल टाइम में महीना भर तो मैं इंप्रोवाइजेशन करती हूं. एक आइडिया देती हूं ऐक्टर्स को. फिर वे उसे डेवलप करते हैं. उनमें से जो चीजें मुझे जंचती हैं, उनको ठोकती-पीटती गढ़ती हूं. तो वह एक लंबी जर्नी रहती है ऐक्टर्स के साथ.

● आपके पसंदीदा नाटककार/कथाकार कौन हैं?

गिरीश कारनाड तो हैं ही. विजय तेंडुलकर का कोई नाटक मैंने आज तक नहीं किया. शेक्सपियर को भी नहीं कर पाई. शायद मरने से पहले एक दफा करूं. पर मुझे मंटो बहुत पसंद हैं. उन्हें बार-बार किया है: *बिटर फ्रूट, नैकेड वॉइसेज, डार्क बॉर्डर*. लोरका का नाटक *यरमा* किया. मुझे वे नाटक अच्छे लगते हैं जिन्हें आप अपना क्लेम कर सकते हों. जैसा नीत्शे कहते हैं: राइट टु मिसइंटरप्रेट. पंजाबी कवि सुरजीत पातर. किचन कथा को खूबसूरत पंजाबी क्लासिक टेक्स्ट में उन्होंने ही ढाला. करना होगा तो तेंडुलकर के बेबी या घासीराम...को भी तोड़ी-मरोड़ूंगी. पर अभी कुछ दिन योग करना है, थक गई हूं, थकान दूर करनी है.

—शिवकेश

संदीप सहदेव

वर्षः 37; अंकः 20; 13-19 अप्रैल, 2023; प्रत्येक शनिवार को प्रकाशित, *कुल पन्नेः* 60 *(कवर सहित)*